3750

मुनि लब्धि विजयजी कृत हरिबल मच्छीनो रास.

जीवदयाफलमाहात्म्यरूप.

ए रासने यथामति शुद्ध करी करुणामय सम्यक्दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थें

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

निर्णयसागर नामक मुद्रा यंत्रमां छपावी

प्रसिद्ध करयो छे.

संवत् १९४५ सने १८८९

3750

अथ

पंमित लब्धिविजय विरचित श्री हरिबलमछीनो रास प्रारंभः



॥ दोहा ॥

॥प्रथम धराधव जगधणी, प्रथम श्रमण पण एह ॥ प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरू पभणेह ॥ १ ॥ विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धारक अतिशय आदि जिन, तारक भवनिधि पोत ॥ २ ॥ लघुवय इक्षा इक्षुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट इष्ट जेहने सदा, नाभिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धंक धूना संगमें, अठक ठक्यो दिन रात ॥ हुं तस पदपंकज नमुं, नित्य उठी परभात ॥ ४ ॥ हंसासन जे सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृदयमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं भारती, वारति जड अंधार ॥ मुज मन मंदिरमें वसी, करका मुज उपगार ॥ ६ ॥ माता मुज महोटो करी, देजें वचन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसभा, सांभले थइ उज

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात ॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुझ आख्यात ॥ ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, बलिहारी गुरु सो य ॥ ए ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित कार ॥ रास रचुं हरिबल तणो, पुण्य उपर अधि कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित पामीयें, पुण्यें लहि नव नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें ऋद्ध समृद्ध ॥ ११ जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव दयाथकी पामियो, हरिबल मह्री राय ॥ तास संबंध सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस व छन्न तणा, सम देउं छउं सात ॥ १४ ॥ जिन मृग नाद लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि यण तुमें, आणी चित्त अनंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्वीप ए कह्यो, शाश्वत वर्त्तुलाकार ॥ सोनागी ॥ तेहमें क्षे त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

सो० ॥ १ ॥ नाव धरीने रे नवि तुमें सांनलो ॥ रसि
या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां सुणतां रंग॰रस ऊ.
पजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥सो० ॥२॥ना०॥ क्षेत्र
तिनमें करमी वसे तिहां, असि मशि कृषी रोजगार ॥
सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ॰ए
तीन व्यापार ॥सो०॥३॥ना०॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां
धर्मनां, नाख्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को
व्यापार तीनमें नवि लहे, ठे कल्पवृक्षना आहार ॥
सो०॥४॥ना०॥ तेहमें षटयुगलादिक क्षेत्र जे, नरत ने
ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो
नित शोने ठे एह ॥सो०॥५॥ना०॥ ए नव क्षेत्र सात
ठे कुलगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र
समास में गुरुमुख सांनली, धार्यो तास विचार ॥
सो०॥६॥ना०॥पण इहां हरिबल मठी रायनुं, चरित्र सु
णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां ईम
कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ ना० ॥ हवे
इहां जंबुद्वीपें अति नलुं, नरत क्षेत्र कहाय ॥ सो०
॥ पांचशें ठवीश योजन षटकला, धनुषाकारें सोहा.
य ॥ सो० ॥ ८ ॥ ना० ॥ सहस बत्रीश ते जन
पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ ना० ॥ षटखंममें खंम तिन तिन तेणें कह्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ ना० ॥ साढा पचवीश आरय अति नला, केकै अर्ध समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस बत्रीश मध्य एत ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ ना० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां, कनकपुरी अनिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर शोनती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ ना० ॥ नलिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश नूमि आ वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ ना० ॥ कुंतीआ वण परें हटश्रेणि राजती, गाजती विजयनी पंक्ति ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ ना० ॥ धनवंत धनद नंमारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥ पंच विषयना रसमें लीणा रहे, नोगी चातुर लोक ॥ ॥ सो० ॥ १५ ॥ ना० ॥ षट दरशनना पोषक जन बहु, पाले निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

कार करे घणा, लेहवा शिव सुख हर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥
॥ ना० ॥ जिनशासनना देउल दीपतां, बत्रीश थडा
प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंमप अति चोंपशुं, कर
ता स्वरगशुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ ना० ॥ दंमधजा
अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ध
न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी, पावन करवा मुज
अंग ॥ सो० ॥ १७ ॥ ना० ॥ श्रीजिन केरी नगति करे
सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थंकर पंद ते
उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १ए ॥ ना० ॥
वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोना घणी, नू
रमणी उरहार ॥ पाठांतर ॥ नगर कनकपुरनामें शोन
तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २० ॥ ना० ॥ नंदनवन
सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नयां, खटऋतु फलें
सुखास ॥ सो० ॥ २१ ॥ ना० ॥ काल डुकाल ते को
नवि उलखे, अहोनिश सुखनी वे वात ॥ सो० ॥ ईति
उपड्व सुपनें नवि जाणे, पुहवीयें प्रगटीए ख्यात
॥ सो० ॥ २२ ॥ ना० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां
नली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

जइ बूडी आपडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥
॥ २३ ॥ ला० ॥ स्वर्गपुरी पण नलमां जइ रही, नि
सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक
पुरी तणी, दिन दिन चढती छे लाज ॥ सो०॥ २४ ॥
॥ला०॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पहली
पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण
सांजलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥२५॥ला० ॥

॥ दोहा ॥

॥तिण नगरीयें राजवी,वसंतसेन नूपाल ॥ न्यायि
निपुण वसुदेव ज्युं,करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य
वछल हरिचंद जिस्यो,नुजबलि नीमसमान ॥ अरिय
ण सघला वश करी, कताख्यां तस मान ॥ २ ॥ पर
जाने पाले सदा, करे हथेली छांह ॥ दाण जगात
दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि
देउल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ
णि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद्
मिनी, रूपें रंन समान ॥ शील सुरंगी शुनमती, व
संतसेना अनिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें,
प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना,
रंगें रहे लय लीन ॥६॥ दोगुंदुक सुरनी परें, पंचविषय

सुख नोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग॥ ७॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वाल्हा ॥जगजीवन ॥ ए देशी ॥

विलसे नोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे॥ जन्म सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो, आगल वात रसाल ला० ॥ जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला०॥ ॥ २ ॥सु०॥ राज रूद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय ला० ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुह्वीयें ते गवराय ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें चिंतातुर होय ला० ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न लागे कोय ला० ॥४॥सु०॥ देव दाणव लख जो मले, तो पण तिणथी न थाय ला० ॥ कर्म आगल चाले नही, जो करे लक्ष उपाय ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहा देव महोटो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला० ॥ पार्वती सरखी नारीने, करमें पुत्र न दीध ला० ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां काम ला० ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंछित फले ताम ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुज कर्मे करी, पुत्र तणे घरे पुत्र ला० ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

राखे घरनो, सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला०॥ ए ॥सु०॥ पुत्र विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला०॥ लौकिक मतना शास्त्रमें,जाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥१०॥सु०॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंपि मसाणे,जब न दीसंति धूलि धूसरबांया ॥ उवंत पडंत रडंत, दो तिनि भिंजा न दीसंति ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति,स्वर्गोनैवच नैवच॥तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला०॥ तिण अवसर एक ज्योतिषी,आवी मल्यो ततकालला० ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अनुसार ला० ॥ एहवो पंभित देखीने, नरपति हरख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे, नाव धरी मनमांहि ला० ॥ मुद्रा सहित फल फूलशुं, पुस्तक पूजे उब्बाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ बे कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न जुवो प्रजु माहरे, होशे बाल गोपाल ला०॥ १४ ॥

सु० ॥ तव पंभित तक जोइने, वेला साधी सार ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनबलें कहे रायने, सांन लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुऊ करमें नही, पूरव नावी नोग ला० ॥ पण एक पुत्री बे सही, पूरव पुण्य संजोग ला० ॥ १६ ॥सु० ॥ रूपें रंनासारिखी,नंदिनी तोहोशे तुऊ ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट होइते गुह्न ला०॥१७॥सु०॥एम कहीनें विप्र ते गयो, लेइ वंबित दान ला०॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम रवि कज इकतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन ते योगथी, राणी गर्न धरेय ला० ॥ वसंत रुतु फल फूलशुं,शोनित सुपना लहेय ला०॥सु०॥१९॥जागी तव नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांनली नृप हरख्यो घणुं, तूगा श्रीकिरतार ला० ॥ २०॥ ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्नजतन ला०॥ अनुक्रमें मास पूरा थई,जन्मी पुत्री रतन्न ला० ॥ २१ सु०॥ हुवां हरख वधामणां,घर घर मंगलमाल ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पनणी बीजी ढाल ला०॥

॥ दोहा ॥

॥ जन्मोब्बव अति हे करे, वसंतसेन नूपाल ॥ मणि माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर छांटणां,छीज करेह विशाल॥सोहव सवि टोळें म
ळी,गावे गीत रसाल ॥ २ ॥ घर घर गूडी उछले, घर
घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे ऊा
क ऊमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा नला,खेले नवनव
खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥
इम उछव करतां थकां, वोल्या दिन ते बार॥नगरीजन
सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब
मेली करि, पुत्री नाम ठवीज ॥ सुपन तणा अनुं
सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन
दिन वधे,ज्युं वधे श्कुदंम ॥ चंडकलाजिम बीजथी,वाधे
तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी
बाल ॥ शुनलग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥
खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥रंग राग ना
टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ए ॥ षट नाषा लह
ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अजिनव जाणे शारदा,
प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें,
वरस थयां जब शोळ ॥ नवयौवन नारी तणा,उलट्या
काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं,पुत्री देखी
॥ रतन्ना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥सुमति सदा दिलमां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें इक रहे, धीवर हरिबल नाम॥सनेही॥जलचर जीव हणें सदा, मेले डुष्कृत गाम ॥सनेही॥ १॥ हवे सुणजो तेहनी कथा, मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर द्राख तणी परें, विण पइसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥२॥ह०॥ धीवर ते जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उद्यम उदर ने कारणें, करे नित्य करणीकुकर्म ॥स०॥३ ॥ ह० ॥ धिग्धिग् डुरनर पेटने, पेट करावे वेठ ॥स०॥ उत्तम मध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥ पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अगम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना अर्थी जे अछे, न गणे नक्ष अनक्ष ॥स०॥६ ॥ह० घात कला खेले घणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥ मावीत्र वेचे छोरुने, पेटने अर्थें घोर ॥ स०॥७॥ह०॥ जिनवरआदि मुनिवरा, जावें जे लीये दिख्क ॥ स० ॥ ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे नीख ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सैरिखा राजवी, कुंब घरे

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार
णें, हरिबल मछी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल
ही,जीव हणे छे तेह ॥स०॥१०॥ह०॥ हलुआकरमी छे
घणुं, पण ते लह्युं कुल नीच ॥स०॥ कुलाक सब आ
वी पड्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥स०॥११॥ ह० ॥
एक दिन हरिबल मछीयें, जलमें नाखी जाल ॥स०॥
ते जलकंठें मुनिवरु, बेठो छे सुकृतमाल ॥ स० ॥
॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
बोल्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ
पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३॥ह०॥ रे प्राणी ए तुं शुं क
रे, विण अपराधें कर्म ॥स०॥ छे महोटो संसारमां, जी
वदयानो धर्म ॥स०॥१४॥ह०॥ जीवदया पाली जिणें,
लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
वनें, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५॥ ह० ॥
पारेवुं शरणें राखवा, काप्युं ते निज अंग ॥स०॥ जो
तुं मेघरथ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥१६॥
ह० ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल
नार ॥स०॥१७॥ह०॥ पशुवाडो छोडावियो,प्राणीमन
उपगार ॥स०॥ जीवदया जे पाले नही,पामे ते दुःख
अपार॥स०॥१८॥ह०॥सुभूम ब्रह्मदत्त चक्री दो,पडीया

नरक मझार ॥ स० ॥ १ए ॥ ह० ॥ माता पितादिक बंधवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिद्र दोहग नवि टले, मले न वह्लनवृंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥ हेम दिये को दिन प्रतें, देवे को दान सुपात्र॥स०॥ तेहथी दश गणो लाज वे, जीवजतन करे गात्र ॥ स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांजली, बोले मन्नी तिवार ॥ स० ॥ शुं करीयें अमे साधुजी,वे अम कुल आचार ॥स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आवी पड्या, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजीविका ए पेटनी,दीधी करमें निदान ॥स०॥२३॥ह०॥ ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में. पण लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जें, तेहने में जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अजिग्रह आदरी, हरिबल वलियो ताम ॥स०॥ मुनि पण ईर्य्या शोधता, पहोता बीजे गाम ॥ स० ॥२५॥ह०॥ हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स०॥ जारे करमी जीवडा,माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६॥ ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स० ॥ टपलो सराणे चडावीयें, आरीसो नवि थाय॥स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिबलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं छित लहे तेह ॥ स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ लब्धिविजय रंगें. करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल जीवदयाथकी, लेहशे मंगलमाल ॥ स० ॥ २ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अभिग्रह लेइने, पाठो वलियो जाम ॥ तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम ॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥ धीवरनुं मन खोजवा, मछ हुवो मुछाल ॥ १ ॥ धीवर ते जलमें जइ, लांबी नाखी जाल ॥ आव नराणो जालमां, लांबो मछ पुछाल ॥ २ ॥ तव धीवर ते मछने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पाले ते उलसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे थानक जइ, उंमा इहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मछ ते, आव्यो जाल मैंठराल ॥ ५ ॥ ते पण वलि मछ मूकीयो, नीयम निज संचार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते त्रीजी वार ॥ ६ ॥ वलि फरीने मठ आवियो, जालमां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी मन उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे ए जलमछ ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम उलखाये

स्वछ ॥ ८ ॥ हरिबल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रहियो जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी बांधी सात ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ए देशी॥ हरिबल हवे आघो गयो रे, ऊंडुं छे जल ज्यांह ॥ दुरजर-उदरने कारणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिजन सांजलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥ फरी पाछो ते जालमां रे, आव्यो चोथी वार ॥ कोटें कोडी देखी करी, मूक्यो मछ विचार ॥ २ ॥ सूरि० ॥ पांचमी छठी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम तेम ते आवी रहे रे, जालमां मछ मुगाल ॥ ३ ॥ सू० ॥ तिम तिम ते मछ उलखी रे, मूकी दे ततकाल ॥ हरिबल व्रत महेल्युं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥ सू० ॥ ४ ॥ इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां तेह ॥ तोही पण क्षोभ्यो नही रे, मछी हरिबल जेह ॥ ॥ ५ ॥ सू० ॥ मछीनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो सुरराज ॥ सुर कहे हरिबल माग तुं रे, हुं तूठो तुझ आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरिबल बोल्यो तिवार ॥ दालिद्र दुःख दूरें करी रे, समस्या करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संभारिश मुऊ जे घ
डी रे, ते घडी हुं तुऊ पास ॥८॥ सू० ॥ एम वचन
देई करी रे, ते सुर गयो निज थान ॥ मछी पण निज
मंदिरें रे, वलियो थइ साव धान ॥ए॥सू०॥ धीवर म
नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन्न ॥ फलि
यो अभिग्रह माहरे रे, तूठो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
॥ आजथी जीव हणुं नही रे,जो ग्रही महोटी बाथ
॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
णी बीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट भराइ जडी नही रे,
भांऊशे रांम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, बेस
शे लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
रे, रोषें भरी छे चंम ॥ ठोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
ज्युं खोखर भंम ॥१४॥ सू० ॥ मुखमांथी भोंग पडे
रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परें रे, राखे
नहि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
यो रे, दीसंती जाणे अजब ॥ आंगण आवे को मा
नवी रे, देखी जाये गब ॥ १६॥ सू० ॥ कूडा बोली
कर्कशा रे,दे वली अछतां आल ॥ गुण अवगुण जा

ऐ नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उतरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥१८ ॥ सू० ॥ जाणी बंबुल कोयला रे, एहवुं रूप नीहाल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल ॥ १९ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुझ नारीनां रे, केतां करुं हुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म प्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिबल चितमुं चिंतवे रे, न जड्यो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो बोकडी रे, रूठी करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे, रजनी लेउं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइशुं रे, जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते वन्नमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सूतो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव उगारीयो रे, तो वाधी मुझ शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो में निश्चें आजथी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जलनिधिनो धणी देवता रे, फलशे मुझ सदीव ॥ २५ ॥ सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पञ्च ॥ जीवदया धर्मे उपरें रे, बेगो रंग मजीठ ॥ ॥ २६ ॥

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिबल सूतो ज्यांह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उछाह ॥ सू० ॥ २७ ॥ चोथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पुण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें डुःखने ठेल ॥ २८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे,बीजो हरिबल नाम ॥ वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अभिराम ॥ १ ॥ पठित गुणित सघली कला, शीख्यो छे सावधान ॥ रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ चतुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ भोगी केतकी भ्रंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ इक दिन चहुटे संचस्यो, लेइं निज परिवार ॥ नजरें हरिबल निरखियो, कुमरीयें गोख मझार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृपनी धुआ, उलखी हरिबल तेह ॥ बिहुंनी दृष्टि मिली तिहां, वाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधियुं, देखी हरिबल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वरवानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजभुवनने मारगें, हरिबल चाल्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिबल वांची समझियो, वछ तुं मुझ ससनेह ॥ ८ ॥ ऊंची दृष्टि जोइने, करी समस्या सार ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥९॥ कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ रामनुं सुहणुं भरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निंदडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल छे ज्यांह के ॥ अखुट खजानो लेइने, मध्यरात्रें हो हुं आवुं छुं त्यांह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि बलने हो तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, वरवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहारी हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो साचें आवशे, निज घरनुं हो लेईने वित्त के ॥ कु० ॥ ॥३॥ पण ए नृपनी नंदिनी, मुझथी केम हो निरवाहो थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसिणी हो किहां बगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४॥ किहां अलसी किहां नागणी, किहां हाथणी हो किहां अज बलवंत के ॥ किहां कुमरीने हुं कीहां, किहां सरशव हो किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह छे व्यवहार के ॥कुं०॥ ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुज घ रमें छे पदमणी, किम देहुं हो तेहने हुं छेह के ॥ ८॥ कुं० ॥ कडुवां फल छे एहनां, परनारी हो साथें धरे राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि हां बेठानो लाग के ॥ ए ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल सारिखां, देखंतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते फल चाख्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें, डुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव ण मुंज तणी परें,शीश रडवडे हो जूमितलें जेह के ॥ परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी हो निज कुल संजाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें, जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावान तह के ॥ केइ घडी छे एहवी,जइ देखुं हो हरिबंल ससनेहके. ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहनें लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो लाग्युं छे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानलें हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लाग्युं जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी बंलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी, नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ फुरि फुरि पंजर कृश करे, कामी मन हो लुब्ध्युं जे गम के ॥१७॥ कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे, विरहें करि हो मांझे उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कुमरी कामातुर थई, हरिबलनो हो विरहो न खमाय के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आकुली थाय के ॥ १९ ॥ कु० ॥ मणि माणिक हीरा घणा, हेम रजत नें हो मुगताफल लेय के ॥ थरमां पामरी सावटु, जरतारी हो भलां वस्त्र भरेय के ॥२०॥ कुं० ॥ सामग्री सघली करी, जावाने हो जिहां कीधो संकेत के ॥ उंट सात भरिया भला,अश्व रतन हों

कुमरी दो लेत के ॥ २१॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे वही, दास दासी हो वलि साथें लीध के॥ दरवाजे दरवानने, द्रव्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ २२॥ कुं०. ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां संकेंत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती हो मनवंछित सिद्ध के ॥ २३ ॥ कु० ॥ धीवर सूतो छे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के ॥ लब्धि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग रसाल के ॥ कु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निद्रा दूर ॥ आपण वहीयें बे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट खजानो लेइने, आवी छुं नरपूर ॥ करहा सात द्रव्यें भ स्या, एह छे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने, आवी छुं तुम कज्ज ॥ उंघ तजी उतावला, आवी च डो थइ सज्ज ॥३॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ भिराम ॥४॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी रूप ॥ धीवर मन विव्हल थयुं, ए शुं दीसे सरूप ॥ ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

कोइक वात विचार छे, मौन कस्यानुं कांम ॥ ६ ॥
अणबोल्यो ऊठ्यो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम
री मन हरखित थई, चाल्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा
णीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाल्या
चडवडी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कुं
मरी हवे, टाली सघली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा,
आवी पास नजीक ॥ ए ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल
प्रभुजी बोलो, मनवञ्छन मनडुं खोलो रे ॥ माहरा
जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई फर मत आणो, प्रभु
मेल्यो तुम अम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुझ सरखी
तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥
कनक रयण छे साथें, तुमें वावरो सुखें निज हाथें
रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाघा, जरतारी बां
धो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी
पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क
र जोडी, करुं टेहल ते आलस छोडी रे ॥ मा० ॥ हुं छुं
तुम प्रेम विलुद्धी, आवी छुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥
॥ ४ ॥ हवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमर

ला रोपुं रें ॥ मा० ॥ करह्या जे साते उप्या, लेई तुम गुं जे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं, करि लेखवजो ए जलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहे रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥६॥ इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, शुं छे ए वणिक न जासे रें ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वाहाणुं ॥ दीठुं मुख श्याम ज्युं जाणुं रे ॥मा० ॥ दिन उगमतें ते दीठो, दीन वस्त्र विहूणो धीठो रें ॥ मा०॥ ॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंम, जाणे पाड्यो देवें दंम रे ॥ मा०॥ देही छे गलीयल वान, वलि जाणे कोकिल मान रे ॥ मा० ॥ ए ॥ जाती धीवर जाणी, तव कुमरी मन ललजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई ते निराशी, चिंते थइ हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥१०॥ सहकारज केरे जरूसे, फल चाख्यां आक आलूसे रे ॥ मा० ॥ जाण्युं सुरतरु पामी, पण निमज्यो कनक निकामी रे ॥ ११ ॥ मा०॥ प्रभुयें मेरुयें चढावी, पण दैवें जूयें अथडावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी, पण पानीयें मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करसण टोतां सोई, गोला गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

तिम ए उखाणो मेल्यो, निज मंदिर कुल अवहेल्यो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाण्युं जोबनवेशें, लेशुं ते ला हो विशेषें रे ॥ मा० ॥ उलट्यो मदन एराकी, त्व वणिकें मूकी न बाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल वणिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा०॥ वणिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाण्युं जे वणिकने वरशुं, निज ज नम ते सफलो करशुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचा न पाली, विण गुनहे मूकी बाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥ ॥ मा० ॥ जो तुझ खोटा दिलासा, तो शाने दीजें आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेल्यो, धी वरने किहां ते मेल्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ऐ गोडो, कस्यो अण मलतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥१८॥ दीसे ए धोबड धिंग, वलि जाणे झबके ढोटिंग रे ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुझ करमें ए वर घडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विधें मुझ मन बेसें, माहारुं जोबन एलें वहेशे रे ॥मा०॥ इम सुंदरी विल पंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥ तव तिहां धीवर फूरे ॥ मनशुं ते पुण्य अधूरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए शुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥ लवलेश पोंक न खाधो, निजकर्में हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में तो नजरें पिछाण्यो रे ॥ मा० ॥२२॥ फोगट सुंदरी साथं, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख केहने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥२३ ॥ सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते जोगवे जीव एक ताने रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे उल्लासें रे ॥ मा० ॥ २४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, किम रांक घरे रहे त्रोटी रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान, किम सुंदरी दे मुज मान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग मुज जीवित एह, धीवर पणुं लह्युं में जेह रे ॥मा०॥ माहरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नाख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥ ॥ २६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुज देखी मूर्छा पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहे नयणें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ किहां गयो सागर देव, मुज काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे मूरछाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥ ॥ २८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल ढ़ही, कुमरीने करे
हवे बेठी रे ॥ मा० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृ
त जल लेई करी, कुमरी बांटी हेव ॥ १ ॥ रंजा फल
पत्रें करी, कस्यो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी
थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निर
खियुं; हरिबल केरुं रूप ॥ बाला चमकी चित्तमें, ए
शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो
सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स
मान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन इम चिंते
बाल ॥ ए साचुं के सूहणुं, के दीसे इंद्र जाल ॥ ५ ॥
तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥
हरिबल मछी रूप ए, वस्य तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥
एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥
नाग्यबलें तुऊ वर मल्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥
तव कुमरी हरखित थई, सांनली देव वचन्न ॥ आर
त चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्न ॥ ८ ॥
वसंतसिरी हरिबल प्रतें, वर वरियो धरी प्रीत ॥ शी
तल मन बेंहुनां थयां, बांध्यो अविहड प्रीत ॥ ए ॥

पय प्रणमी हरिबल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर सुर निज थानकें, पहोतो ते गुणगेह ॥ १०॥ मान व नव सफलो करी, दंपती नोगवे नोग ॥ रामनुं सुहणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो नलें आवियो ॥ ए देशी ॥ हुआ हे हरख वधामणां, बेहु जणनां हे मनवंछित सीध के ॥ कुमरी हरिबल वर वरी, मनुनवनो हे फल लाहो लीध के ॥१॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां हरिबल हे मछी अवतार के ॥ अणमलतो ए ताकडो, पुण्यजोगें हे मेल्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥ एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे त्रूठो निधि रीज के ॥ परतख दीठुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुफ वीधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयणनें, मुफ कीधो हे महोटो उपगार के ॥ कीडीथकी कुंजर कस्यो, नवें प्रगट्यो हे सद्गुरु संसार के ॥ ४॥ हु० ॥ इम चिंतवतां बे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन हमफार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विषम जे आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

ऊंगि झाडी जे रूंखनी, परि उतस्या हे निज पुण्यने थाट के ॥ ६ ॥ हु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो हवे जोवुं एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी ठे जाति के ॥ ७ ॥ हु० ॥ जोवुं वली तस पारखुं, पराक्रमें हे केहवो ठे सधीर के ॥ जीवित सूधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर के ॥ ८ ॥ हु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री तम हे थया खरा बपोर के ॥ पाणीनी तिरषा घ णी, पीयु लागी हे घणुं अति हे जोर के ॥ए॥ हु० ॥ तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी दीन वचन्न के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा हे निकल्यो ते वन्न के ॥ १० ॥ हु० ॥ अटवीमां जो तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ठां ण के ॥ ११ ॥ हु० ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो वर हे जल नरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल नरि पो यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥ हु० ॥ अंग ठयां जल पीवतां, मनथी लह्यो हे पियु माहाबलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुज व खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ हु० ॥ धन्य

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुज प्रगट्यां भाग्य के ॥ मनवंछित पियुडो मल्यो, थयां परगट हे मुज सुख सौभाग्य के ॥ १४ ॥ हु० ॥ सुरवाणी साची मली, जेवी भाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा ग्या पासा ढल्या, राजकुमरी हे मन हरख पइठ के ॥ १५ ॥ हु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी; एकतारी हे ब नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं,तिम बे हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ हु० ॥ इम क रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतर्यां तेह के ॥ दूरथी दीठुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोभित डिं ग जेह के ॥ १७ ॥ हु०॥ कनकजडित डिंग दुर्ग छे, कोशीसां हे मणिमय दीपंत के॥ जाणीयें भूरमणी करें, सोहे कंकण हे रवितेज झिपंत के॥१८॥हु०॥ नं दन वन सम वाटिका,फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत के ॥ सजल सरोवर जल भर्यां, देखीने हे वर नारी मोहंत के ॥ १९ ॥ हु० ॥ नगर समीपें आवीयां, वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक आवियो, वैताल कहे भलि आशिष दीध के ॥ २० ॥ हु० ॥ पूछे हरिबल तेहने, कहो बारोट हे आ नग रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी

हे बे कुण अनिराम के ॥ २१ ॥ हु० ॥ तव हरि बलने ते कहे, वेतालक हे सुणो पंथी साथ के ॥ मदनवेग बे नूपति, वीशाला हे नगरीनो नाथ के ॥ २२ ॥ हु० ॥ अरियण सघला वश करी, राज्य नोगवे .हे सुरपतिनी समान के ॥ पायक गज तुरी बे घणी, सप्त लक्ष्नी हे ठकुराइएं मान के ॥ २३ ॥ हु० ॥ वरण अढार वसे इहां, पुण्य करणी हे करतां सहु लोक के ॥ पापनी बुद्धि मले नही, नोगीजन हे वसे चातुर कोक के ॥ २४ ॥ हु० ॥ बार जोयण पोली कही, नव जोयण हे दीर्घ शोन्नित पोल के ॥ कनक रयणमय मालियां, चोराशी हे चहुटानी ठल के ॥ २५ हु० ॥ जाणीयें स्वर्गपुरी नली, वीशाला हे नगरीनुं नाम के ॥ सुखीयां लोक वसे सहु, दुःखीयानुं हे नवि दीसे ठाम के ॥ २६ ॥ हु० ॥ एहवो व्यतिकर सांभलीने, वेतालकें हे कह्यो थइ उजमाल के ॥ सांनलि बेहु राजी थयां, लब्धि कहे हे ए तो सातमी ढाल के ॥ २७ ॥ हु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगरी नृपनी वारता, वैतालें कहि जाम ॥ वात वधामणि हरिबलें, दीधी मुद्रा ताम ॥ १ ॥ चित ठरियुं वैतालनुं, देखी पीली वस्त ॥ हरिबलने चरणे न

मी, जइ दिधि स्त्रीने हस्त ॥ २ ॥ हवे कुमरी पियुने कहे, सांजलो जीवन प्राण ॥ वास वसीयें इहां कणे, इण नगरी इण गण ॥ ३ ॥ तव हरिबल कहे नारी ने, सुणो प्रिया मुज वाच ॥ तुम अम मनडुं एक छे, जे कहेशो ते साच ॥ ४ ॥ एम कही ऊठ्यां तुरत, लेई निज परिवार ॥ नगरीमां जातां थकां, शकुन थयां श्रीकार ॥ ५ ॥ डुर्गा काक ने श्वान शुज, नावी नैरव संत ॥ सांढ सारस खर तुरी, जिमणां लाली हुंत ॥६॥ अंगज दशरथ सुततणो, बांधे तोरण सार ॥ शकुन थयां जमणी दिशें, करतां पुर पेसार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ बन्यो रे सगुरुजीनो कलपडो ॥ ए देशी ॥ जीरे शुज लगनें शुज मुहूरतें, एतो नगरीमें कीध प्रवेश रे ॥ सुजाण ॥ तिण समे सनमुख वली थया, शुज कारी शकुन विशेष रे ॥सु०॥१॥ शु०॥ कन्या पांच स हामी मली, एतो लेइ दीप उद्योत रे ॥ सु० ॥ गज रथ शणगार्या जला, मलि सनमुख रयणनी ज्योत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ शुज० ॥ जीरें एहवे शकुनें नग रीमें, एतो हरिबलें पगलुं दीध रे ॥ सु० ॥ तिण समे एक व्यवहारियो, मल्यो सनमुख प्रणिपत कीध

रे ॥ शु० ॥३॥सु० ॥ तव हरिबल पूछे वणिकने, अ
म कोइ बतावो गेह रे ॥ सु० ॥ वास करुं अमें ज
ई तिहां, एतो लहीयें सुख ससनेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
॥ शु० ॥ जीरे तव कर जोडी वणिक ते, हरिबलने
करे मनुहार रे ॥ सु० ॥ अम घरे आवो प्राहुणा,
अमें देशुं मोहोटुं आगार रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ शु० ॥
जीरे आग्रह करीने वणिक ते, तेडी आव्यो निज
आगार रे ॥ सु० ॥ जगति जुगति जलि साचवी, ए
तो देइ मीठा आहार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ शु० ॥ जीरे
वणिक हरीबल कारणें, रहेवाने दीधा आवास रे
॥ सु० ॥ कनकरयणमय मालीयां, एतो सोहे रवि
ज्युं प्रकाश रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ शु० ॥ एतो वास कर्यो
जइ तेहमें, एतो हरिबलें आणि उल्लास रे ॥ सु०॥
शकुनतणा परजावथी, एतो पुण्यें लहियो सुवास
रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ शु० ॥ हवे हरिबल पूछे वणिकने,
तुम नाम कहो गुणवंत रे ॥ सु० ॥ तव व्यवहारी
कहे प्रजु, मुफ नाम छे श्रीपति संत रे ॥ सु० ॥ ए ॥
॥ शु० ॥ एतो नाम सुणी तव हरिबलें, श्रीपति बं
धव कीध रे ॥ सु० ॥ व्यवहारी सनमानीयो, एतो
सिरपाव देइ प्रसिद्ध रे ॥ सु० ॥ १० ॥ शु० ॥ हवे ह

रिबल सुख जोगवे, एतो वसंतसिरीनी साथ रे ॥ सु० ॥ मानवजव सफलो करे, एतो जाणे पामी आथ रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ शु० ॥ एतो शत्रुकार मांझ्यो घणो, एतो देवे दान उगाह रे ॥ सु० ॥ बंदीजन बिरुदावली, ए तो हरिबलनी बोले अथाह रे ॥ सु० ॥१२॥ शु० ॥ ताल कंसाल मृदंगना, एतो वाजे नाद अचंज रे ॥सु०॥ हरिबल आगल शोजता, एतो होवे नाटारंज रे ॥सु०॥ १३ ॥ शु० ॥ चाली पुरमें वातडी, एतो हरिबलनी आख्यात रे ॥ सु० ॥ मदनवेग नृप आगलें, एतो हरिबलनी थइ वात रे ॥ सु० ॥ १४॥ शु० ॥ एतो क्षत्रीवंशें राजवी, एतो वीरबल केरो धीर रे ॥ सु० ॥ जुजबली जीम समो वडी, एतो दानें विक्रम वीर रे ॥सु०॥१५॥शु०॥ आव्यो आपणा नयरमां,एतो परदेशी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ वसंतश्री तस जारजा, एतो रूपें रंज चकोर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ शु० ॥ एहवी थइ दरबारमां, एतो हरिबल केरी वात रे ॥ सु० ॥ क्षत्री वंश शिरोमणी, एतो वीरबल केरो जात रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ शु० ॥ मदनवेग नृप सांजली, एतो मनमें हुउ हेराण रे ॥ सु० ॥ तो बोलावुं एहने, एतो जोवुं ते अहिनाण रे ॥ सु० ॥१८॥

शु० ॥ इम जाणीने नृप तदा, एतो सचिवनें दीध आदेश रे ॥ सु० ॥ आग्रह करि तस तेडीने, तुमें आवजो अत्र विशेष रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥ तत खिण सचिव तिहां जई, हरिबलने कीध प्रणाम रे ॥सु०॥ नृपनुं तेडुं तुम अछे, तुमें आवो आतमराम रे ॥ सु० ॥ २० ॥ शु० ॥ उठी हरिबल ततखिणे, चढयो अश्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ भेटं नली नृप आगलें, जइ मूकी नृप प्रणमेह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥शु०॥ नृप पण हरिबलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे सु०॥ बेठा एकण गादीयें, एतो हरिबल नृप उंछा ह रे ॥सु०॥२२॥ शु०॥ आगम नीगमनी करी, एतो बे घडी वातनी गोठि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी थया, जिम कर चढे साकर पोठि रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ शु० ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिबल केरुं तेज रे ॥ सु० ॥ राज्यसन्नादिक नृप तणुं, एतो देखी वा ध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शु०॥ बंदीजन बिरुदावली, एतो बोले क्षत्री वंश रे ॥ सु० ॥ माता वीरायें जनमीयो, एतो वीरबल कुल अवतंस रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ शु० ॥ हरिबल गुण नृप सांभली, एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आभूषण अंगें

ठवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ शु० ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिबल च ढ्या काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षें करी, एतो प्रबल वधारी लाज रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ शु० ॥ एतो नलें आव्या तुमें नयरमें, तुम आवे वध्युं हम हेज रे ॥सु०॥ नगरी अम पावन थई, एतो दिन दिन चढते ते ज रे ॥सु० ॥ २८ ॥ शु० ॥ इम सनमानी बोलावियो, एतो वसंतसिरीने गेह रे ॥ सु० ॥ लब्धि कहे ढाल आठमी, एतो पुण्यें लह्ने एह रे ॥सु० ॥ २९ ॥ शु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल ते निज मंदिरें, आव्यो करी आमंग ॥ वसंत सिरि हरखित थई, देखी पियुनो रंग ॥ १ ॥ म दन वेग नृपनी सदा, सारे निशदिन सेव ॥ बांध गो ड दरबारनी, हरिबल करे ततखेव ॥ २ ॥ हाल हुकु म हरिबल तणो, थयो विशालामंझ ॥ जीरण सचिव कोरें रह्या, अलसा थई अकज्ज ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं एक मन, दीसंता तन दोय ॥ बाझी पूरण प्रीतडी, ज्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥ वसंतसिरि अपछर स मी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंडुक सुरनी परें, हरिब ल जोगवे जोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें, दंपति

करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजें नोजन सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांनलो प्राण धार ॥ इण वातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ पण एक वात विचार छे, धारो चित्त मफार ॥ दीपक लेइ देखाडवो, तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाडीयो, काग अहो सोनार ॥ एता नोहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ए ॥ ते माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरी ने नोतरी, द्यो नोजन अनिराम ॥ १० ॥ सांनल गोरी माहरी, साच कही तें वात ॥ जो छे दाहाडा पाधरा, शुं करशे नृप घात ॥ ११ ॥ पुण्यें वैरी आं धला, पुण्यें पाप विलाय ॥ पुण्य प्रबल जो कीजियें, तो सघलां डुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे सांनल प्रिया, जो प्रनु दीधी आथ ॥ जिमणे हाथें दीजियें, तो ते आवे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा; एम कही आव्यो जब रातें ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल मनहरख धरीने, आतमरंगें नेली रे ॥ गोधूम तंडुल मिशिरी खंमा, घृत सामग्री मेली रें ॥ १ ॥ खटरस नोजन

सार निपाई, सागर देव प्रजावें रे ॥ नोतरुं देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जावे रे ॥ ख० ॥ २ ॥ आग्र हकरि निज आसन आपे, हरिबलने नृप हेतें रे ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें गो जीवन जेते रे ॥ ॥ ख० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, नांखे सांजलो स्वामी रे ॥ हुं सेवक बुं तुम पद केरो, तुमें मुफ अंतरजामी रे ॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी मह्लोटा थाउं अमें मह्लोटा, तुमें गो वंबित पोटा रे ॥ तुमें गो गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे ॥ ख० ॥ ॥ ५ ॥ तुम शिर मह्लोटो बे परमेसर, जगशिर प्रजु तुमें सहुगा रे ॥ तुमें गो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें किं बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचने नृपनें, रीफवी हरिबल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रजुजी अमारी, नोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पधारो, अम घरे जोजन करवा रे ॥ हुं आव्यो बुं तेडवा सारु, तुमने जमण आचरवा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांमी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ए ॥ कुमरी नवनवा शणगार पेहरी, नृपने जोजन प्रीसे रे ॥ ह

रिबल पण नृप जमता नाखे, पंखे पवन जगीसें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविंश जातनी सुखडी पिरसी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक मह्वोटा, देव आरोगे एह्वा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक ने आंबां पोली, श्रीखंम्म खीरा सुंहाली रे ॥ शाल दाल ने घृत परनालि, पिरसे ज्युं गंगा वाली रे ॥ ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तीखां व्यंजन, बत्रीश जातिनां धामे रे ॥ नृप आर्दे नगरीमहाजन ते, जमतां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जमतां जमतां अन्योअन्यें, रसवती जीनें वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ ॥ १४ ॥ रसीयावाले मल्यो जन ऊपर, फूके मन आल्हादें रे ॥ अमली नंगी जंगी जन ते, कीधां नोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, दें मुखवासनी बूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जमाडी, नागोलें चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडह्वो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिबल पोतें, सुकृत कारज कीधुं रे ॥ख०॥ ॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जमतां, वसंतसिरी ते दीठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूपं सुकोमल, देखत लागी

मीठी रे ॥ ख० ॥ १८ ॥ नृपनुं मन विह्वल थयुं ज मतां, कामें कीधो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुझ स्त्री छे न ठेरी, पण नहि एहवो तोरो रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ ख टरस नोजननी सुघडाई, नृपना मनमें बेठी रे ॥ कामज्वरथी नोजन नूल्यो, स्त्रीनी चिंता पेठी रे ॥ ॥ ख० ॥ २० ॥ खाधुं न खाधुं करीने नृपते, मन विमनो थइ ऊठ्यो रे ॥ असेनियो थइ नृप घरे वली यो, जाणे जगदीश रूठ्यो रे ॥ ख० ॥ २१ ॥ कमंकी चितमें चतुरा ततखिण, दीठुं नृप मन बिगड्युं रे ॥ तव प्रीतमनें कहे निज प्यारी, चेतो नृप हेत उघ ड्युं रे ॥ ख० ॥ २२ ॥ तव हरिबल कहे सांनल प्यारी, नावी हशे ते थाशे रे ॥ खणशे ते पडशे खाईमां, आपणुं कांइ न जाशे रे ॥ ख० ॥ २३ ॥ चिहुं जगमें हरिबलनी कीर्त्ति, बोले गुणिजन जीहा रे ॥ सुखें समाधें दंपति दोये, सुखमें काढे दीहा रे ॥ ॥ ख० ॥ २४ ॥ जोजो नविया धीवर जाति, एक जो जीव उगार्यो रे ॥ सुरसानिध मनवंछित फलि युं, जगमें जस विस्तार्यो रे ॥ ख० ॥ २५ ॥ शुद्ध परं पर सोहमस्वामी, हीरविजय सुरिराया रे ॥ साह अकब्बर जे प्रतिबोधी, जैनमार्ग दीपाया रे ॥ ख० ॥

॥ २६ ॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल गु
णें करि ठाजे रे ॥ कोविदशिर मुकुटामणि सोहे, तस
शिष्य धनहर्ष राजे रे ॥ ख० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कु
शलविजय कविराया, दिनमणि तेज सवाया रे ॥
तस बंधव गणि कमल विजय गुरु, तस श्रुतज्ञान
सुहाया रे ॥ ख० ॥ २८ ॥ तस शिष्य पंमित लक्ष्मी
विजय गुरु, सोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया दो
विधिशुं आराधी, आतम साधन कीना रे ॥ ख० ॥
॥ २९ ॥ तस शिष्य दो हुवा साधु शिरोमणि, कुमती
मद जीपंता रे ॥ पंमित केशर अमर दो ज्राता, रवि
शशिपरें दीपंता रे ॥ ख० ॥ ३० ॥ ते गुरुचरण प
सायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥ पहेलो उल्लास
कह्यो नव ढालें, हरिबल केरो संबंध रे ॥ ख०॥३१॥
॥ इति श्रीहरिबलचरित्रे हरिबल राजर्षि पुरवर्णन
नृपवर्णनादि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीउल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम ज्योति परकाश कर, त्रिभुवन तिलक स
मान ॥ गरिब निवाज गोडी धणी, जयजंजन जग

वान ॥ १ ॥ अविनाशी अव्यय अरुप, अशरीरी अ
अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, ते प्रणमुं शुभ सं
त ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें, शारद मात वि
शाळ ॥ वचनामृत वरसें सदा, प्रगट थई उजमाळ
॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोबडा, अकलविहूणा जेह ॥ त
स घट भीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥
परउपगारी मातजी, बाळा त्रिपुरा सोय ॥ ते हुं प्रण
मुं भारती, जिम मुझ वंछित होय ॥ ५ ॥ कोविद के
शर अमरना, चरण कमळ नमि तास ॥ हरिबल म
च्छीरायनो, पभणुं बिजो उल्लास ॥ ६ ॥ रंग रंगीली
जनसभा, सांभळ वेधक जाण ॥ मधुकरनी परें रस
लीए, गुणवंत भाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस र
सिया लहे, चातुर वेधक जेह ॥ पण मूरख पशु बा
पडा, शुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥ सरस निरस मधुक
र लहे, जे सेवे वनराय ॥ घूण शुं जाणे जीवडो, सू
कां लक्कड खाय ॥ ए ॥ खटपद सरिखा चतुर नर,
वेधक वचन रसाळ ॥ राचे सरस कथा सुणी, विक
था तजी विचाळ ॥ १० ॥ वक्ताने श्रोता सुणी, सा
हाम्हो साहामी दृष्ट ॥ एक सरीखी जो हुवे, सु
णतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेमाटे भावुक तुमें, सां

भलजो चित लाय ॥ पण ते सुणतां मत करो, महि
षी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हरिबलें, की
धी भक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो भवियण तुमें,शी शी
निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार,जोयण
देइ सार ॥ आठे लाल॥हरिबलें कीध पहेरामणी॥
मणि माणक लख लेय, अंग आभूषण देय ॥आ०॥
वोलाव्यो नृप गृह भणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम,
मंदिर वलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें व
सी ॥ अंगनारूप निहालि, मनमां थइ चकचाल ॥
आ० ॥ नृप मननी भगली खसी ॥ २ ॥ जीव रह्यो
ललचाय, ज्युं मधु खग लपटाय ॥ आ० ॥ काम व
शें करी भूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्या
कुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥
परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥आ० ॥
विकलमूर्त्ति परें भयो ॥ खिण बाहिर खिण मांहि,जक
न पडे खिण क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वहि
गयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतेउरी
हेज ॥आ०॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान

तंबोल, न गमे वात टकोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक म न नवि रमे ॥ ५ ॥ छत्री परजापाल, मदनवेग म बराल ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बा ण लागां अशेष, पड्यो गिडंदा पेच ॥ आ० ॥ का मिनीयें कस्यो जाजरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरछा अचे त, जाणीयें लाग्यो केत ॥ आ० ॥ सघला सचिवने तेडीया ॥ पंहेरी नव नवा वेश, धव धव धाइ अ शेषं ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ जा ण्या जोषी विशेष, पट्टा जे खाता हमेश ॥ आ० ॥ तेड्या ते वैद राजने ॥ दशो दिशें दोड्या सर्व, जाण प्रवीण ते सर्व ॥ आ० ॥ आव्या तेडी लवाजने ॥ ॥ ८ ॥ जरडा जूवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ०॥ आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गा रुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखा णता ॥ ए ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक ब जाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ जगत वेरागी धाय, लांबां टीलां बनाय ॥ आ० ॥ आया ते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि पेरें मलिया लोक, उद रने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप त णी ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांमी अगर्व

॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दाह ज्वर मूर्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, छे मुज गोली सद्य ॥ आ० ॥ छत्रीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं राखता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मठ पोषी रह्या ॥ बहु ते कीध उपाय, पण नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी वह्या ॥ १३ ॥ बोल्या जोषी जाण, नांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा छे रायने ॥ ते माटे करो होम, जाय ज्युं रोगनो जोम ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुम्हे रायने ॥ १४॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या भगतजन एम, मानो ते बिष्णु जेम ॥ आ० ॥ इम णां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें भार, छे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजियें ॥ कहे एक गांठनो रोग, पीहो तह्नी योग ॥ आ० ॥ चूरण बूकी दीजियें ॥ १६ ॥ भूवा बोले जगीश, नृपने झोटिंग खवीस ॥ आ० ॥ वेलाबली विलगण थइ ॥ धूणे धूणावी शीश,पाडे बहुली चीस ॥ आ० ॥ वाण उतारे चिंता जइ ॥ १७ ॥ मांभयां मांभलां के

य, वाज्यां ऊांकजां जेय ॥ आ० ॥ पण लेखे को ना
वियां ॥ जेणें कह्युं जे जेम,तेणें कह्युं ते तेम ॥ आ०॥
पण नृप चित्त न जावियां ॥ १७ ॥ एम अनेक उपा
य, जलजला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं पट
की वल्या ॥ विराजला हता जेह, परबंधी पण तेह
॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सघला गल्या ॥ १ए ॥ ज
गत संन्यासी कूण, गलिया ज्युं पाणी लूण ॥आ० ॥
फोगट गाल फुलावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, .वादी
गर गया गाण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे डुलावता ॥
॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्रविवेक ॥
॥ आ०॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढया ले रा
य, तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ
तिहां गुणकरु ॥२१॥ लाधो नाडी जेद,मंत्री लह्यो ते
जमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नडयो ॥ मूरबा
लह्यो तिण योग, पूरव कर्मना जोग ॥ आ० ॥ काम
अनल कुंफें पडयो ॥ २२ ॥ जेह ले नृपने रोग, तेह
शुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कुण लहे ॥
कामनुं फेहर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥आ०॥
कह्यो ते रोगने कुण ग्रहे ॥२३॥ जिहांथी प्रगटयुं छुः
ख, तिहांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अग

नी ठरे ॥ विरहानलनी बाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते शीतल रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहे, सजा समक्ष उछाहे ॥ आ० ॥ मेहर मंत्री इम जणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फोगट कीधा उपाय ॥ आ० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणे ॥ २५ ॥ आं खनुं उंषध कान, कीधुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध साधक मूरख मल्या ॥ अंतरगतनी पीडं, कामज्वर नी रीड ॥ आ० ॥ ते कुणे नवि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार, होवे जे गुरु मुख सार ॥आ०॥ ते जाणे सघली कला ॥ शुं करे चिकित्सा कर्म, न जा णे शास्त्रनो मर्म ॥ आ०॥ ते करे गाशने बाकला ॥ २७ ॥ सजा विसर्जी ताम,सहु पोहोता निज धा म ॥ आ० ॥ मंत्री हवे वेदूं करे ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, पहेली कही उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविज य इम उच्चरे ॥ २८ ॥ आ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृप नी पीडा टालवा, बेगे आइ नजीक ॥ १ ॥ कामा तुर नृपने लही, सचिव करे उपचार ॥ राणी सघ ली तेडीयो, शोल सजी शणगार ॥ २॥ रम झम क

रती आवीउं, रूपें अपरछर सार ॥ मदन तणी जे वाटिका, कामीनें सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना प ग तलां, उल्लासें उल्लास ॥ पवन करे रंजादलें, आं जे नेत्र बरास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपनुं ग्रीडी अंग ॥ शयन कर्युं घडि दो लगें, उतस्यो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र तणे बलें, कीधो ए उप चार ॥ आंख उघाडी ततखिणें, महिपतियें तिण वार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चेतन सार ॥ मेहर मंत्री जस लह्यो; वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥ मदनवेग हरख्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो मंत्रीसरु, देई बहुलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें कस्या, राख्यो एह प्रधान ॥ मुझने मोहोटो गुण कस्यो, दीधुं जीवितदान ॥ ए ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, म्हारा डुखनो जाण ॥ में राख्यो तुझने सही,तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं बुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करशुं अमें, तन मन क रि एकरास ॥ ११ ॥ पण मुझने साची कहो, ए कां रण थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जे म ॥ १२ ॥ वगर कहे किम जाणियें, पारका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे,मांमी सघली घात॥ १३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ नृप कहे साजल मंत्री,कहुं तुज नीपनी ॥ हरि बल केरे मंदिर,जमतां जे ऊपनी ॥ हरिबल केरी नारि, वसंतसिरी सदा ॥ पीरसवा आवी जोजन,में दीठी तदा ॥ १ ॥ रूप अनोपम जाणीयें, अजिनव अपछरी॥ के रंजा के उर्वशी, के विद्याधरी ॥ नागकुमारी ए जाणुं के, लखमी किन्नरी ॥ एहवी रूप निधान में, दीठी ए सुंदरी ॥ २ ॥ ए रूप आगल बीजी, स्त्रीयो बापडी ॥ मान गुमान ते मूकी,दशो दिशि त्रापडी ॥ रंजा उर्वशी अपसर, जइ नजमें रही ॥ पद्मइहमें लखमी, रही अंबुज ग्रही ॥ ३ ॥ नागकुमारी किन्नरी, जूतलें जइ वसी ॥ वैताढ्यें विद्याधरी, रही जइने खसी ॥ जे रमणीनी उपमा,ते देतां सही ॥ वसंतसिरी को आग ल, मांकि शकी नही ॥ ४ ॥ ते अंगनानुं रूप, देखि हुं वश थयो ॥ खटरस जोजन जमतां, ते जूली गयो ॥ मंन ललचाणुं मुज,जमर जिम केतकी ॥ जिम मधु ख ग लपटाय, थयुं तिम एथकी ॥ ५ ॥ कोइक चोघडी यानी जे, आवी हिये चडी ॥ खिण खिण सांज रे वीसरे, नही ते अध घडी ॥ चित्रलिखित जो माव

त, गजथकी उतरे ॥ तो मुफ हृदयथी वसंत,सिरी ते वीसरे ॥ ६ ॥ ते विण जे घडि जाय ते, मास स मान ज्युं ॥ मास ते जाणीयें होवे, वरस प्रमाण ज्युं ॥ मोहविलुब्धो जीव, फूरे दिन रातडी ॥ साले साल समान, खुई निज जातडी॥ ७ ॥ मत कोइने प्रजु ला गो, एकांगी प्रीतडी ॥ बाले सुरंगी देह, पतंग ज्युं रीतडी ॥ अगनी झंपापात, करेवी सोहिली ॥ पण वि रहानल बाफ, सहेवी दोहिली ॥ ८ ॥ संग्राम करतां लागे ते,जलकां सोहिलां ॥ पण ते कामिनी जलकां,ख मवां दोहिलां ॥ जिम रोगी ज्वरयोगथी, सेजें तडफ डे ॥ तिम विरही नर काम, ज्वरथी लडथडे ॥ ए ॥ चिंता चिता दोमें, अधिकी कुण वहे ॥ चिता दहे नि र्जीव, सजीव चिंता दहे ॥ जिहां सूधी ते नयणें न, निरखे अति जले ॥ घरनां कारज तिहां सुधी, कांहि न ऊकले ॥ १० ॥ लोगीनी परें जीव, रहे निज ते क ने ॥ खाधा पिधानी सूध, नही ते जीवनें ॥ शून्नी फरे तस देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागी घ णुं जोर जे, ललना अभिनवी ॥ ११ ॥ विरुउ विष य विकार के, दृष्टि लागे जिका ॥ वीषयीनो दिल दाह, जाणे केवली तिका॥ मदिरा पीधे जीव,घुमाई ज्युं रहे ॥

विरहनो लीणो जीव, मुंफाइ त्युं वहे ॥ १ २ ॥ जोजो नवियां प्रीतडी, लागे जेहने ॥ होये एह हवाल के, मानव तेहनें ॥ विरहनी वारता वीती, हशे ते जाणशें ॥ पण निसनेही मूरख, शुं ते पिछाणशे ॥ १ ३ ॥ मननी लालच रात, दिवस रहे तेहशुं ॥ न गणे सुख छुःख जीव, बंधाणो जेहशुं ॥ प्रीतिनो लीणो जीव, पडे ते कूप मां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते चूंपमां ॥ १ ४ ॥ रमणी तणां जे नेत्र ते, कज्जल पंकथी ॥ प्रगटे कंदर्प मत्त, वराह निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह ते संचरी ॥ मानलता खिण एकमें, जाये ते चरी ॥ १ ५ ॥ कामी जनने काम, सुअर केडें पडे ॥ विरही जनने अह निशि, विण खूनें नडे ॥ काम वराह ते कामिनी, संग थी ऊसरे ॥ वीरहीजननां मन ते, तव शीतल करे ॥ १ ६ ॥ सबल पुरुष गढ कोट ते, जीते पराक्रमें ॥ कामिनी जीते त्रीजग, एक कटाक्षमें ॥ कामणगारी नारी ते, सहुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर, स्त्री केडें फरे ॥ १ ७ ॥ सबला ते नबला थई, स्त्री वश रहे बहु ॥ तो माहरो कोण आशरो, मंत्री तुऊ कहुं ॥ रे मंत्री तुऊ आगल, मांफी में कही ॥ वसंतसिरीनुं कारण, ए नीपनुं सही ॥ १ ८ ॥ नोजन करवा गया तव, ए

फल लाविया ॥ कारण करीने कारण, लोकने लाविया॥ करण विंधावतां नाक, विंधावी आवियो ॥ ए कखा णो लोकमें, साचो करावियो ॥ १९ ॥ ते माटे हवे कोइक, उद्यम कीजियें ॥ वसंतसिरीमुख देखि, सु धारस पीजियें ॥ जो कोइ विद्या होय तो, पलकमें जइ मलुं ॥ राचुं माचुं मन, तिहांथी न नीकलुं ॥२०॥ बुद्धि अकल परपंच, करी कोय केलवे ॥ छे कोय प्रजु नो वाहालो, मुजने मेलवे ॥ तन मन करुं खुरबान, के जो मुजमे मले ॥ आपुं कोडि पसाय, करी नले नले ॥२१॥ ए अधिकार ते सघलो, मंत्रीयें सांनल्यो ॥ कामा तुर थयो राय, ते मंत्रीयें अटकल्यो ॥ घणुं बलीयो पण सिंह, अजाडीमें पड्यो ॥ तिम रमणी मोह जालमां, नृप पूरो जड्यो ॥ २२ ॥ तो हवे कोइक बोल, सु बोल कही नला ॥ नृपना मनमें खीनी, फि कर काढुं बला ॥ सवलुं कमल हशे तो, कह्युं नृप मा नशे ॥ तो शीखामण सघली, लेखें आणशे ॥ २३ ॥ सांनलजो नवि आगल, मीठी वारता ॥ सांनलतां खुशियाल, श्रोता दिल गारतां ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, ए बीजी पूरी करी ॥ नेहीने मन गमती ए, लब्धियें उच्चरी ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मंत्री नृपने कहे, सांभलो प्रभु महाराज ॥ अंतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥ ॥१॥ पण ए वात हलकी नहीं, छे भारे महिनाथ ॥ गणवा दशन यमदंतना, नभशुं भरवी बाथ ॥ २ ॥ तिम ए स्त्रीशुं नेहलो, करवो अति दुर्लभ ॥ छेमो संगति एहनी, ज्युं लहो सुख सुलंभ ॥ ३ ॥ जे कीधे तुमने प्रभु,खामी लागे अपार ॥ वाड जो गलशे चीभडां, क्यां होय तास पुकार ॥ ४ ॥ परदुःखभंजन राजवी, परजन पाले लाड ॥ वाहार जोइयें जिहां थकी,तिहां किम ऊठे धाड ॥५॥ अणघटती ए वातडी, किम कीजें प्रभु नाथ ॥ देखी पेखी वाघना, मुखमें घालवो हाथ ॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो कीजें प्रतिबंध ॥ छानी वातो नवि रहे, हिंग तणी जेम गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंग रेल ॥ जगमें छे परणी भली,पर परणी विषवेल ॥८॥ कांणी कोची फरबली, काली कुबडी जाण ॥ परणी जेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिछाण ॥ ए ॥ आपणी गावडी चंडमा, जे दोही पीवाय॥ शुं कीजें पर नी भली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संग

ति जे करे, तेह्नां पूरण पाप ॥ ऊंप करी बेसे नही, न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंन सरिखा नर कह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी असिधार ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना लालची, जे थया विषयाअंध ॥ नरकनिगोदें रडवड्या, सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रावण सरिखो राजवी, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ लाख बेहेंतालीश गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे राजन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विडंबना, कामें लुब्धा जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांइ नवि गणे, न गणे सुख दुःख तेह ॥ हे रा० ॥ २ ॥ धि० ॥ बत्रीश सहस अंतेउरी, रूपें अपछर प्राय ॥ हे रा० ॥ ते सरखीने अवगुणी, रावण सीता हराय ॥ हे रा० ॥ ३ ॥ धि० ॥ राम ने लखमण बेहु मली, मेली कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वरस लगें आकरा, जूझया नर झुंझार ॥ हे रा० ॥ ४ ॥ धि० ॥ सीताकारणें रावणें, केइ सुनट हणाय ॥ हे रा० ॥ अंतें पण रावण तणां, दश मस्तक छेदाय ॥ हे रा० ॥ ५ ॥ धि० ॥

त्रिजगमें कंटकेश्वरी,नाम धरावतो जेह ॥ हे रा० ॥ चोथी नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥ ॥ ६ ॥ धि० ॥ लंका परलंका करी, निजनारीने लेय ॥ हे रा० ॥ निज नगरीयें रघुपति वल्यो, जितना मं- का देय ॥ हे रा० ॥ ७ ॥ धि० ॥ बाणुं लख मालव धणी, जे थयो राजा मुंज ॥ हे रा० ॥ ते पण दासी मृणालथी, लुब्ध्यो कामीनि पुंज ॥ हे रा० ॥ ८ ॥ धि० ॥ ते दासीना संगथी, घर घर मागी नीख ॥ हे रा० ॥ अंते शूलि रोपण थयो, कामथी लह्यो ए शीख ॥ हे रा० ॥ ए ॥ धि० ॥ लुब्ध्यो डौपदी ऊपरें, कीचकें कीयो चूक ॥ हे रा० ॥ घालियो देवल कुंन मां, नीमें कीधो नूक ॥ हे रा० ॥ १० ॥ धि० ॥ सर सति नामें साधवी, कालिकसूरिनी बेन ॥ हे रा० ॥ गर्धन्निल्ल नृपें तस अपहरी, कीधुं ए कामी चेन ॥ हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ कालिकसूरियें ततखिणें, मे ली प्रबल खंधार ॥ हे रा० ॥ गर्धन्निल्ल नृप शिर छेदी युं, वाली निज बहेन सार ॥ हे रा० ॥ १२ ॥ धि० ॥ इत्यादिक कामीजना, पाम्या डुःख अपार ॥ हे रा० ॥ परस्त्री गमन कस्याथकी, पडिया नरक मकार ॥ हे रा० ॥ १३ ॥ धि० ॥ कामिनी जे संसारमां, नां

खी पापनी राश ॥ हे रा० ॥ कामी जनने पाडवा, मोहकूपें धर्यो पाश ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ नय एें देखाडी प्रीतडी, बोली मीग बोल ॥ हे रा० ॥ प्राण हरी लीयें कामीनां, देंखाडी रंग चोल ॥ हे रा० ॥ १५ ॥ धि० ॥ आंसूं पाडी नयणथी, दुःख देखाडे आप ॥ हे रा० ॥ आ नवमें मुज तुम विना, बीजा नाइने बाप ॥ हे रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ कडकडता करि आकरा, खाये खोटा सूंस ॥ हे रा० ॥ थें पर मेसर साचलो, तेतरे ननननला पुंस ॥ हे रा० ॥ १७॥ धि० ॥ नोलवे नोला नामिनी, राखी ते कूडी बुद्धि ॥ हे रा० ॥ नडक प्राणी बापडा, माने ते धोलुं दूध ॥ हे रा० ॥ १८ ॥ धि० ॥ कूड कथन चाले घणुं, स्त्रीनो एह सनाव ॥ हे रा० ॥ चरित्र रमे केइ जातिनां, पा मी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ १९ ॥ धि० ॥ कूड क पटनी ओरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अ नया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा० ॥ २० ॥ धि० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां पाकां बोर ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कठो र ॥ हे रा० ॥ २१ ॥ धि० ॥ महिला केरो नेहलो, जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ आसो मासनो मेहलो,

तेह्वो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ २२ ॥ धि० ॥ स्वारथ पहोंचे जिहां लगें, तिहां लगें करे रंग रेल ॥ हे रा० ॥ त्रूटी तन धन हरि लिये,रूठी विषनी वेल ॥ हे रा० ॥ २३ ॥ धि० ॥ सुरीकंतायें कंतने, हणियो देई झेर ॥ हे रा० ॥ नारी डुष्ट होवे सदा, न जुवे करतां केर ॥ हे रा० ॥ २४ ॥ धि० ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाख नां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुल्लणीयें निज पुत्रने, स्वहस्तें वन्हि दीध ॥ हे रा० ॥ २५ ॥ धि० ॥ पायुं रक्त भुजातणुं, खवराव्युं उरमांस ॥ हे रा० ॥ ते जितशत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें तास ॥ हे रा० ॥ २६ ॥ धि० ॥ नारी न होवे आपणी, वानां जो करियें लक्ष ॥ हे रा० ॥ दूधने मांग दो नामिनी, देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ २७ ॥ धि० ॥ मोह देखा डी दगो करे; स्त्रीनो छे ए ढंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तुमें राजवी, म करों परस्त्री संग ॥ हे रा० ॥ २८ ॥ धि० ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥ हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मले, वसंतसिरी चित्त भ्रांत ॥ हे रा० ॥ २९ ॥ धि० ॥ मन लाग्युं जेह उपरें, विसार्युं नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा छाकमां, उप देश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ ३० ॥ धि० ॥ लब्धि वी

जा उल्लासनी, ए कही त्रीजी ढाल ॥ हे रा० ॥ आ
गल नवि तुमें सांजलो, सरस कथा उजमाल ॥हे रा०

॥ दोहा ॥

॥ वलि मेहर मंत्रीसरु, नृपने दे उपदेश ॥ जाणे
किम करि नृप वले, होवे लाज विशेष ॥ १ ॥इम जा
णी मंत्री कहे, सांजलो तुमें माहाराज ॥ चिहुं जगमें
छे अति घणी, तुमची महोटी लाज ॥ २ ॥ साचवी
यें जल आपणुं, अणसाचवियुं जाय ॥ नालीकेर
परें साचव्युं, अधिक अधिक जल थाय ॥ ३ ॥ परडुः
ख जंजन राजवी, जगमें इम कहेवाय ॥ परनारी ते
सहोदरु, बिरुद एम देवाय ॥ ४ ॥ ते मारग किम मू
कीयें, आपणि जे कुलवट्ट ॥ शील सुरंगु सेवतां, ल
हियें सुख परगट्ट ॥ ५ ॥ शीलें सुर सांनिध करे, शी
लें शीतल आग ॥ शीलें अरि करि केशरी, जय जाये
सवि जाग ॥ ६ ॥ शीलें मनवंछित फले, शीलें लहे
सौजाग्य ॥ शील धर्म जे चित धरे, जाए डुःख
दौर्जाग्य ॥ ७ ॥ शील प्रजावें जविजना, चढे चउद
गुण गाण ॥ केवल कमला ते वरे, पामे पद नि
र्वाण ॥ ८ ॥ शीलथकी कुण कुण तखा, ते सुण ज्यो
दृष्टांत ॥ मदन वेगने बूऊवे, मेहर मंत्रि विख्यात ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बिंदलीनी देशी ॥ एतो शीलनो॰ महिमा म होटो, सहि नांखे त्रिशलानो ढोटो रे ॥ नरपतिजी निसुणो ॥ ए तो शीलथी लील विलास, शीलें पहों- चे सघली आश रे ॥ न॰ ॥ १ ॥ ए तो जे नर शी लने पाले, ते आतम नव अजुवाले रे ॥ न॰ ॥ जे धरे शीलशुं राग, ते पामे नवोदधि ताग रे ॥ न॰ ॥ २ ॥ ए तो शील छे कुलनुं आनरण, शील टाले कर्म आवरण रे ॥ न॰ ॥ ए तो शील छे कुलनुं रूप, शीलें माने सुर नर नूप रे ॥ न॰ ॥ ३ ॥ ए तो शीलथी शुक्ल ध्यान, शीलें पामे केवल ज्ञान रे ॥ न॰ ॥ ए तो शीलशुं रहे एक तान, शिव रमणी दे तस मान रे ॥ न॰ ॥ ४ ॥ ए तो शील छे गुणनुं निधान, शी लें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न॰ ॥ ए तो शीलें संकट नांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न॰ ॥ ५ ॥ ए तो शीलें कुंअर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे ॥ न॰ ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेठ, शूलि फीटी सिंहा सन बेठ रे ॥ न॰ ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी, लघुवयमें थयो शिवगामी रे ॥ न॰ ॥ ए तो शीलें नेम कुमार, थयो शिवरमणी नरहार रे ॥ न॰ ॥ ७ ॥

ए तो शीलें मेघकुमार, जेणें बंडी आठे नार रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें गयसुकुमाल, शिवपदवी लही सुरसाल रे ॥ न० ॥ ७ ॥ ए तो शीलें थूलिनद्द नाम, राख्युं चिहुं जगमें अनिराम रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें श्रीमल्लिनाथ, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे ॥ न० ॥ ए ॥ ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां शीलें समारी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुनद्रा सुहाडी, जेणें चंपा पोल उघाडी रे ॥न०॥१०॥ ए तो द्रुपदी पांमव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवेरी रे ॥ न० ॥ ए तो तेहने शील प्रनावें, सुर सत अष्ट चीर पहेरावे रे ॥ न०॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल, अहि फीटी थइ फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनबाला, वीरें करी जाक जमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इत्यादिक अवदात, कहुं शीलनी केती आख्यात रे ॥ ॥न०॥ जे पाले शील नर नारी, हुं जाउं तस बलिहारी रे ॥न०॥१३॥ कुशीलियाने किहां न खटाय, कुक्कर ज्युं धक्का खाय रे ॥न०॥ कुशीलने काढे कूटी, जिम घर मांथी हांमी फूटी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे विस्सास, कुशीलियो फरे थइ दास रे ॥ न० ॥ कुशीलियो गति नवि पामे, जाये नरक निगोदने गामें रे

॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले नंदाय, चोविश दंडकें दंडाय रे ॥ न० ॥ कुशीलनां कर्म अघोर, न वो नवें फिरे थई चोर रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्र यंत्र नें विद्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध साधक नाम धरावे, कुशीलने जस कदि नावे रे ॥ न० ॥ १७ ॥ माहादेव जे देव कहाय, सरगथी मरि नरशुं जाय रे ॥ न० ॥ अहिल्याशुं इंद्र जे लुब्धो, तो सहसनगो नाम दीधो रे ॥ न० ॥ १८ ॥ कुल वालुउ साधु कहातो, गुरु द्रोहित किम जातो रे ॥ न० ॥ ते गयो गणिका संगें, छठी नरकें कुशीलने ढं गें रे ॥ न० ॥ १९ ॥ वर्ष सहस ते चारित्र पाली, कुं डरीकें तप परजाली रे ॥ न० ॥ ते मरीनें एकण रा तें, जइ बेठो नारकी पांतें रे ॥ न० ॥ २० ॥ कुशील नी करणी खोटी, करतो फरे नानी महोटी रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं तप जंप फोक, वध बंधन लहे फल रोक रे ॥ न० ॥२१॥ स्वदारा दिल नवि आवे, कुशीलियो उखर खावे रे ॥ न० ॥ ए तो जेहने जे पडी हेवा, तेह नी जाए टेव मरेवा रे ॥न०॥२२॥ ते माटे तुमें मही नाथ, छंडो परस्त्रीनो साथ रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं नाम धराशो, लोकोमें हांसुं कराशो रे ॥ न०॥ २३ ॥ दिल

साबुत राखो राजा, खत्रीवटनी राखो माजा रे ॥ न० ॥ ए तो तुमें छो प्रभुने वाला, इण वातें मत थाउ काला रे ॥ न० ॥ २४ ॥ ए तो वसंतसिरी जे बाला, तुमें न करो एहवुं चाला रे ॥ न० ॥ जाये जन्म ते जशने कमातां, पण वार न लागे जश जातां रे ॥ न० ॥ २५ ॥ ए तो परदेशी थई छूटे, पण महीमां तुम जग खूटे रे ॥ न० ॥ इम मंत्री तें परचावे, पण नृपने दिल कांइ नावे रे ॥ न० ॥ २६ ॥ मंत्रीयें जे कही वातो, ते सांभली नृप हुउ तातो रे ॥ न० ॥ तव मंत्री थयो खिसियाणो, साहामुं नृप रोषें भराणो रे ॥ ॥न०॥२७॥ हवे सुणजो जे नृप बोले, मंत्री आगल पोथुं खोले रे ॥ न० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, कही चोथा लब्धें रसाल रे ॥ न० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी ढिंग ॥ भूतभराड ते नृप थयो, जाणे लाग्यु विंग ॥१॥ हित शीखामण देवतां, नृपने चढी झाल ॥ आगें अहि छंछेडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगें वानरने वली, विछीयें चटको कीध ॥ आगें केशरीने वली, श्वाननुं बिरुद ते दीध ॥ ३ ॥ तिम नृप मंत्री उपरें,

कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवशुं, बोल्यो भ्रकुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुझने चातुर कोक ॥ बे दाणा तुझमें नही, जे बोले ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुशीलिया, करणी हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पछे, स्वर्गे पहोता केह ॥ ६ ॥ ते सांभल तुझने कहुं,शास्त्र तणे अनुसार ॥ व्रत भांगी ते मुनिवरा, पाम्या भवनो पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जीणा मारुजीरी करहलडी ॥ ए देशी ॥ भूनेता कहे सचिवने, सांभल तुं एकंगो थइने कान उघाडी हो राज ॥ चोविश वर्ष घरे रही, मुनिवर आर्द्रकुमारें व्रतने लाज लगाडी हो राज ॥१॥ ते गयो ज्योति आगारमें, सिद्ध वधूना संगमें जइ सुख भोगवे पूरां हो राज ॥ साख भली तस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंडमें अक्रूर जो तुं सनूरा हो राज ॥ २ ॥ श्रेणिक रायनो कुंवरुं, नामें नंदिखेण जे बलियो थइ व्रत लीनो हो राज ॥ तेणें पण व्रत भांजाने,गणिकाशुं घर मांझि रह्यो रंग भीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस सुख भोगवी, अजरामर पद लहियो करणी सहु जग जाणे हो राज ॥ माहानिशीथ जे सूत्रमां, साख

नली जाणजे मंत्री लिखित प्रमाणें हो राज ॥ ४ ॥
पापी चिलाती पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणें कीधी महोटी
कामें व्याप्यो हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आठमे,
साख नली तुं जाणजे श्री योगशास्त्रें उपायो हो राज
॥ ५ ॥ आषाढनूति अणगार जे, नाटकणीने साथें
बार वरस घर मांड्यो हो राज ॥ साख नली तस
चरित्रमां, ते गयो शिवगति मांहे जाणी जे व्रत खंड्यो
हो राज ॥ ६ ॥ चंद्रशेखर विद्याधरु, ते निज नगि
नि साथें निशिदिन रंगें रमतो हो राज ॥ ते लह्यो
मुगतिवधू प्रिया, श्रीसेत्रुंजो माहातम साखी छे मन
गमतो हो राज ॥ ७ ॥ चक्री नरत नरेसरु, गंगा दे
वीने घेर रहियो थइ सुखवासी हो राज ॥ सहस व
रस सुख नोगवी, नुवन आरीसामांहे पाम्या ज्ञान
उल्लासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, रुषन
जिणेसर साथें मुगति पुरीयें पुहता हो राज ॥
तेनी साख तुं जाणजे, जंबुदीवपन्नत्तिमांहे अक्षर
सुहता हो राज ॥ ए ॥ नामें एलाची जाणीयें,
नाटकणीनी लारें नटक्यो प्रेम विलुब्धो हो राज
॥ केवल रयण ते पामिने, मुगति पुरीमें जइने बेगे नि
नेय सूधो हो राज ॥ १० ॥ गज सुकुमालिका साधवी,

शशक मसक दो भाइ तेहनी बहेन कहाणी हो राज ॥ चिरकाल सुधी ते साधवी, सारथवाहनी घरणी थइ रही उपगार जाणी हो राज ॥ ११ ॥ ते थइ आर्या कुशीलणी, अणसण खंमी पहोती तेहिज भव सुरलोकें हो राज ॥ तेहना परगट अक्षरा, श्री उपदेशनी मालामांहे वांची जोकें हो राज ॥ १२ ॥ ब्रह्मा ध्यानें चूकव्या, नाटारंभ देखाडी रंभायें भो लव्यो. ब्रह्मा हो राज ॥ चिहुंदिशि चउमुख नीपनां, गर्दभनुं मुख प्रगटथुं पांचमुं उपजे शर्मा हो राज ॥ १३ ॥ मारग जातां ब्रह्मायें, वनमें दीठी रींछडी मीठी मनमें लागी हो राज ॥ तेहशुं अभिलाष सेवतां, रींछरुषि तें रींछडी पेटें उपनो सागी हो राज ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेसर करि मानें दुनियां एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेसरु, निज पुत्रीशुं विलसे रंगें थइ एक तानें हो राज ॥ १५ ॥ उमया नारी उवेखीनें, जटामध्यें भनी राखी ईश्वरें गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंभुने, वरण अढार जे मानवि रुद्रने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पुत्री उरवा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गव राणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी, लिंग

पुराणें चावो अक्रूर छे सपराणो हो राज ॥ १ ७॥ विष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहे पूजा णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते छंमी मही यारी राधा साथें गवाणो हो राज ॥ १ ८॥ कुंता पांडु नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो राज ॥ करण थयो ते उदरनो, जग चक्षु ते देवनी सहु जग माने उलसी हो राज ॥ १ ए॥ ए अवदात जे में कह्या, करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया कर्मे नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण आशरो, तिन भुवनमें सर्वने कर्मे मुक्या चूणी हो राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई भोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुगति जे पामवी, ते करणी छे सघली भवितव्यताने हाथें हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुभाशुभना बंध जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र तपस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हुतो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ करणी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥ ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहातम मांहे

छे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही, नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी नांखी हो राज ॥२४॥ नवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सीं- चे सो गणां, पण तेहनी कतावलें कतु विना फल नवि पावे हो राज ॥२५॥ तिम आपणी कतावलें, समकित रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो राज ॥ घणुंअ नूख्यो पण शुं करे, लाख उतावल करी यें बे करथी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम ड्व्य क्रियाथी न कघडे, नावक्रिया जब न्यंतर प्रगटे तब शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि ल ह्युं, तिहां सूधी ते जीवने चिहुं गति कर्म नमावे हो राज ॥ २७ ॥ ड्व्यथी उंघा चरवला, एकठा कीधा जीवें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी नही, नाव विना जें किरिया कीधी दंनी ज्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटें मंत्री तुमें, शील कुशील नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे कारण जब मिले, नवितव्यताने जोगें शुनाशुन तव नणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद नवेगें दीधो चोखो हाथमें लाडु हो राज ॥ वली

कहे सांजल मंत्रवी, तुझ करणी विगतावी ताहरा का न उघाडुं 'हो राज ॥ ३० ॥ लब्धें बीजा उल्लास मां, मंत्रीने समझाव्यो जलि परें पांचमी ढालें हो राज ॥ हवे सुणजो जवियण तुमें, आगल शी शी वात निपजे ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पापड खाई पदमशी, तुं थयो महोटो पवित्र ॥ १ ॥ पट्टा खाउ अम तणा, ल्यो वलि लोकां लांच ॥ लेवा देवा मापलां, राखो कूडां साच ॥ २ ॥ कूड कपट हृदयें धरी, बोलो मीठा बोल ॥ धोले दिन धूतो घणुं, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फरो पारकुं ताको छिद्र ॥ साची जूठी करो घणी, काढो जूना कुद्र ॥ ४ ॥ अम उपरालें लोकने, द्यो लेखणनो मार ॥ वेरें वींटा परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥ अमें उसरीयें पापथी, तुमें न उसरो कोय ॥ मरण बीक राखो नही, गती दृषद ज्युं होय ॥ ६ ॥ पर उपदेश देवा घणुं, माहापण राखो ठीक ॥ आप न जयें सासरे, दिये पारायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांध

गांठडी, हींमो शीश धरेय ॥ ८ ॥ चंदन जार गर्दज्ञ शिरें, जाणे लोकें दीध ॥ जारोद्वाह गर्दज्ञ थयो, पण चंदन स्वाद न लीध ॥ ए ॥ तिम मंत्री तुं जाणजे, तुजमां एह सज्ञाव ॥ मुज उपगार जाण्यो नहीं, गर्दज्ञ सम थयो गव ॥ १० ॥ एह वचन महिपति तणां, सांज्ञलि च्चमक्यो चित्त ॥ मनमां बीनो मंत्रवी, राजा केहना मित्त ॥ ११ ॥ हित शीखामण देयतां; साहामुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दज्ञने हणी, गाम शुं राखे रोष ॥ १२ ॥ महिपतिनुं मन उलखी, बोल्यो मंत्रि तिवार ॥ हा स्वामी तुमें जे कही, मानुं ते निरधार ॥ १३ ॥ राजा के परमेसरु, जे बोले ते सत्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोमें ठे दैवत्त ॥ १४ ॥ मुखथी साकर घालीने, नृपने कस्यो प्रसन्न ॥ महिपतियें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन्न ॥ १५ ॥ सिरपाव देइ वोलावियो, मंत्रीने निज ठाय ॥ राज काज शुज्ञ चालवे, मदनवेग तिहां राय ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ काबिलरो पाणी लागणो, काबिल मत चाले ॥ अथवा, धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त

सांजरी, तस थयो उदवेग ॥१॥ धिग धिग काम विटं बना, मोहें जोबन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी दुर्जय जीततां, घणुं दोहेलुं लागे ॥२॥धि०॥ तिण अवसरें एक मेहेतलो, कालसेन ते नामें ॥ नृपने नमि अति ढूकडो, बेठो अजिराम ॥ ३ ॥ धि० ॥ मननो मेलो मायावियो, मद जस्यो कंठ सूधी ॥ पण ते सर्प तणी परें, माहा दुष्ट कुबुद्धि ॥ ४ ॥ धि० ॥ नगद आसा मी छे घणुं, जाणे जठरनो मेल ॥ चाडी चुंगली क री घणी, काढे लोकनां तेल ॥ ५ ॥ धि० ॥ एहवो कु बुद्धि मंत्रीसरु, पेठो नृपने कानें ॥ हरिबल केरी वा रता, मांभी एक तानें ॥ ६ ॥ धि० ॥ हरिबल कीर्ति विस्तरी, नगरी जन मांहे ॥ ते सांजली मन मेंतलो, रीशें बले तांहे ॥ ७ ॥ धि० ॥ अवसर लेइ कालसेन ते, नृपकान जंजेस्यो ॥ दुर्जन मुख बाणें करी, नृपनुं दिल फेस्यो ॥ ८ ॥ धि०॥ लटपट नृप आगें करे,पा पी परपंच ॥ हरिबलने उबापवा, मांभ्यो सूधो सं च ॥ ए ॥ धि० ॥ स्वामी शुं जाणो अछो, हरिबलनी वातो ॥ नगरजन सहु वश करी, करशे तुम घातो ॥ ॥ १० ॥ धि० ॥ बत्रीश राजकुली करे, हरिबलनी सेवा ॥ कूडो रचे छे एक मली, तुमचो राज लेवा ॥

॥ ११ ॥ धि० ॥ चेतवुं होय तो चेतजो, घाट घडी यो छे कणे ॥ पछें कहेशो जे कह्युं नही, मुजने तें कूणें ॥ १२ ॥ धि० ॥ परदेशी अणजाणने, तुमों दोत बंधावी ॥ ते किम होवे आपणा, सुणो नृपति गावी ॥ १३ ॥ धि० ॥ वसंतसिरी अप्सर समी, हरिं बलनी छे लाडी ॥ निज हाथें प्रभुयें घडी, कामिज ननी ए वाडी ॥ १४ ॥ धि० ॥ ए स्त्री जेणें दीठी न हीं, तस जनम अलेखे ॥ बे हाथे प्रभु पूजीया, तें स्त्रीने ए देखे ॥ १५ ॥ धि० ॥ धन्य दिवस धन्य ते घडी, धन्य वेला तेह ॥ एहवी स्त्री जेने घरे, तस पुण्य विशेह ॥ १६ ॥ धि० ॥ इणि परें हरिबलनी करी, चुगली बल ताकी ॥ मेहेतले दुष्ट कुबुद्धियें, कांइ बाकी न राखी ॥ १७ ॥ धि० ॥ महिपतियें तें सांजली, चमक्यो चितमांहे ॥ पगथी मांफी माथा लगें, नृप परजल्यो दाहें ॥ १८ ॥ धि० ॥ आगें वेरी कर चढयो, वली करथकी छूटो ॥ आगें जुहारीने वली, मल्यो साथी जूठो ॥ १९ ॥ धि० ॥ आगें सर्प छंछेडिने, कस्यो पुंछथी बांफो ॥ आगें अग्नि फालमां सिंच्यो घृत मांफो ॥ २० ॥ धि० ॥ तिम नृप हरिबल ऊपरें, घणुं रोषें नराणो ॥ रे मंत्री हरिबल हणी

तस स्त्री घर आणो ॥ २१ ॥ धि० ॥ तव मंत्री का
लसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिबलने ह
णे, जनमां जाय पाणी ॥ २२ ॥ धि० ॥ पण एक
स्वामी उपाय छे, तुम बुद्धि बतावुं ॥ हरिबलने तुमें
मोकलो, लंका गढ गावुं ॥ २३ ॥ धि० ॥ जलनिधिमें
जातां थकां, वहेशे एह बोलें ॥ तव नारी तुम मं
दिरें, आवशे रंगरोलें ॥ २४ ॥ धि० ॥ गकर चाक
रनी इहां, साची खबर ते पडशे ॥ तुम आणा ते
शिर धरी, लंका गढ चडशे ॥ २५ ॥ धि० ॥ ते माटे
तेडी तुमें, हरिबलने पूछो ॥ एम कही घरे मेंहेंतलो,
गयो घाली बूंगो ॥ २६ ॥ धि० ॥ लब्धें बीजा उल्ला
सनी, कही छठी ढाल ॥ आगल नवि तुमें सांजलो,
मीठी वात रसाल ॥ २७ ॥ धि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मतो करि दोय ॥
महिपति पहोतो. महेलमां,मंत्री गयो घर सोय ॥ १ ॥
बीजे दिन रवि ऊगियो, प्रगट्यो राग विलास ॥ शकुं
नियें बांह पसारीयां, कैरव कीध विकास ॥ २ ॥ वा
छरुआं वलगां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा बेसे ना
मिनी, जेहने छे घर धेण ॥ ३ ॥ देउल सघले वा

जियां, झाळरना झणकार ॥ तास शबद सुणतां थकां, रजनी नाठि तिवार ॥४॥ सुध्धन्न बोधी जीवडा, मांझे निज खटकर्म्म ॥ साधूजन मुख मोमती, बांधी हे जिं नधर्म ॥५॥ मंगळ वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर नि- शाण ॥ ए करणी परभातनी, जब ऊगे शुभ भाण ॥६॥ मदनवेग नृप तिण समे, परखद मेळी एकत्र ॥ बेठो सिंहासन हसी, माथे धरावी छत्र ॥ ७ ॥ खटत्रीस राजकुळी मळी, वडवडा सोहे सामंत ॥ शेठ सेना पति मंत्रवी, परखद मेळि अत्यंत ॥ ८ ॥ हरिबळ पण मंत्रीसरु, बेठो नृपनी पास ॥ बिरुदावळि नृप जन तणी, कविजन बोले उह्लास ॥ ९ ॥ रंग विनो दनी वारता, परखदमें करे सार ॥ तिण अवसर नृप बोलियो, मदनवेग तिणि वार ॥ १० ॥

॥ ढाळ सातमी ॥

॥ झुंमखडानी देशी ॥ सभा समक्षें नृप कहे रें, सांभळजो सामंत ॥ सनेहा सांभळो ॥ माहरे काम अछे घणुं रे, अध्यवसाय अत्यंत ॥स०॥१॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें रे, लीधुं छे लग्न विशेष ॥स०॥ अंग जने परणाववा रे, मांड्यो विवाह विशेष ॥स०॥२॥ उम्मर मध्यें तुम तणुं रे,काम पड्युं छे आज ॥स०॥

॥ स्वामी जक्ता जे हुवो रे, ते सारो मुज काज ॥ स० ॥ ३ ॥ लंका गढ जावुं अछे रे, कहो ते जाशे कोण ॥स०॥ बीडुं लबो ए माहरुं रे,जे खाता होय लूण ॥ स० ॥ ४ ॥ लंकापतिने नोतरी रे, तेडी आवे जेह ॥स०॥ माहरी रीझें पामशो रे, लाख वधामणी तेह ॥ स० ॥५॥ राय बिजीषण तेहशुं रे, माहरे छे बहु नेह ॥ स० ॥ शीघ्र जई लगन दिनें रे, तेडी आवो गेह ॥ स०॥ ६ ॥ जो ममता माहरी करो रे, तो मत करजो ढील ॥ स० ॥ शीघ्र थइ बीडुं ग्रही रे, पंथें वहो मेली ढील ॥स०॥७॥ इणि परें महिपतियें कह्युं रे, सजा समक्ष वचन्न ॥ स० ॥ पण बीडुं ग्रहवा जणी रे, कोइ न दीये तन्न ॥ स०॥ ८ ॥ सगें मटा मटिनी परें रे, मौन करी रह्या सर्व ॥ स० मरण तणी बीकें करी रे, मूक्यो सघले गर्व ॥ स० ॥ ए ॥ अधोदृष्टि करी रही रे, सघली परखदा सोय ॥ स० ॥ ऊंची दृष्टें नवि जुवे रे, लज्जाणा सहु कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोडी मंत्री कहे रे, कालसेन ते डुष्ट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता रे, सांजली हुआ संतुष्ट ॥स०॥ ११ ॥ पण विषम पंथ आकरो रे, जलधिमें केम जवाय ॥ स० ॥ पग

वटें सिद्ध न संपजे रे, भुजाथी न तराय ॥ स० ॥ १२ ॥ गज पाखर जंबुकशिरें रे, नाखी.तुमें राजान ॥स०॥ ते किम तिणथी कंधरा रे,ऊंची थावा निदान ॥ स० ॥ १३ ॥ मतकोटनी कटि उपरें रे, मूकी-गोळनी गुण ॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे करे गजा विहूण ॥ स०॥ १४ ॥ तिम स्वामी लंका गढें रे, शक्ति विना कुण जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्र मी जे होवे रे, ते जावा अंगमाय ॥ स० ॥ १५ ॥ के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय ॥ स० ॥ के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥ स० ॥१६॥ बीजानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ताग ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांभल्यो रे, जलधियें बांधी पाग ॥ स० ॥ १७ ॥ केवली हरिबलने सुण्यो रे; जे बेगो तुम० पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गढें रे, बीडुं लबीने उल्लास ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए जाणियें रे, एहमां छे जगदीश ॥ स० ॥ काज तुमारुं सारशे रे, पूरशे मननी जगीश ॥ स० ॥ १९ ॥ इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति कीध ॥ ॥ स० ॥ सुभट शिरोमणि इण समे रे, दीसे हरिबल सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेला रे,

हरिबलने कहे राय ॥ स० ॥ शीघ्र थई बीडुं ग्रहो रे, जिम मुझ वंछित थाय ॥ स० ॥ २१ ॥ राय बिभीषणने जई रे, तेडि आवजो आंहि ॥ स० ॥ मान शुं मुजरो तुम तणो रे, जीवित सूधी उछाहि ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ तव हरिबल श्रवणें सुणी रे, मनशुं विमासे आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो न रहे मुझ लाज ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें रे, लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें बेसीयें रे, लाजें वाधे मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ कोट लीजियें रे, लाजें राखीयें सत्त ॥ स० ॥ लाज वधी मुझ चिहुं जगें रे, किम कहुं ना हवे झत्त ॥ स० ॥ ॥ २५ ॥ इणिपरें मनमां सोचीने रे, बोल्यो हरिबल साम ॥ स० ॥ लावुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं खरो मुझ स्वाम ॥ स० ॥ २६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे, तो मुझ देजो शाबास ॥ स० ॥ एम कही बीडुं ग्रही रे, हरिबल आव्यो आवास ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजपति मुख देखिने रे, वसंतसिरी उजमाल ॥ स० ॥ बीजा उल्लासनी ए कही रे, लब्धियें सातमी ढाल २७

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल कहे निज नारीने, सांभल प्यारी मुझ ॥

जावुं छे लंका नणी, मागुं आणा तुज ॥ १ ॥ थिर चित्त करी रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ शील सुरं गुं पालीने,करजो निर्मल गात्र ॥२॥ धरजो ध्यान नव पद तणुं, चउद पूरवनुं सार ॥ समस्या जिम सांनिध करे, आपे शिवसुखकार ॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक मनें, जेणे वधारी शर्म ॥ कीडीथी कुंजर कस्या, उज्ज खावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम वचन ते सांजली,व संतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पडे, ते कहो जाणुं जेम ॥५॥ तव मांमी हकिगत कही, प्यारी आ गल तेह ॥ तिण कारण जावुं पडे, सांजल तुं ससनेह ॥६॥पियुनुं गमन तेसांजली,कुमरी थइ दिलगीर॥जांणे नाइव मेह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥७॥ कालजेको घाली वहो, प्रीतम तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहें तुम विना, बले सुरंगी देह ॥८॥ सघलुं डुःख खमीयें प्रन्नु, पण विरहो न खमाय ॥ विरहानलनी बाफ जे, पियुं विण केम उलाय ॥ ए ॥ तेमाटे प्रीतम तुमें, मत जाउ परदेश ॥ मन किम वहशे मूकतां, मुजने बाले वेश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियु तुमें, महोटुं लाव्या विंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, जिहां गयां उंटनां शिंग

॥ ११ ॥ जो प्रितम चालो तुमें, तो मुझ तेडो संग ॥ टेह्ल करेशुं तुम्ह तणी, जोशुं लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आसणारा योगी ॥ ए देशी ॥ तव प्रीतम कहे सांजल प्यारी, मुझ तुं छे मोह्नगारी रे ॥ सुंदरी स सनेही ॥ तुझ मुख देखि हुं सुख पाउं, तुझ निशि दिन चितमें ध्याउं रे ॥ १ ॥ सुं० ॥ प्राणथकी छे तुं मुझ वाह्ाली, जिम चंदने रोह्णी वाह्ाली रे ॥ सुं० ॥ तुं मुझ चित्रावेल समानी, तुं मुझ बुद्धि निधानी रे ॥ २ ॥ सुं० ॥ जव थइ ते प्रञ्जुनी महेरबानी, प्रीतडी तुझशुं छानी रे ॥ सुं० ॥ लेख लिखित थयो तुझशुं मेलो, थयो संबंध पुण्यें जेलो रे ॥ ३ ॥ सुं० ॥ अहोनिश लालच रहे तुझ केरी, घणुं घणुं करि कहुं शुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुझने मुकतां मन नथी कहेतो, पंथें चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ ४ ॥ सुं० ॥ पण शुं करीयें नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे ॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्युं नवि करियें, तो नृपनो ज्ञग किम वरियें रे ॥ ५ ॥ सुं० ॥ जेह्ना घरनो कोलियो खावो, तस घरनो धोलो बंधावो रे ॥ सुं० ॥ ए संसारमें रीति छे सघले, काम कीधे जस वधे स

बळे रे ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरी, मुने आणा दे हवे तोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रगतें जई आविश वहेलो, नृपनुं लगन ते पहेलो रे ॥ ७ ॥ सुं० ॥ तव रमणी कहे सांजल प्यारा, तुम हेज लताना क्यारा रे ॥ प्रीतम ससनेही ॥ मुज वखतें तुमे सुरपति सरिखा, मळ्या ठो पुण्यें आकर्ष्या रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ जगती जोतां प्रजु तुमें जडिया, सुरमणि सम मुज कर चडिया रे ॥ प्री० ॥ सुकृतवल्लि फली सुखदायी, थइ तुमथी साची सगाई रे ॥ ए ॥ प्री० ॥ में तुमशुं जे पालव बांध्यो, जीवित सुधी नेहलो सांध्यो रे ॥ प्री० ॥ हवे मुज प्रेम पयोधिमें नाखी, केम ज्ञाउ ठेहलो दाखी रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ वसी मुज हृदयें थया परदेशी, तन मनना सोदागर वेशी रे ॥ प्री० ॥ नाखी मुजने प्रेमनी फांसी, बेग चालवा मूकी निराशी रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ मुज सरिखी नारी कां मूको, नृप मंत्रीने वयणें कां चूको रे ॥ प्री० ॥ एहवो कुण मूरख ठे जांजी, जे पय मूकी पीये कांजी रे ॥ १२ ॥ प्री० ॥ ते ज्रखाणो प्रजु तुमें मेल्यो, पठे बीजानो अविहेलो रे ॥ प्री० ॥ में तुमने कहि आगें चितारो, नृप जमतां वात संजारो रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ ते फल

जग्यां तुमारां वाव्यां, निज करनां घड्यां हृश्ए नाव्यां रे ॥ प्री० ॥ ते कारण लंकायें जावुं, नृपें कीधुं चूक ते चावुं रे ॥ १४ ॥ प्री० ॥ डुर्जन नृप मंत्री पड्यो केडें, पण कोइक दिन ते वेडे रे ॥ प्री० ॥ सांजलो प्रीतम हुं तुम नांखुं, नीतिशास्त्रमें जे कह्युं दाखुं रे ॥ १५ ॥ प्री० ॥ एतां सूनां कदीय न मूके, जे माह्या ते नवि चूके रे ॥ प्री० ॥ स्त्री धन पुत्र जे राज सुहर्म, सूनां मूक्यां ए न रहे शर्म रे ॥ १६ ॥ प्री० ॥ ते माटे तुमें सांजलो स्वामी, तुम वीनवुं अंतरजामी रे ॥ प्री० ॥ बहुश्रुतने करी वचनें वहीजें, डुर्जनथी दूर रहाजें रे ॥ १७ ॥ प्री० ॥ निज नारीने साथें लीजें, पीयु प्रेम सुधारस पीजें रे ॥ प्री० ॥ कामिनी जाणे कंथ विहूणी, जेम दीसे नांगी दूणी रे ॥ १८ ॥ प्री० ॥ कंत विना नारी नवि शोने, पग पग लहे दोष ते ठोने रे ॥ प्री० ॥ कंथ विना स्त्री दीन समान, जिहां जाय त्यां न लहे मान रे ॥ १९ ॥ प्री० ॥ पियु विण स्त्रीने मंदिर मांहे, घडी जंप वले नहिं क्यांहे रे ॥ प्री० ॥ पियु विण पहेरवा जे शणगारा, ते तो लागे जाणे अंगारा रे ॥ २० ॥ प्री० ॥ पियुडा विण ते सुखनी सेज, जाणे लागे कौअच रेज

रे ॥ प्री० ॥ केइ लख लाख मंदिर जन जरिया, केइ कोडि सखि परवरीया रे ॥ २१ ॥ प्री० ॥ पण ते प्रिय विण न लागे नीका, जिम घृत विण जोजन फीकां रे ॥ प्री० ॥ धन्य ते नारीनो अवतार, जस मंदिर रहे जरतार रे ॥ २२ ॥ प्री० ॥ शा अवगुण तुमें मुझमें दीठा, विण खुनें वहो थइ धीठा रे ॥ प्री० ॥ तुमथी तिरियंच पंखी रूडां, दूरें न रहे स्त्रीथकी सूडा रे ॥ २३ ॥ प्री० ॥ चार पहोरनो रह्यो जो अंतर, तो झूरे खग निरंतर रे ॥ प्री० ॥ तो केम तुमें निसनेही थावो, निज स्त्री विण लंका जावो रे ॥ २४ ॥ प्री० ॥ के शुं माहरो मोह उतारी, नौतन कोइ नारी संजारी रे ॥ प्री० ॥ के शुं लंका मसलुं काढी, जाउ परणवा दूजी लाडी रे ॥ २५ ॥ प्री० ॥ तुम चित्तनी पियु कल नवि सूझे, ए तो केवली विण कुण बूझे रे ॥ प्री० ॥ तो हवे तुमने वेगला न मूकुं, निज स्वामीनी सेवा न चूकुं रे ॥ २६ ॥ प्री० ॥ जो मुझने साथें नवि तेडो, पण हुं किम मेलिश केडो रे ॥ प्री० ॥ कायानी गया पेरें वलगी, केम रही शकुं तुमथी अलगी रे ॥ २७ ॥ प्री० ॥ एणी पेरें नारी प्रेमं विलुद्धी, करी विनति

पियुने सूधी रे ॥ प्री० ॥ बीजा उल्लासनी आठमी ढा
ळें, कही लब्धि रंग रसालें रे ॥ प्री० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल कहे नारीने, सांजल तुं गुण गेह॥
प्राणजीवन मुज तुं अछे, हुं केम देइश छेह ॥१॥ पाल
व बांधी ताहरो, डुर्मन केम थवाय ॥ राखुं जो वहे
रो तुजथकी, तो मुज प्रज्ञु डुहवाय ॥ २ ॥ ते किम
हुं करुं सुंदरी, तुजथी दिल बदलाय ॥ देखी पेखी म
क्खिका, जीवति केम गलाय ॥ ३ ॥ पण कोय दैवना
योगथी, पूरव जव मेलाप ॥ अणचिंतित जो स्त्री
मळे, तो तस करवुं माफ ॥४॥ तुजथी उपर वट थइ,
नवि जांगुं तुज आण ॥ छेह न दाखुं तुज जणी, ऊगे
पछिम जाण ॥५॥ साथें तुजने तेडतां, नथी पूरव तुं
गुज्ज॥ स्त्री ते पग बंधण अछे, पंथें हुं कहुं तुज्ज ॥६॥
मत जाणे तुं मन्नमें, प्रीतम देशे छेह ॥ एकज मास
ने अंतरे, आविश हुं ससनेह ॥७॥ ते माटे थिर चित्त
करी, रहेजो थइ सावधान ॥ दान सुपात्रें पोखजो, धर
जो अरिहंत ध्यान ॥ ८ ॥ शीख जलामण इणि पेरें,
वसंतसिरीने दीध ॥ लंका गढ जावा जणी, हरिबल
मुहूरत लीध ॥ ए ॥ चैत्र शुदि एकम दिनें, शुज

कारी नृगुवार ॥ रमणीने राजी करी, हरिबल चाले तिवार ॥ १० ॥ तव कुमरी कहे कंथने, वरसति आंसु धार ॥ पियुजी पूरण प्रीतडी, मत मूको विसार ॥ ११ ॥ मंदिर एकलां नवि गमे, सूतां सूनी सेज ॥ अवधी उपर आवशो, तो जाणशुं तुम हेज ॥ १२ ॥ प्राणवल्लभ नहि वीसरो, अध घडी आतराम ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, करीने रूडां काम १३ ॥ प्रीतमजी तुमें सिद्ध करो, वड ज्युं विस्तेर रोह ॥ उंबर केरां वृक्ष ज्युं, थडथी तुमें फलजोह ॥ १४ ॥ इम आशिष ते देइने, वोलाव्यो नरतार ॥ हरिबल पण शिख मागवा, पहोतो नृप दरबार ॥ १५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ नृपनें जइ प्रणिपत कीधी रे, सहु साथनी आगना लीधी रे ॥ हवे हरिबल लंकायें चाले रे, नृप जन बहु वोलावा हाले रे ॥ १ ॥ शकुने पण बांहिज दीधी रे, लीधी वाट लंकानी सीधी रे ॥ घणी दूयें वोलावी वलिया रे, नृप मंत्री दो हर्षे नलिया रे ॥ २ ॥ पय मंजारी देखी ज्युं. हरखे रे, तिम महीपति मनमें वरशे रे ॥ जाणे नृप चिंतव्युं थाशे रे, मुज वसंतसिरी घेर आशे रे ॥

३ ॥ जे कहेशो ते विध करशुं रे, मनवंछित सुख ते
वरशुं रे ॥ एम चिंतवी नृप घरे आवे रे, निज मन
शुं बुद्धि उपावे रे ॥ ४ ॥ मन गमता मीठा मेवा रे,
जेह खाता लागे हेवा रे ॥ द्राख रायण आंबा केलां
रे, दीठां दाढ गले तिण वेला रे ॥५॥ बेअ बदाम नि
मजां पिस्तां रे, मुख देतां न लागे सस्तां रे ॥ इत्यादि
क मेवा वारु रे,मेले वसंतसिरीनी सारु रे ॥६॥ क
र्मिशरीना पकवान्नरे, बेठा जोग लिये जगवान रे
दूध पेंडाने घृत पूर रे, चढे खातां दांते शूर रे ॥ ७
सिंह केसरीया ने जलेबी रे,खातां नूर वधे ते सतेबी रे॥
एम सुखडी मेली ताजी रे, जिम वसंतसिरी होवे रा
जी रे ॥ ८ ॥ चुवा चंदन अरगजा ताजां रे, सुखमू
लां अंतर जाजां रे ॥ केइ सुगंध द्रव्य अणायां रे, श
तपाक ते तेल बणायां रे ॥ ए ॥ तिल मात्र जो व
स्त्र लगावे रे, चिहुं दिशि परिमल पसरावे रे ॥
जाणे सुगंधपुरी वसाई रे, जोगी जनने सुख दाई रे
॥ १० ॥ एणी पेरें सुगंधी चूवा रे, सींसा जरिया
नव नवा जूवा रे ॥ नृप जाणे कुमरी रीझे रे, मुझ
कारज शीघ्र तें सीझे रे ॥ ११ ॥ बहु जारे चीर अ
णावे रे, झरतारी शालु मगावे रे ॥ कसबी मशरु एक

री रे, पंचरंगी मसजर नारी रे ॥ १२॥ हेम रयण घाट सुघाट रे, मेले आनूषणना थाट रे ॥ रम दोना जे शृंगारा रे, नृप मेले ते श्रीकारा रे ॥ १३॥ तणी पेरें सामग्री मेली रे, नरी ढाबमें सघली भेली ॥ ते उपर उंढाड ढांकी रे, करी मुद्रा को न जाय ांखी रे ॥ १४ ॥ हवे दासी जे चतुरा माही रे, ामी जनने मूके जे वाही रे ॥ तेहने तेडी नृप नां । रे, निज चित्तनी वारता दाखे रे ॥ १५ ॥ तुमें ावो हरिबल गेहें रे, जिहां वसंतसिरी छे नेहें रे ॥ जइने तुमें ढाब ए सूंपो रे, कहेजो नृपें मूकी ए चूपो रे ॥ १६ ॥ सुललित वचनें करी कहेजो रे, तेहनुं मन वश करी लेजो रे ॥ घणी शी रे नलामण दीजें रे, ास अमृतफलरस लीजें रे ॥ १७ ॥ ते वात वधाम ाी वहेली रे, लेइ आवजो दी ढतां पहेली रे ॥ एम ीख नलामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी ॥ १८ ॥ दासी पण ढाब ने लेई रे, पहोती हरिब ल घेरें बेई रे ॥ जिहां बेठी हरिबल नारी रे, मूकी ढा ब ते आगल सारी रे ॥ १९ ॥ कहे दासी मधुरी. वाणी रे, नृप मूकी ए तुमने जाणी रे ॥ तुम उपर छे घणो नेह रे, घणुं शुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥

जिण दिनथी तुम घेर आव्या रे, तिण दिनथी ते
दिन जाव्यां रे ॥ जलां जोजन जव तुमें प्रीस्यां
तिण वेलाथी नृप दिल हींस्यां रे ॥ २१ ॥ देखी
मची सुघडाइ रे, नृप चाहे तुमने सदाइ रे ॥ ए कल
लच रहे तुम केरी रे, जिम लोजीने नाणा केरी रे
२२ ॥ तुम विरहें करी नृप झूरे रे, राज काज ते
क्यां दूरें रे ॥ जेम योगी प्रजुने ध्यावे रे, तेम नृ
तुम नाम जपावे रे ॥ २३ ॥ इम राखे एकंगी तुम
शुं रे, मन मेल करो तुमें नृपशुं रे ॥ सरिखा सरि
खो मल्यो जोडो रे, नृपशुं तुमें तान म तोडो रे ॥
॥ २४ ॥ बाइ तुम मोहोटी पुण्याइ रे, नृपशुं थइ प्री
त सगाइ रे ॥ ए वात विधातायें मेली रे, जाणे पय
मां साकर जेली रे ॥ २५ ॥ तुमें जो कहो सारंगनय
णी रे, नृप आवे तुम घरे रयणी रे ॥ इण वातें ल
ज वे तुमने रे, राजी करी बोलावो अमनें रे ॥ २६ ॥
एम दासीनी सांजली वाणी रे, तव कुमरी रोषें जर
णी रे ॥ जिम लागे विंठीनो चटको रे, तिम कुमरी
ने लागे जटको रे ॥ २७ ॥ हवे सुणजो कुमरी व्या
पे रें, शेर सुखडी दासीने आपे रे ॥ एतो बीजा उ
ह्लासनी ढाल रे, लवधें कही नवमी रसाल रे ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कोपें करी, दें दासीने मार ॥ निं
दे तिम जीवित लगें, गडदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ ना
ठी जीवित लेइने, चतुरा म्हाही जेह ॥ नृप आगल
आवी कहे, सघली मांफी तेह ॥ २ ॥ नासंत नू
नारे थइ, केती कहुं माहाराज ॥ लहेणेथी देणे प
डी, ए फल लह्युं तुम काज ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प
रसादथी, जडियो कुंदीपाक ॥ साजी हलदर सेवशुं,
तव होशे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी प्रिया,
दीठी बडी कुपात्र ॥ जाणे कौअचवेलडी, घर सर
खी नही यात्र ॥ ५ ॥ ते माटे प्रभुजी सुणो, ए नावे
तुम हाथ ॥ एहथी मनडुं वाल जो, कर जोडी कहुं
नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांभलि नृप
ऊलफाय ॥ हा हा में ए शुं कर्युं, इम नृप धोखो क
राय ॥ ७ ॥ शी मनमें धारी हती, दैवें शी करी वा
त ॥ नृप कन्या परसादथी, व्याघ्रें द्विज नक्षात ॥८॥
जाण्युं हतुं वश आवशे, हरिबल केरी नारि ॥ पण
साहामुं इणि नारियें, ऊतार्युं नृपवारि ॥ ए ॥ हाणि
अने हांसी बहु, थइ नृप चिंते एम ॥ एह दुख के
हने दाखवुं, होठें दाधो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति

फूरण करे, सांभलि दासी वेण ॥ ते दिन क्यारें आ वशे, देखशुं.ते स्त्री नेण ॥ ११ ॥ वलि बीजी फरि मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ दृषद सरीखा मान वी, जिजवी आणे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी नि जप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप क हे, सांभल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमशुं अछे,सुगुण लही कहुं तुज्झ ॥ हरिबल केरी जे प्रिया, मेलव आणी गुज्झ ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने, सांभलजो महिनाथ ॥ प्रीति वधारी पलकमें, लेइ सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, बीडुं ठवि तिण वार ॥ चाली हरिबल मंदिरें,राणी लेइ प रिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सूरती महिनानी देशी ॥ हवे कुमरी अमरी प रें, बेठी महोल मझार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें,वसंत श्रीरीयें तिवार ॥ १ ॥ कुमरीयें जाण्युं जे में हणी,दा सीमे काढी रें सोथ ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी आवी ए लोथ ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, मूकी ए

राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, ऊटपट मांम्यो उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीनें नीडी रे बाथ ॥ अंगोअंग मलीने रे, चरणें नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीजवे, वसंतसिरी तिण ठोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेठी रे, वातें एकण थान ॥ जाणे स्वर्गथी ऊतरी, रंना उरवशी मान ॥ रूप अनूपम बेहुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंदर्प वाडीयें, प्रगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राजकुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे जोडी, मलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुन्न सुंदरी, कहे पटराणीने आज ॥ नलें रे पधार्यां राणीजी, कोडी सुधार्यां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अम मंदिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सरिखुं जे काम हुवे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, बे एक तुमशुं जी काम ॥ कहिन करीने थापवा, आवी छुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु मूलां, नूषण आपे श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें मांम्यो जी पास ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महो

टो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने डुहवतां, पूरवे नहि इण गाम ॥ ते जाणीने कुमरीयें, नूषण रा ख्यां जी ताम ॥ मुखनी मिगाशें करी कहे, कुमरी राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापो,ते अमें जाएयुं जी तेह ॥ ८ ॥ ते मत जाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे जोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें करी मो लाय ॥ उगमणी दिशि मूकी जो, ऊगे पछिम नाण ॥ ससिहर जो अग्नि फरे, तो सती न चूके गाण ॥ए॥ पण शुं करीयें राणी जी, अंतें तुमशुंजी काम ॥ नृपने जो अमें डुहवीयें, तो वली फेडेजी गाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी रा खीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांजलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं ने सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप ने एक मासनुं, ते जव पूरूं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणी जी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम सत्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणी ए, सांजली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुफ आव्या नो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही

कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ।। अशन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ।। राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ।। आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ।। १३ ।। मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंमाण ।। ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मलशे सुजाण ।। तिहां लगें नाथजी वेग, प्रज्जुनुं जजन करेय ।। निश्चें मलशे कुमरी, जीवने धैर्य धरेय ।। १४ ।। इणिपरें राणीनी सांजली, वाणी नृप हरखंत ।। जाग्य दिशा मुझ जागी, जांगी जावठ जांत ।। नृपना मनमें गंग, तरंग ज्युं उलट्यो रंग ।। जाणे माणशुं मासनें, अंतरे कुमरीशुं चंग ।। १५ ।। सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महोटां रे आय ।। ते सरखा पण जीवने, जोगवतां वही जाय ।। तो शुं इणमें मासनुं, जावुं केतिक वार ।। आजने काल करंतां, वहेशे मास विचार ।। १६ ।। इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ।। निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ।। आशायें जीव जीवाडवा, जीव रुले संसार ।। पण चउलख जोजन लगें, नर वहे आशा मझार ।। १७ ।। आशा अंबर जेवडी; कहे डुनियां सहु कोय ।। आशायें ईमां अनल तणां,

ते पण वृद्धज होय ॥ तिम ए नरपति आशामें, छू जे दिन ने रात ॥ वसंतसिरीनुं ध्यान, धरे ते उठी प्रजात ॥ १८ ॥ आंगुलीना वेढा गणे, निशिदिन मासना दीह ॥ आशा पासमें विचरे, नरपति जेह अबीह ॥ प्रीतिमती पट्टराणीयें, प्रीति वधारी रे जेह ॥ नृपनी रे मननी डुविधा, दूर विदारी तेह ॥ १९॥ नृप राणी दो रंग,विनोदमें काढे रे दीह ॥ राजनां काज सधारे, मदनवेग ते सिंह ॥ वसंतसिरी पण पोताने, मंदिरे करे गहगाट ॥ निज सखीयोशुं परवरी, निजपतिनी जोइ वाट ॥ २०॥ हवे सुण जो नवियण तुमें, जे थई आगल वात ॥ हरिबल चाल्यो लंकायें, ते सुणजो अवदात ॥ बीजा उल्लासनी पजणी, पूरण दशमी ढाल ॥ शास्त्रतणे अनुसारें, लब्धि कही उजमाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृप आणा लेइने,हरिबल चाल्यो लंक ॥ विषम पंथ जे आकरो, ते कापे निःशंक ॥ १ ॥ गिरिशिखर महोटां घणां, विकटां घाटां जेह ॥ मानवनो जिहां पग नही, ते पण उतरे तेह ॥ २ ॥ झंगी झाडी वनतणी, चिहुं दिशि वंशनि जाल ॥ जटाजूट जे

वनलता, तिणमें वहे उजमाल ॥ ३ ॥ वाघ सिंहने चीतरा, अजगर महोटा व्याल ॥ अष्टापद वलि गज घटा, देता मृग अरि फाल ॥ ४ ॥ भूत प्रेतने व्यंतरा, जोटिंग मोहोटा खवीस ॥ हरिबलने बलवा भणी, पाडे महोटी चीस ॥ ५ ॥ पण ते मन बीये नही, बा ती वज्रसमान ॥ लोह पंजर सम चालतो, धरतो अरिहंत ध्यान ॥ ६ ॥ सूपडकन्ना हयमुहा, वलि इकटंगा जेह ॥ काला हबसी काबरा, हरिबल निर खे तेह ॥ ७ ॥ अजबगुल मेहरी घणी, निरखे बा मो बाम ॥ रूडपी ले नर पंखमें, सेवे तेहशुं काम ॥ ८ ॥ एहवि अटवि उजाडमां, हरिबल चाल्यो जाय ॥ ध्यान धरे नवपद तणुं, जेहथी विघन पुलाय ॥ ए ॥ देश नगर जोतो थको, पुर पाटण केइ गाम ॥ धरती केइ उल्लंघतो, आव्यो दरिया बाम ॥ १० ॥ जाणे आषाढो गाजतो, गाजतो भाद्रव मास ॥ तिम गर्जा रव जलनिधि, करतां दीसे तास ॥ ११ ॥ कालाभंबर उछली, जलना लोढ चलंत ॥ जाणे हिमाला टूक ज्युं, जल कल्लोल करंत ॥ १२ ॥ जोजन एंसी सहस्सनो, कोरण विशेषें जेण ॥ लवणनिधीनी वेल ते, सगरें आणी तेण ॥ १३ ॥ जल जेहवा मह्वा घणा, दीसे नव न

वरूप ॥ वाघ सिंह जलमाणसां, जलमें देखे सरूप ॥ १४ ॥ एहवो लवणसमुद्र ते, देखी कंपे काय ॥ हरिबल पगलुं जल जणी, देतां लग पच थाय॥ १५॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल मनमें चिंतवे रे,शो हवे करुं उपाय॥ सहस एंसी जोयण जलनिधि रे,पृथुल उंमो देखाय ॥ १ ॥ प्रजुजी ते केम मुऊथी तराय ॥ पगवट पण न जवाय॥प्र०॥ जुज बलें पण न तराय॥प्र०॥तो लंका केम हलाय रे॥प्र०॥ते०॥ एआंकणी ॥ जलना लोढ वहेघणा रे,श्यामला जल ऊजास ॥ज्वाला वडवानल तणी रे, निकसे प्रबल आकाश ॥२॥प्र०॥ न वहे पंखी मानवी रे,न वहे तारु ऊहाज ॥ मारग को दीसे नहिं रे, नवि दीसे किहां पाज रे ॥३ ॥ प्र० ॥ शीतल पवन वहे घणो रे, जाणे शीतल हेम॥ थरहर कंपे देहडी रे,खडहडे अस्थि सेम रे॥४॥प्र० ॥ एहवो खारो सागरु रे, उछले जलें असमान ॥ ते देखी धीवर घणुं रे, मरप्यो गइ तस शान रे॥५॥प्र०॥ जो फरी पाछो घर जणी रे,जाउं तो न रहे मान ॥ बीडुं ग्रही हुं आवियो रे, कीधुं अजाण्युं काम रे ॥ ६ ॥प्र०॥ नागें ग्रही ज्युं छछुंदरी रे, मूके

तो अंध थाय॥नकुणथी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय रे॥७॥प्र०॥ वली चरकलीयें ग्रह्युं रे,मुखमां चणियुं बोर॥ आघुं पाछुं न ऊतरे रे, करे पस्तावो जोर॥ ८॥प्र०॥ इम धीवर फूरे घणुं रे, सागर कांठे न्हा य॥ धीवरें जाण्युं आवी बन्यो रे, वाघ न दीनो न्याय रे॥ ए॥ प्र०॥ किहां गयो माहरो इण समे रे, प्राणवल्लभ मुऊ इष्ट॥ समस्यां सार करे घणुं रे, टाले सघलां रिष्ट रे॥१०॥ प्र०॥ इम चिंतवतां तत खिणें रे, आव्यो सागर देव॥ कहे सुर शी तुं चिंता करे रे, मूकुं लंका तुऊ हेव रे॥ ११॥ प्र०॥ शुं वछ तुऊने इहां कणे रे, आववुं थयुं हो केम॥ सुर कहे कहो मुऊ मांफिने रे, जाण्युं जाये जेम रे॥१२॥प्र०॥ तव हरिबल कहे देवने रे, सांजलो तातजी मुज॥ नृप हेतें बीडुं ठवी रे, आव्यो कहुं हुं तुज रे॥१३॥ प्र०॥ ते सांजली जलपति थयो रे, देव स्वरूपी अश्व॥ हरिबल ते अश्वें चढी रे,जलधि तरी लह्यो विश्व रे॥१४॥ प्रजुजी जलें आव्या तुमें नाथ॥ सुर तरुनी ग्रही बाथ॥प्र०॥ मुऊ शरण थयो तुम हाथ॥प्र०॥तव हुं थयो महोटो सनाथ रे॥प्र०॥१५॥॥ए आंकणी॥लं का बागमें मूकीने रे,देव थयो परगट्ट॥ काम पडे तुं सं

जारजे रे, मुजने करी गहगट्ट रे॥ १६ ॥ ॥प्र०॥ एम कहीने सुर गयो रे, पहोतो ते निज गाम ॥ हरिबल लंका देखीने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥१७॥ प्र० ॥ तेजें झलामल झलकती रे, हेममय लंका पीठ॥ जेहवी जनमुखें सांजली रे, तेहवी नजरें दीठ रे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ नंदन वन सम वाटिका रे, देखी थयो सुप्रसन्न ॥ परिमल पसस्यो चिहुं दिशें रे, कुसुम तणां जिहां वन्न रे ॥ १९ ॥प्र०॥ चंपा गुलाब ने केतकी रे, मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाडी फुली रे, हरिबल निरखे तेह रे ॥ २०॥प्र० ॥ अंब कदंब ने सुरतरु रे, सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी उषधी रे, पसरी चिहुं दिशें रेल रे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ नागरवल्ली डाखना रे, मांमवा अति सोहंत ॥ केलि जंबेरी फालसां रे, दाडिम पक्क मोहंत रे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ जातीफल जावंतरी रे, तज ने तमाल ते पत्र॥ एके तरुअरें नीपजे रे, चातुरजातक तत्र रे ॥ २३ ॥ प्र० ॥ देव कुसुम ने एलची रे, सुंदर केसर गोड ॥ निमजां पिस्तां चारोली रे, बेय बदाम अखोड रे ॥ २४ ॥ प्र० ॥ पूगी श्रीफल सेलडी रे, सीताफल सह तूत ॥ खारक रायण करमदां रे, लिंबू जांबू जूत रे ॥ २५ ॥ प्र०

इम अनेक ते जातिनी रे, वणसइ जार अढार ॥
जोगी जनने कारणे रे, प्रगट थई संसार रे॥ २६ ॥
प्र०॥ वापी कूप सरोवरु रें, जरियां अमृततोय ॥ हंस
चकोर ने सारसा रे, जलक्रीडा करे सोय रे ॥ २७॥
प्र०॥ इम हरिबल जोतो वहे रे, लंकावन सुरसाल ॥ ल
ब्धि बीजा उल्लासनी रे,पजणी इग्यारमी ढाल रे॥२८॥

॥ दोहा ॥

॥ लंकापरिसर वाटिका, सोहे अति रमणीक ॥
जाणे नंदनवन तणी, जगिनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥
कनक रयणमें फलकता, महोटा मेहेल अत्यंत ॥
खंभोखली जलशुं जरी, कारिंफ तिम उछलंत ॥२॥
नर नारी विद्याधरी, किन्नर अप्सर बाल ॥ सरखे स्वरें
टोलें मली,गावे गीत रसाल ॥ ३॥ मधुरी ध्वनि आ
राममें,थइ रही गमो गम ॥ हरिबल ते श्रवणें सुणी,
मगन थयो अजिराम ॥४॥ मानव जव जलें में लह्यो,
जलें लह्यो गुरु उपदेश ॥ सागरदेव पसायथी, लंका
दीठि विशेष ॥५॥ वन उपवन जोतो थको, हरिबल
हर्ष कलोल ॥ आव्यो अतिही चूंपशुं, लंकागढनी
पोल ॥ ६ ॥ साव सोवनमय डुर्ग ते, उंपे मणिमय
शीर्ष॥ जाणे जूरमणी करे, उंपे कंकण नीर्ष ॥ ७ ॥

एहवो वप्र विराजतो, नगरी राखण चंग ॥ जाणे जंबु द्वीपनो, जगती कोट उत्तंग ॥ ८ ॥ इणिपरें डिंगनो डुंगी ते, निरखी हरखित होय ॥ पेसारो पुरमें करे, शुज लगनें करि जोय ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ उढणीनी देशी ॥ सासु कागा हे गहुं पीसाय, आपें न जाशो हेमाल ते सोय नारी जणे ॥ए देशी ॥ पेगे डिंगतणी वर पोले, निरखे रे हाट मंदिर बहु ॥ सहु कोय सुणो ॥ जाणे दक्खिण उत्तर उल, जुवनपति मंदिर सहु ॥१॥ स० ॥ ए तो साव सोवनमय थंज, कनक रयणमें मालीयां ॥ स० ॥ तेजें जाकजमाल, अचंज दीसे मोतिनां जालियां ॥ २ ॥ स० ॥ जाणे नजथी दिनकर सार, आवी घर घर प्रगटीया ॥स० ॥ नवि दीसे तिमिर लगार, उद्योत सघले उलटीया ॥३॥ स० ॥ एतो कोरणी धोरणी जोर, जाणे देवपुरी वसी ॥स०॥ सोहे राय बिजीषण गोर, राज करे मन उल्लसी ॥४॥स०॥ वसे वसती वरण अढार, राक्षस रूपें मानवी ॥स०॥ एतो न गणे लक्ख अलक्ख, एवी लंका जाणवी ॥ ५ ॥ स० ॥ घोडा गज रथ ने सुख पाल, राज्य मारगमें वहे घणा ॥स०॥ देखे महोटा

नव नवा ख्याल, हास्य कुतूहल नही मणा ॥ ६ ॥ स०॥ जोतो इणि परें नगरी मजार, हरिबल आगल संचरे ॥ स० ॥ दीठुं तव एक तेज नंमार, सुंदर मंदिर नलि परें ॥ ७ ॥ स० ॥ सोहे सुंदर पोल प्रकार, रमणिक दृष्टें देखे सही ॥ स० ॥ पण देखे ते शून्य आगार, माणस को दीसे नही ॥८॥स०॥ ए तो तव तिहां अचरिज देखि, पेठो हे मंदिर पोलमें ॥स०॥ नखां निरखे रयण विशेष, ठरा ठरी ठलमें ॥ए॥स०॥ इम जोतो सातमी नूमि, हरिबल चढीयो चूपशुं ॥स० ॥ जाणे स्वर्गविमाननी नूमि, रचना ते दीठी रूपशुं ॥ १०॥ ॥ स० ॥ तिहां निरखे अचरिज एक, हिंमोला खाट सोहामणी ॥ स० ॥ तेह उपर सूती विवेक, सुंदर स्त्री रलियामणी ॥ ११ ॥ स० ॥ जाणे देही कुंकुम वर्ण, अप्सर सम करी उपती ॥ स० ॥ पण दीसे ते मृतक समान, चेतन रहित ते कोनती ॥१२॥ स० ॥ चिंते हरिबल निरखि रे तास, विस्मय पाम्यो मन्नमें ॥ स० ॥ एसो दीसे देव अन्यास, सास नही ए तन्नमें ॥ १३ ॥ स० ॥ इम चिंतवी धीवर धिंग, अरहुं परहुं विलोकतां ॥ स० ॥ दीठी तुंबडी जल नरी चंग, खाट तले लही ढोकतां ॥ १४ ॥ स० ॥ तिणें तुंबीनुं

जल लेय, छांटघुं स्त्रीतन ऊपरें ॥ स० ॥ करी ततखि ए जक्क धरेय, हिंमोला खाटथी सूपरें ॥ १५ ॥ स० ॥ मंत्री चिंतवे चित्त मऊार, ए शुं कौतुक नीपनुं ॥ स० ॥ ए तो थइ नवजोबन नारि, मनोहर ज्युं तेज दीपनुं ॥ १६ ॥ स० ॥ दीसे रंजा उर्वशी रूप, कामिनी काम जगावती ॥ स० ॥ मोहे सुर नर किन्नर नूप, कामी जन मन नावती ॥ १७ ॥ स० ॥ इम अचिरज लहिने तास, पूछे हरिबल उल्लसी ॥ स० ॥ किम रहे तुं शून्य आवास, एकली शबपणें वसी ॥ ॥ १८ ॥ स० ॥ किहां गया तुऊ सयण संबंध, मात पितादिक ताहरां ॥ स० ॥ तव कहे अबला प्रबंध, सांजलो पंथी माहरा ॥ १९ ॥ स० ॥ जलें आव्या तुम इहां स्वामि, उपगारी दीसो जला ॥ सोय नारी जणे ॥ बेसो आसन्न शुज गाम, कहुं तुमने सघली कला ॥ २० ॥ सो० ॥ इहां राय बिजीषण सार, राज करे लंका धणी ॥ सो० ॥ वाडी छे तस वृद्ध श्रीकार, वल्लन्न ते नृप ने घणी ॥ २१ ॥ सो० ॥ तेह वाडीनो ए रखवाल, जीम नामें आरामी अछे ॥ सो० ॥ हुं छुं तेहनी पुत्री जी बाल, कुसुमसिरी मुऊ नाम छे ॥ २२ ॥ सो० ॥ जब हुं थई जोबनवेश, तब मुऊ जनक चिंता करे ॥ सो० ॥

कुण वरशे ए पुण्य विशेष, अहोनिशि इम चिंता धरे ॥ २३ ॥ सो० ॥ तव तिहां एक जोषी जाण, फिरतो ते आव्यो मंदिरें ॥ सो० ॥ पूछे तेहने पिता गुण खाण, तेडी जई घर अंदरें ॥ २४ ॥ सो० ॥ जुउ जोषी ज्योतिष जोय, कहो मुजने तुमें दुःख खसे ॥ सो० ॥ जिम मुज मन वंछित होय, मुज पुत्री वर कुण हशे ॥ २५ ॥ सो० ॥ तव जोषी कहे वनपाल, सांजलो जोषथी हुं कहुं ॥ सो० ॥ तुम पुत्रीनो तो मही पाल, पति होशे गुणवंत लहुं ॥ २६ ॥ सो० ॥ तव हरख्यो पिता मनमांहे, सांजली जोषी वयणडां ॥ सो० ॥ दीधुं जोषीने दान उछाह, मूठ जरी शुन रयणडां ॥ २७ ॥ सो० ॥ इम कही गयो जोषी थान, वंछित दान ते लेईने ॥ सो० ॥ चिंते जनक ए पुत्री निधान, शुं करुं परने देईने ॥ २८ ॥ सो० ॥ राखुं मुज घर पुत्री रतन्न, परणी हुं थाउं नरपती ॥ सो० ॥ लोजी लंपट थइ एक मन्न, वात करी इण डुरमती ॥ २९ ॥ सो० ॥ मुज जनकीयें जाणी वात, फिट फिट कह्यो मुज तातने ॥ सो० ॥ लागी वज्र समान नो घात, जाल चढी कमजातने ॥ ३० ॥ सो० ॥ पंथी सांजलो मोहनी जाल, महोटी ए निपनी कार

मी ॥ सो० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, लब्धियें भांखी बारमी ॥ ३१ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि कहुं पंथी सांजलो, महारा तातनां चिन्ह॥ न्याय करे जइ नृपकने, माली भीम अदीन ॥ १ ॥ कहो स्वामी जे करषणी, मसकत करी निपाय ॥ ते कण फलने करषणी, जोगवे के न जोगाय ॥ २ ॥ तव नरपति कहे मालिने, जे करे मसकत अंग ॥ ते कण फल सुखें वावरे, न्यायी थइ ते अनंग ॥३॥ ए हवो न्याय करावियो, मालियें परषद मांह ॥ पंचनी साखें ए न्यायनुं, लिखित कसुं ते उछाह ॥ ४ ॥ तेह लिखत लेई करी,आव्यो जनक ते गेह ॥ वात लही मुऊ जनकियें, मौन धरी रहि तेह ॥ ५ ॥ तव मुऊ जनक संबंधियें, जाण्यो महोटो अन्याय ॥ गृह मूकी तव निकसियां, वसियां बीजे जाय ॥ ६ ॥ तिण दिनथी गृह शून्यमें, मुऊने राखे तात ॥ मृतकसमान करी वहे, मंत्रबलें ते प्रजात ॥ ७ ॥ सारो दिन वाडियें रहे, करे ते वननुं काज ॥ नृपने फल फुल देइने, आवे मुऊकनें सांऊ ॥ ८ ॥ तुंबी जल लेई करी,

ढांटे मुज तनु जाम ॥ चेतन लहि जागुं तदा, करे मुज जनक ए काम ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मुजरो ल्योने हे जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलो पंथी माह्रा तातनी, कहुं करणी वली एक॥ पूर्वे पण एक ढुतुं देइनें, कीधो न्याय विवेक ॥ १ ॥ श्रेयांसनाथ इग्यारमा, तेह्ने जे वारे कहाय ॥ परजापति नामें राजवी, मिणवा राणी सुहाय ॥ २ ॥ सां० ॥ तेह्नी कूखें पुत्री उपनी, पदमिनी रूप अत्यंत ॥ अनुक्रमें थइ नव यौवना, कामिनी काम लहंत ॥ ३ ॥ सां० ॥ ते परजापति पुत्रीनुं, दीठुं रूप सरूप ॥ जाण्युं ए फल बीजे जायशे, नोगवशे अन्य नृप ॥ ४ ॥ सां० ॥ तो ए पुत्री माह्रे राखवी, नहि देउं बीजे ए क्यांह ॥ पंचमें न्याय करावीने, परण्यो पुत्री उछाह ॥ ५ ॥ सां० ॥ पंचनी साखें ए सही करुं, मेली परखदा सार ॥ जिम मुज लोकमें नवि हुवे, निंदा विकथा लगार ॥ ६ ॥ सां० ॥ इम जाणी नृप तिणि वेलमां, मेलवी पंच समक्ष ॥ पूछे परजापति परजने, करो न्याय विचक्ष ॥ ७ ॥ सां० ॥ जे बीज वावे वाडी खेतमें, ते ऋतुसमे फल देय ॥

ते फलने मसकतीनो धणी, जोग लीये के नवि लेय ॥ ८ ॥ सां० ॥ तव ते बोली परजा एकमतें, सांजलो नाथजी एम ॥ जे फल वावे ते फल बीजने, जोग ते नवि लीए केम? ॥ ए ॥ सां० ॥ पंच मलीने जे करी थापना, ते उबापी न जाय ॥ स्थिति डे अनादि ए कालनी, एहवो ते न्याय ठराय ॥ १० ॥ सां० ॥ तव परजापति हरखिने, लीधुं पुत्री लगन्न ॥ परण्यो तें निज पुत्रीने, थइ रह्यो तेशुं मगन्न ॥ ११ ॥ सां० ॥ तेहनी कूखें जी ऊपनो, हरि ते नामें त्रिपृष्ठ ॥ श्रीजिन वीरनो जीव ते, जाणे सयल ते शिष्ट ॥ १२ ॥ सां० ॥ त्रेशठ शिलाका चरित्रमें, डे तेहनो अधिकार ॥ ते न्यायधारी लंकापति, कने जइ चढ्यो दरबार ॥ १३ ॥ सां० ॥ ए करणी माहारा तातनी, में कही पंथिजी तुम्म ॥ लालची लोजी जे लंपटी, न वले ते कदि जुम्म ॥ १४ ॥ सां० ॥ माहरो तात ते लालची, अहनिश राखे निराश ॥ डुःखदायी डुःख देयतां, तेहने थया खट मास ॥ १५ ॥ सां० ॥ कहुं ए पंथी हुं हवे केहने, नाखुं मोहोटो निशास ॥ आजथी बीजे मासडे, वरशे मुजने उल्लास ॥ १६ ॥ सां० ॥ माहरा मननी पंथी में कही, सघली मांमीने गुज ॥ जलें तुमें आव्याजी मंदिरें, सु

ख शाता थइ मुज ॥ १७॥ सांजलो पंथी जीवन मा हरा ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमसिरी कहे सांजलो,पंथी क रुणा कृपाल ॥ जाग्य बले में तुम्ह उंलख्या,साहसिक महोटा मयाल ॥१८ ॥सां० ॥ सघली वातें पूरा जा णीने, में तुम्ह झाल्यो जी हाथ ॥ दुःखनिधि पार उ तारवा, जलें आव्या तुम्हें नाथ ॥ १ए ॥ सां० ॥ मन ललचाणुं तुम देखतां, जिम मन केतकी जृंग ॥ बे कर जोडीने वीनवुं, मुजने परणो सुरंग ॥२०॥सां० ॥ सूरज चंद साखें करी,परणी पूरो जी लाड ॥ नि ज नारीने सुख देयतां, शो ते चढावुं जी पाड ॥२१॥ सां० ॥ माहरे वखतें तुम्हें आणीया, ताणी पुण्य विशेष ॥ ते हुं टाली ते किम टलुं, लखीया पानें जे लेख ॥ २२ ॥ सां० ॥ इणि परें वयण वेधालुयें, कु मरीयें नाख्यां जे बाण ॥ वेधक बाणें ते वेधियो, हरि बल चतुर सुजाण ॥ २३ ॥ सां० ॥ परण्यो तेह कु सुमसिरी,हरिबल पाम्यो ते चेन ॥ जाणे परण्यो बीजी अप्सरा, वसंतसिरीनी ते बेन ॥ २४ ॥ सां० ॥ लंका धणीने तेडवा, मल्ली बीडुं ठवेय ॥ गडदो ते गुण आ वियो, लोक उखाणो कहेय ॥ २५ ॥ सां० ॥ माली जीमो जोतो रह्यो, परण्यो पुत्रीने कोय ॥ नुतर्यां जो

षी कोली जम्या,ए उखाणो ते होय ॥ २६ ॥ सां० ॥ सिंहनो नक्ष ते जंबुकें,कहो ते केम कराय॥कलिंगमहो टुं कीडी मुखें, कहो ते केम समाय ॥ २७ ॥सां० ॥ हरिबल केरा जे नाग्यमें, कुसमसिरी लखी जेह ॥ मा लीनें किम मोलवे, लख्या विधातायें लेह ॥ २८ ॥ सा० ॥ हरिबल पुण्यना जोगथी, पाम्यो मंगलमाल ॥ लब्धि बीजा उल्लासनी, पनणी तेरमी ढाल ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥हवे कुमरी कहे कंतने,निसुणो प्राणाधार ॥ आ पण वहियें बे जणां, जिहां छे निज आगार ॥ १ ॥ सांझें माली आवशे, आखें पडशे लूण ॥ आपण बे हुने दूवशे, तो ते राखशे कूण ॥ २ ॥ तव हरिबल क हे नारिनें, सांनल प्यारी मुज ॥ लंकापतिने तेडवा, आव्यो हुं कहुं तुज ॥ ३ ॥ विशाला पुरनो धणी,मद नवेग ते नाम ॥ अंगजने परणाववा,मेले नृप अनि राम ॥४॥ वैशाखे सितपंचमी, लीधां लगनज जेह ॥ सघला देशना राजवी, तिण दिन मिलशे तेह ॥ ५ ॥ तव वीशालानो धणी,बोल्यो सन्ना समक्ष ॥ को छे लं का रायने, तेडी आवे विचक्ष ॥ ६ ॥ तव तिहां को इ न बोलियो, बीडुं न ले कोय ॥ तव तुज नाग्यब

लें करी, बीडुं में ग्रह्युं सोय ॥ ७ ॥ ते नृप आणा लेइने, हुं आव्यो बुं आंहि ॥ लंकापति तेडया विना, किम जवराए त्यांहि ॥ ८ ॥ कुसुमसिरी वलतुं कहे, सांजलो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वशें, उंघमें केइ युग जात ॥ ए ॥ ते सांधो किम बाऊशो, आप णे जावुं गेह ॥ लंकापति कने जायवुं, कविण कह्युं तुम्हें एह ॥ १० ॥ जो प्रीतम मुऊने कहो, जावुं बी नीषण पास ॥ देवनमी एक खड्ग बे, लावुं ते जइ तास॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ तव हरिबल कहे ना रीने रे, जाउ उतावला त्यांहि ॥ मोमन प्यारी ॥ ला वजो तुमें संजारीने रे, खड्ग जे चंइहास आंहि ॥ ॥मो०॥१॥ लावो लावो रे सुगुण जई लावो,तुमें ढील म करशो क्यांहि ॥मो०॥ए आंकणी॥ वैशाख शुदि दि न पंचमी रे,लगन उपर जवराय ॥मो०॥ तो गणे मु ऊने साचमें रे, मदनवेग ते राय ॥ २ ॥ मो० ॥ ते सहिनाणी खड्गनी रे, लंकाधणीनी जेह ॥ मो० ॥ लाज वधे निज वर्गनी रे, ते विधें लावजो तेह ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ पण शिर बदलामी चढे रे, जगमें हांसुं होय ॥ मो० ॥ लेहणेनी देणे पडे रे, ते मत कर

जो कोय ॥ ४ ॥ मो० ॥ करतां होय ते कीजियें रे, अवर न कीजें कग्ग ॥ मो० ॥ मुंफी रहे सेवालमां रे, ऊंचा रह्या दो पग्ग ॥ ५ ॥ मो०॥ ते मत करजो कामिनी रे, सांनलि ते दृष्टांत ॥ मो० ॥ इम शीखाम ण स्वामीनी रे, धारी ते चितमें खांत ॥ ६ ॥ मो०॥ हवे कुमरी गई तिहां कणे रे, राय बिनीषण ज्यांहि ॥ मो० ॥ नर निद्रामें सूतो लह्यो रे, मदिरा ठाकनी मांहि ॥ ७ ॥ मो० ॥ कल विकल करीने ग्रह्युं रे; खड्ग जे बे चंद्रहास ॥ मो० ॥ जात वलत कोणे नवि लह्युं रे, आवी प्रीतम पास ॥ ८ ॥ मो० ॥ ल्यो स्वामी आ खड्गनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥ मो० ॥ देवनमी खड्ग स्वर्गनी रे, उलखे मह्वी विशे ह ॥ ए ॥ मो० ॥ हवे सामग्री दंपती रे, मेलवे जावा गेह ॥ मो० ॥ सार रयण ते सोंपती रे, पियुने जे कोश नरेय ॥ १० ॥ मो० ॥ तुंबी जलसाथें ग्रही रे, दंपती चाल्यां दोय ॥ मो० ॥ आव्यां जे लंका वही रे, लहे मनोवंबित सोय ॥ ११ ॥ मो० ॥ समस्यो सागर देवता रे, मह्वीयें थई उजमाल ॥ मो० ॥ आ व्यो सुर पण देवता रे, करुणावंत कृपाल ॥ १२ ॥ मो० ॥ किहां मूकुं हवे तुऊने रे, सुर बोल्यो ततका

ल ॥ मो० ॥ मूको स्वामी मुझने रे, निज नगरी वि
शाल ॥ १३ ॥ मो० ॥ अश्व चढावी दो जणा रे, मू
क्या नगर नजीक ॥ मो० ॥ चिंतव्युं होशे तुम तणुं
रे, सुर कहे जाणजो ठीक ॥ १४ ॥ मो० ॥ एम क
हीने ते गयो रे, नाखी जे निज थान ॥ मो० ॥ मन
वंछित सफलुं थयुं रे, दंपतिपुण्य निधान ॥ १५ ॥
मो० ॥ नगरीनी जे वाटिका रे, तेह्में उतारो की
ध ॥ मो० ॥ दंपति करे गह्गट्टिका रे, जाणे मनो
रथ सिद्ध ॥ १६ ॥ मो० ॥ हवे माली संध्या समे रे,
आव्यो निज घर हेत ॥ मो० ॥ शय्या खाली दृष्टि
में रे, आवी ते नजरें रेत ॥ १७ ॥ किहां गई प्यारी,
मो मन प्यारी॥ए आंकणी॥हल फलतो जोतो फरे रे,
सघले मंदिर मञ्ज ॥ कि० ॥ पुत्री न दीठी शुं करे रे,
वलि थयो जोवा सज्ज ॥ १८ ॥ कि० ॥ वलि नवि
दीठी तुंबडी रे, जे भरी अमृत तोय ॥ कि० ॥ ले ग
ई साथें तुंबडी रे, कोइक पुरुषने जोय ॥ १ए॥कि०॥
पगलुं जोवा नीकल्यो रे, पग पग जोतो वाट ॥कि०॥
परद्वीपनो पग अटकल्यो रे, तव थयो तेहने उच्चा
ट ॥ २० ॥ कि० ॥ पग जोयो जलधि तणी रे, पुत्री
गइ करि नाथ ॥ कि० ॥ आरामिक ते नीमना रे,

नूमि पडथा दोय हाथ ॥ २१ ॥ कि० ॥ जोतो रोतो ते वल्यो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विरहें ते चव्यो रे, शुं हवे करुं ते पेर ॥ २२ ॥ कि० ॥ पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ रंनानी रंना गई रे, टपसुं पण गइ लेत ॥ २३ ॥ कि० ॥ रांक तणे घरे सुरमणी रे, रहे कहो केती वार ॥कि०॥ पूरव नवनी वेरणी रे, दे गइ महोटो खार ॥ २४ ॥ कि० ॥ पुत्री परणें जाणतो रे, पामशुं महोटुं राज ॥ कि० ॥ होंश घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री राज ॥ २५ ॥ कि० ॥ तेहमें एके न संपजी रे, फोक फजेती कीध ॥ कि० ॥ दैवना मनमां शी नजी रे, एको वात न सीध ॥ २६ ॥ कि० ॥ पण पुत्री पर घरें जई रे, वसति जाणे संसार ॥ कि० ॥ एक एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर बार ॥ कि० ॥ २७ ॥ ते में खोटी आदरी रे, लोनें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो किम आवे पाधरी रे, लोप्यो म्हें व्यवहार ॥ २८ ॥ मो० ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति विचार ॥मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे मुज सार ॥ २९ ॥ मो० ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो रे, छाना करीने लोच ॥मो०॥ जे थावुं हतुं ते थयुं रे,

शो हवे करवो शोच ॥ ३० ॥ मो० ॥ मालीयें एम मन वालीयुं रे, नावीनो ग्रह्यो पक्ष ॥ मो० ॥ आतम कुल संनालीयुं रे, काढी नाख्युं शक्ष ॥ ३१ ॥ मो० ॥ सगां संबंधि नारीने रे, रीश उतारी तास ॥ मो० ॥ मालियें वात विसारीने रे, तेडी आव्यो आवास ॥ ३२ ॥ मो० ॥ सघला वियोग ते नांगियां रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुकृत जागीयां रे, नांगीया डुःख जंजाल ॥ ३३ ॥ मो० ॥ हवे हरिबलनी जे थइ रे, सांजलो पुण्यविशाल ॥ मो० ॥ बीजां उल्लासनी ए कही रे, लब्धें चौदमी ढाल ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल रजनीसमे, वाडियें कीधुं गाम ॥ कुसुमसिरी मूकी तिहां, पहोतो ते निजधाम ॥ १ ॥ वसंतसिरी पेहेली प्रिया, जोउं तेहनुं चरित्र ॥ मुऊ ऊपर पण केहवुं, राखे मनह पवित्र ॥ २ ॥ इम जाणी निज मंदिरें, आव्यो रजनी मध्य ॥ तस्करनी परें सांजले, देई कान ते शुध्द ॥ ३ ॥ तिण अवसर जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाव्यो मासंतरें, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी सूवटो, पाल्यो छे घरमांहि ॥ तस आगल कहे विरह

णी, वसंतसिरी जे ज्ञांहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुज पीयु डो, गयो लंका शुन्न काज ॥ अवधि कही एक मास नी, ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरलख पिया कह चले, ढांक गयंदलखमांहि ॥ जललख रयण पोका रियो, मो लख लावत नांहि ॥ हजीअ लगण आव्यो नही, नाव्यो को संदेश ॥ नाह निठुर मेहेली गयो, मुजने बाले वेश ॥ ७ ॥ तो दीहा किम निर्गमुं, किम करि राखुं शील ॥ मदनवेग ते लूधणी, केडें पडियो कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो माहरुं, में पण राख्युं एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चूकशे ते ॥ शुकवाक्यं ॥ दधिसुता सुत तासरिपु, ता त्रिय वा हनाहार ॥ सो सुंदर तुजमें नहिं, कीधो कौन वि चार ॥ ए ॥ ते माटे तुं सूडला, जा मुज प्रीतम पा स ॥ संदेशो मुज घरतणो, जइने कहेजे तास ॥ १०॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ विंजाजीनी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमीरस पा उ तुजनें रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम डाख ॥ सूडा सयण वारु ॥ ए आंकणी ॥ सुडा० ॥ चांच जरावुं चूरमे रे ॥ सु० ॥ देउं वली आंबा साख ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुज दाखवी रे ॥ सु० ॥ मेल

व तुं मुझ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइश हुं गुण ताह्
रा रे ॥ सु० ॥ जीवित सुधी सदीव ॥ सु० ॥ २ ॥
॥ सु० ॥ दूधें नरीश तुझ पेटने रे ॥ सु० ॥ देइश कं
हीश ते लांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सही
रे ॥ सु० ॥ मानजे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु०॥
हुं कर जोडी वीनवुं रे ॥ सु० ॥ सांजल माह्री
वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंखीमें कही रे ॥ सु०॥
उत्तमः ताह्री जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं छे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥
॥ सु० ॥ रूपें तुं रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ता
ह्री वाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ लीली ताह्री पांख
डी रे ॥ सु० ॥ चांच राती तुझ चंग ॥ सु० ॥ सु० ॥
रूडी ताह्री आंखडी रे ॥ सु० ॥ राती केशू रंग ॥
॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं चांचडी रे ॥ सु०॥
दूधें परवालुं पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार ठवुं गले मो
तीनो रे ॥ सु० ॥ लाख टकानो अटंक ॥ सु०॥ ७ ॥
॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥ दया
धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुझ नाहने
रे ॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उछांहे ॥ सु०॥ ८ ॥ सु० ॥
मानिश तुझ उपगारडो रे ॥ सु० ॥ थाइश नही गुण

चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥ कीधो गुण जाणे नही रे ॥
॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥
ऊंडीने तुं पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करजे ढील ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुझ संदेशडो रे ॥ सु० ॥
जिहां होये नाह रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अब
ला तुझ घर एकली रे ॥ सु० ॥ छे विरहिणीने वेश
॥ सु० ॥ सु० ॥ झुरि झूरि झंखर थइ रे ॥ सु० ॥ थइ
नारी नरवेश ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ प्रीतमनइ विर
हाथकी रें ॥ सु० ॥ मुझ न दीसे कोय ॥ सु० ॥ सु०॥
पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥ दिन दिन पीलां
होय ॥ सु० ॥ १२ ॥सु० ॥ पियु विरहें करि नारियें रे
॥ सु० ॥ तजियां तेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु० ॥ खाणां
पीणां पहेरणां रे ॥ सु० ॥ तजीयां सखीशुं टकोल
॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ पियु विण शणगार पहेरतां
रे ॥ सु० ॥ लागे अंगारा समान ॥ सु० ॥ सु० ॥ चं
दन चूवा अंगीठियो रे ॥ सु० ॥ नागिणी नागर पान
॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पियु विरहें घडी मासडो रे ॥
॥ सु०॥ मास ते वरसज होय ॥ सु० ॥ सु० ॥ खिण
घरमें खिण आंगणें रे ॥ सु० ॥ पियु विण ए गति
जोय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयणें नावे निंदडी रे

॥ सु०॥ जावे न अन्न ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह
विना घेली जगुं रे ॥ सु० ॥ कहीयें केतु सयाण ॥
॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ पूरव पापना योगथी रे ॥
॥ सु० ॥ पामी स्त्री जमवार ॥ सु० ॥ सु० ॥ जरजो
बन पियु घर नही रे ॥ सु० ॥ तस एलें गयो अव
तार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए मंदिर ए मालियां रे
॥ सु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ सु० ॥ सु० ॥
रस :कस खारां जेरशां रे ॥ सु० ॥ लागे ते चित्त
मजार ॥ सु० ॥ १८ ॥सु०॥ यौवन करवत धार ज्युं
रे ॥ सु० ॥ विरहिणी नारीने रोष ॥ सु० ॥ सु० ॥
नाहविहूणी कामिनी रे ॥ सु० ॥ पग पग पामे ते
दोष ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ कालजे कउं मेली गयो
रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही ते धुखाय ॥ सु० ॥ सु० ॥
नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ सु० ॥ उलवे पियु घर आ
य ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ते दिन क्यारें देखशुं रे ॥
॥ सु० ॥ करस्यां मननी रे वात ॥ सु०॥ सु०॥ प्राण
जीवन मुज देखीने रे ॥ सु०॥ कीजें शीतल गात्र ॥
॥ सु०॥ २१ ॥ सु०॥ दिनकर पहेलां उगते रे ॥ सु०॥
जो प्रीतम घरे आय ॥ सु० ॥ सु० ॥ तो माणसनी
उलमें रे ॥ सु० ॥ जीववुं ते जुगताय ॥सु० ॥ २२ ॥

॥सु०॥ जो कदि नाव्यो कगते रे॥ सु० ॥ तो जइ गि
रि ऊंपाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे ॥
॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ २३ ॥
॥ सु० ॥ कंत विना शुं जीववुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना
किशुं हेज ॥ सु० ॥ सु० ॥ कंत विना शुं माजवुं रे ॥
॥ सु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ सु० ॥ २४ ॥ सु० ॥
डुःख नर गती फाटती रे ॥सु० ॥ रही नथी शकती
गेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानजनी बाफमां रे ॥ सु०॥
दाऊी रही बुं तेह ॥ सु० ॥ २५ ॥ सु० ॥ विरहिणी
एम विलपे घणुं रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नयणें आंसू रेडती रे ॥ सु० ॥ जा
णे ज्युं जाड्व मेह ॥ सु० ॥ २६ ॥ सु० ॥ वसंतसि
री एम पाठवे रे ॥ सु० ॥ शुकने संदेशा जिवार ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं डुःख सांजली रे ॥ सु० ॥
बोल्यो मजी तिवार ॥ सु० ॥ २७ ॥ सु० ॥ खोलो
कमाड सहेलीयां रे ॥ सु० ॥ मूकी मननी राड ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ उलखियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥
हर्षे उघाड्यां कमाड ॥ सु० ॥ २८ ॥ सु० ॥ निजप
तिनुं मुख देखतां रे ॥ सु० ॥ कामिनि हर्ष नराय ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्ष विनोद जे उपनो रे ॥ सु० ॥ पु

स्तकें लखियो न जाय ॥ सु० ॥ २ए ॥ सु० ॥ वेधकने मन वल्लही रे ॥ सु० ॥ ए पंचदशमी ढाल ॥ सु० ॥ ॥ सु० ॥ लब्धें बीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही रुंग रंग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रीतम घरे आवतां,वाध्यो नवलो नेह ॥ मुह माग्या पासा ढल्या, अमियें वूग मेह ॥ १ ॥ नव पल्लव थइ अंगना, वसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम सरोवर फीलतां, वानो वधियो देह ॥ २ ॥ दंपति दो रंगें मल्यां, सुख नर कीधी वात ॥ दुःख दोहग दूरें गयां, प्रगटी ते सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पियु सांजलो, धुरथी कहुं ससनेह ॥ तुमें चाल्या लंकाजणी, पाठ ल वीती जेह ॥ ४ ॥ में तुमने पहेलां कही, ते सं जारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज हाथ ॥ ५ ॥ ते वांत आवी आगलें, जव तुमें चा ल्या लंक ॥ तव नृप मुफ केडें पडयो, जाणीने निःशं क ॥ ६ ॥ मेहेमंतो कवट थइ, गज शिर नाखे धूल ॥ तिम नृप दासी मोकली, करवा मुफ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ एतो नथडीरो मोती अजब बन्यो ॥ ए देशी ॥

एतो दासी मुझ कने मोकली, एतो लेइ नूखण साच ॥ साहेब मोरा हे॥एतो चूवा रे चंदन अरगजा,ए तो सीं से नरिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांनलो प्रीतम मा हरा ॥ एतो देवा मुझने लांच ॥सा०॥ ए आंकणी ॥ ॥ एतो मीठी साकर सूखडी, एतो मीठा मेवा डाख ॥ सा० ॥ एतो ठाब नरी वली मोकली, एतो मीठी आंबा साख ॥सा०॥२॥सां०॥ एतो जरतारी सालू नेला, एतो आण्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥ जाणे वाघा सुरनारी तणा, एतो सोहे तेजमें हीर ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ नेटणां, एतो मूक्यां चेठी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेटी मुझ आवीने, तुम नेट करे नूनाथ ॥सा०॥४॥सां०॥ एतो दासी कहे वली मुझने, तुमें सांनलो हरिबल नार ॥ सा० ॥ एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो थइ घणो प्यार ॥ सा०॥५॥सां०॥ एतो जे दिन तुम घरे आविया, ए तो नोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी. तुमें चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लगार ॥ सा० ॥ ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो तें दिनथी तुमने घणुं, मिलवा नी राखे हूंश ॥ सा० ॥ एतो एहमें जूठ न जाणजो, तुम सत्य करि कहुं सूंस ॥सा०॥ ७ ॥सां०॥ एतो

तव समझी हुं चित्तमां, नृप जाण्यो लंव कुजात ॥
सा०॥ एतो पियु मुझ रीश चढी घणी, उठीने में दीधी
लात ॥सा०॥८॥ सां०॥ एतो कुंदीपाक कस्यो घणो, करें
जीवित सुधी याद ॥ सा० ॥ एतो नाठी दासी नृप
कने, जइ कीधी ते फरियाद ॥ सा०॥ ए ॥ सां०॥ एतो
सांजली नृप विलखो थयो, एतो समझी रह्यो मनमां
हि ॥ सा० ॥ एतो वलि राणीने मोकली, लेइ नूख
ण सार उबाह ॥ सा०॥ १०॥सां०॥ एतो तव में अ
वसर उलख्यो, एतो राणीने राजी कीध ॥ सा० ॥
एतो कपटें मासनो वायदो, करी राणीनें शीख में
दीध ॥ सा० ॥ ११ ॥ सां० ॥ एतो आज ते मास
पूरो थयो, एटले तुमें आव्या घेर ॥ सा० ॥ एतो फ
लीया मनोरथ माहरा, मुझ वाधी पुण्यनी शेर ॥
सा० ॥ १२ ॥ सां० ॥ एतो पियु तुम मंदिर आव
ते, मुझ शीयल रह्युं अखंम ॥सा०॥ एतो नृपति रह्यो
हवे फूलतो, पडि तेहना मुखमें खंम ॥सा०॥१३॥
सां० ॥ एतो इत्यादिक पियु आगलें, कही रमणीयें
मांमी वात ॥ सा० ॥ एतो हरिबलें सघलुं सांजली,
गुण लीधो स्त्रीनो विख्यात ॥सा०॥ १४ ॥सां०॥ हवे
हरिबल कहे निज प्यारीने, तुझ बेहेन ठे वाडी मध्य

॥ सा० ॥ एतो लंकागढथी लावियो, एतो परणी म होटी सलज्ज ॥ सा० ॥ १५ ॥ सां० ॥ तव वसंतसि री हरखित थइ, जलें आवी माहारी बेहेन ॥ सा०॥ एतो वारे वासे पामशुं, गुण महोटो थयो सुख चेन ॥सा०॥१६॥सां०॥ हवे वसंतसिरी सहेलीशुं, गइ वा डीयें तेडवा तेह ॥सा०॥ कुसुमसिरी निज बेहेनने,घणे हेतें लावी गेह ॥सा०॥ १७ ॥ सां०॥ एतो वसंतसिरी ने पाय पडी, दीधो कुसुमसिरीयें लाग ॥ सा० ॥ नखने मांस ज्युं प्रीतडी, तिम बिहुने थयो एक राग ॥सा०॥ १८ ॥ सां० ॥ एतो दोगुंडुक सुरनी परें, दो नारीशुं नोगवे नोग ॥सा०॥ एतो हरिबल जीव दया थकी, सुख पाम्यो पुण्य संयोग ॥ सा०॥१९॥सां०॥ एतो इणिपरें जे दया पालशें,एतो सांजली गुरु उपदेश ॥सा०॥ एतो हरिबलनी परें पामशे,एतो नवोनव सुख विशेष ॥ सा० ॥ २० ॥ सां० ॥ एतो सोहम गुरु परंपरा, तस गादीयें हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो सा ह अकब्बर बूजवी, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥सा०॥ ॥ २१॥सां०॥ एतो तस शिष्य पंमित सोहता, धर्म विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनहर्ष जग जयो, एतो पंमित मांहे सराय ॥ सा० ॥ २२॥

॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, गणि कमल विजय तस भ्रात ॥सा०॥ एतो तस शिष्य ल क्ष्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रियामें सरात ॥ सा० ॥ २३॥सां० ॥ एतो तस शिष्य केशर अमर दो, एतो जगमां कर्म जिपंत ॥ सा० ॥ एतो सूरज चंद्र तणी परें, दोय बंधव तेज दीपंत ॥ सा० ॥ २४ ॥ सां०॥ एतो तस पद पंकज किंकरु, एतो लब्धिविजय उ जमाल ॥सा०॥ शोले ढालें पूरो कस्यो, एतो बीजो उ ल्लास रसाल ॥सा०॥२५॥सां०॥ इति श्रीजीवदयापरे हरिबलमच्छीरासे लंकागमनागमनसंबंधः संपूर्णः॥२॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामयमें प्रभु, मगन रहे निशिदीस ॥ केवलज्ञान प्रकाशथी, देखे विश्व जगीश ॥ १ ॥ ज्यो तिवधूना संभमें, निशिदिन रह्यो लपटाय ॥ तस पद पंकज हुं नमुं, वांमानंदनराय ॥ २ ॥ वचनामृत रस वरसती, कविमन महितल जेह ॥ नवपल्लव क विने सदा, करती माता तेह ॥३॥ चरण कमल नमुं तेहनां, बाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गातां ध्यातां सदा, मुज मन वंछित होय ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ तस सान्निध हरिबल तणो,

पन्नणुं त्रीजो उल्लास ॥ ५ ॥ उत्तमना गुण गावतां, होवे उत्तम आप ॥ खाइनी खेलें नावतां, जाये मल संताप ॥ ६ ॥ धर्मना रसिया जे हशे, ते सुणशे एक मन्न ॥ धर्म कथा गुण लेयने, मानशे ते दिन धन्न ॥७॥ न्नारे करमी बापडा, शुं जाणे ते धर्म ॥ अवगुण ले निंदा करे, साहमुं बांधे कर्म ॥८॥ ते माटे न्नावुक तुमें, अवगुण मत ल्यो कोय ॥ कीजें व्यवसाय धर्मनो, तेहमें खोट न होय ॥ ९ ॥ इम जाणी तुमें सांन्नलो, हरिबल केरुं चरित्र ॥ धर्मकथा सुणतां थकां, आतम होवे पवित्र ॥१०॥ हवे सुणजो नविका तमें, हरिबल केरी ख्यात ॥ लंका जइ आव्या पछी, शी शी निपजी वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह, ऊबूके वीजली ॥ हो लाल ऊबूके वी० ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल पहेरे वेश ते, जाणी प्रेक्नो हो लाल के ॥ जाणी प्रेक्नो ॥ दूरथी आवतो जाणे, नरेश ते लेक्नो हो० ॥ नरे० ॥ एहवो वेश बणाय, प्रन्नातें निकल्यो हो० ॥ प्रन्ना० ॥ लोकनी दृष्टें जणाय, ते हरिबल अटकल्यो हो० ॥ ते० ॥१॥ चहुटे वहेतां जुहार, जुहार ते, सहु करे हो० ॥ जु० ॥ ह

रिबलने मनोहार, करे सहु जली परें हो० ॥ क० ॥
इम करतां दरबार, ते मांहे आवियो हो०॥ते०॥जिहां
बेठी परखद त्यांहे, उह्वांहे जावियो हो० ॥ उ० ॥२॥
नृपजन आदि परज, ते कठी सहुं मली हो० ॥ते०॥
एक नृप विना बीजी परज, ते मनमें थइ रली हो० ॥
॥ ते० ॥ पूछे मांहोमांहे, ते कुशलनी वारता हो० ॥
ते०॥ पाछो उत्तर हरिबल, दे दिल धारता हो०॥दे०॥३॥
प्रगटी होलीनी जाल ते, नृपना मन्नमें हो० ॥ नृ० ॥
लागी अंगो अंग, अंगीठी तन्नमें हो० ॥ अं० ॥ वलि
मंत्री कालसेननुं, कालजुं नीकल्युं हो०॥ का०॥ श्याम
वदन थयुं तास, ज्युं श्याम जाजन तजुं हो०॥ज्युं०॥४॥
जाणे जहाज निमज्ज, थयुं दरिया वच्चें हो० ॥ थ०॥
तिम हरिबलने देखि, दो नृप मंत्री लचे हो० ॥दो०॥
कारीमो रंग देखाडी, कहे मुखथी घणुं हो० ॥कहे०॥
हरिबल देइ आदर, दे नृप बेसणुं हो०॥दे०॥५॥ आ
गत स्वागत कीध, घणी हरिबल तणी हो० ॥ घ० ॥
पूछे सोज समाचार, नृप हरिबल जणी हो०॥ नृ० ॥
कहो हरिबल तुमें लंका, गढ जणि किम गया ॥हो०॥
ग०॥ राय बिजीषण केरा, समाचार किम थया हो०॥
स०॥६॥ तव हरिबल ते खडग, करे लेइ जेटणुं॥हो०॥

क० ॥ राय बिभीषणे मोकल्युं, ए तुम चेटणुं हो० ॥ ए० ॥ हवे हरिबल कहे सांभलो, स्वामी तुम भणुं हो० ॥स्वा० ॥ लंका गढना समाचार, श्या कहुं तुम घणुं हो० ॥श्या० ॥ ७ ॥ विकटा मारग आटां, कांटा ते घणां हो० ॥कां० ॥ पंथें वहेतां आकरो, लाग्यो नही मणा हो० ॥ला० ॥ इम करतां दुःख सहेतां, पूगो जल निधी हो० ॥पू० ॥कालाम्बर जल भर्यां, खारो जलोदधी हो० ॥ खा० ॥ ८ ॥ लांबो पहोलो सहस, इसी योजन कह्यो हो० ॥ इसी० ॥ ते परमाणें महोटो, सागर जल लह्यो हो० ॥ सा० ॥ नाना महोटा मगर, मछ ते दीसता हो० ॥म० ॥ वाघने सिंहने रूपें, दीसे हिंसता हो० ॥दी० ॥ ए ॥ चिहुं दिशिमें जल पूरी, दीसे वसुमती हो० ॥ दी० ॥ माणस पंखीमात्र न, दीसे एक रती हो० ॥ दी० ॥ जलना लोढ चले ते, हिमाला टूक ज्युं हो० ॥ हि० ॥ उछलें जल असमान, शिखा चढे हूं कह्युं हो० ॥ शि० ॥ १० ॥ जाणे अषाढो मेह, ज्युं दरियो गाजतो हो० ॥ ज्युं० ॥ शूर सुभटनां मान, ते दूरें भांजतो हो० ॥ ते० ॥ एहवो जलधि भयंकर, देखी बिहामणो हो० ॥ दे० ॥ जल में पगलुं देतां, मन धूज्यो घणो हो० ॥ म० ॥ ११ ॥

पण शुं करीयें स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण कर्युं तिहां मन, संजारी रामने हो० ॥ सं० ॥ पाछुं केम वलाय जे, कामें नीकल्यो हो० ॥ के ॥ ॥ जे० ॥ मरण कबूल कर्युं पण, पाछो नवि टल्यो हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना जे बोल, ते गजदंत नीसर्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम उसरे, पंचमें उच्चर्या हो० ॥ पं० ॥ पंचनी साखें बोल, जे बोली यो ते टले हो० ॥ जे० ॥ ते नरनारी जीवतां, मूआं मां जले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥ वयण चूकां ते मान वी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ इहनव परजव कार, गयो तस जिन जणे हो० ॥ ग० ॥ इम जाणीने स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ वाल्यो जलमें जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वलि एक हरिबल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥ कल्पित वात करी कहे, ते सहु सांजले हो० ॥ ते० ॥ जलमें गयोज न आघो, तें हुं मन संवरी हो० ॥ ते० ॥ तब एक राखस आव्यो ते, साहामो जल तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ ऊंचो तो जाणीयें सप्त ए, ता ड प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥ लांबो होठ तें जाणी यें, वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दंता लोढा ताल,

करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली बो
ट, दीये धसी झलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे
आंखो दो ऊंमी, नूमी डुंगर दरी हो० ॥ नूं० ॥ माथुं
महोटुं ते जाणीयें, हलपले धूंसरी हो० ॥ ह० ॥ मा
थे काबरा केश, ते जाणीयें झांखरां हो० ॥ ते० ॥
दंताली समा दांत, ते विरला आकरा हो० ॥ वि०
॥ १७ ॥ ताडसमा दो हाथ ते, राखस डोहना हो०
॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा लोहना
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें ऊंमो, कूवो फूडनो
हो० ॥ कू० ॥ थंन समान दो चरण ते, राखस नूं
मनो हो० ॥ ते० ॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, न
यंकर नैरवो हो० ॥ न० ॥ जाणे यमनो बंधव, प्रग
ट्यो अभिनवो हो० ॥ प्र० ॥ क्रोधानलनी झाल ते,
मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्टह हास,
ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
साप ज्युं गंध, गंधाय डुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उ
दरथी निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥
एहवो बिहामणो राक्स, ते साहामो मल्यो हो०
॥ ते० ॥ एक तो जलधि बीजो, राक्स देखी ढल्यो हो०
॥ रा० ॥ २० ॥ म्हें तव जाणियो जूनो, पूर्वज आवियो

॥ हो० ॥ पू० ॥ विवानीवळ्यो, घर्घरणो जगाडियो हो० ॥घ०॥ राज्यनुं काम सधावा में, तव बुद्धिकरी हो० ॥ में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राखसने म्हें फरी हो०॥ रा०॥२१॥ आवो मामा जुहार,नाणेज तुमने करे हो० ॥ ना० ॥ द्यो अन्नेदान ते मामा, नाणेजने नलि परें हो०॥ना०॥स्वामी तुम्ह प्रसादथी,बुद्धि ए ऊकली हो० ॥बु०॥ राजी थयो तव राखस,वाणी सुणी नली हो० ॥ वा०॥२२॥ पूछे राखस नाणेज, तुं इहां किहां थ की हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते मुझ कहे बकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुझ लंका तणो हो०॥ मु० ॥ दाखवो मारग माह रे, काम छे तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जावुं छे नृप कारज, शीघ्र उतावलो हो० ॥ शी० ॥ तव रा खस कहे नाणेज, दीसे तुं बावलो हो० ॥ दी० ॥ मीयां वादे चावे, चणा तुं ए नवुं हो० ॥ चा०॥ श्यो तुझ आशरो नाणेज, लंकामें जवुं हो० ॥ लं० ॥ २४ ॥ चूसी ले तुझ राखस, धोले दी छतां हो० ॥ धो० ॥ किम तुझ पूरवें नाणेज,लंका गढ जतां हो० ॥ लं० ॥ जेहथी निपजे काम,ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ बांध्यो गद्धो खाइ, बुधां त्यां बहु बके हो०

॥बु०॥२५ ॥ चमक्यो चित्तमें स्वामि उखाणो सांजली हो० ॥ उ० ॥ घर सरखि नहि यात्र, ए वात में अ टकली हो० ॥ ए० ॥ तव में पूबयुं स्वामी, राखसने ते वलि हो० ॥ रा० ॥ मुफने बतावो मामा, लंका कूंची गली हो० ॥ लं० ॥ २६ ॥ किणिविधें मामा जवाये, लंका गढ हुं लहुं हो० ॥ लं० ॥ तव राखस कहे नाणेज, सांजलो हुं कहुं हो० ॥ सां० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल, ए पहेली उत्तरी हो० ॥ ए० ॥ लब्धि कहे जवि सांजलो, आगें उजम धरी हो०॥आ०॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राखस कहे मत्रिनें, सांजल तुं नाणेज ॥ जो जावुं तुफ लंकमें, तो करि कहुं ते हेज ॥ १ ॥ अगनी तुफ काया दही, कर तुं रक्षा हब ॥ ते रक्षा पडी लेइने, सोपुं लंका तब ॥ २ ॥ इणि विधि तुं लंका लहे, बीजी विधि नवि कांय ॥ जो तुफ बलें लंका गयो, तो तुफ राक्स खाय ॥ ३ ॥ राक्स वय ण ते सांजली, में धार्युं मनमांहि ॥ जीवित जो वाहालुं करुं, तो पण न रहे कांहि ॥ ४ ॥ रमणी राज्य ने रू ध्दि ते, तन धन जे वलि प्राण ॥ एतां करे अलखाम णां, वाक्यवबलना जाण ॥ ५ ॥ ते जाणी तुम कार

जें, कीधुं मरण कबूल ॥ इंधण काष्ठ मेली करी, करवा मांम्युं सूल ॥ ६ ॥ चिता रची दोयजण मिली, कीधो अग्नि प्रगट्ट ॥ सलगाडी चय चिहुं दिशें, प्रगटी जाल त्यां ऊट्ट ॥ ७ ॥ तिण विचमें तुम किंकरें, ऊं पापात ते कीध ॥ देह दही तुम कारणें, करवा काज प्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सामधर्मि थइने प्रन्नु, कीधी काया होम ॥ घृत मधशुं ते परजली, जालज ऊठी धोम ॥ ॥ ए ॥ तेहनी जे रक्षा थइ, बांधी पोटकी गार ॥ राखस ले गयो लंकमें, करवा मुज उपगार ॥ १० ॥ राखस ते लेइ पोटकी, नृप नजरें करि नेट ॥ राय बिन्नीषणें पूबियुं, शी करि तें ए न्नेट ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नटियाणीनी देशी ॥ हवे राखस कर जोडी हो कहे आलस बोडी रायने, ए तो लंकापति अवधार ॥ हुं जव सायर कंठें हो उपकंठें ठेक ते जायने, मुज वलियो आगार ॥ हवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेठो हो में दीठो निग्रंथी पणे, ए तो सायर पेले पार ॥ हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण कहि मामो नणे, तुमें आवो मामा जुहार ॥ हवे० ॥ २ ॥ में पण पूबियुं तेहने हो तुं केहने नरोंसें इहां रह्यो, तव

बोल्यो पंथी सार ॥ राय बिभीषण केरुं हो ढे शरणुं भलेरुं मुज कह्युं, ए तो जाणेज बोल्यो विचार ॥ ४ हवे० ॥ ३ ॥ तुम दरिसणनो अर्थी हो करि कर थी बारनी पोटकी, मुज बांधी दीधी एह ॥ कहे राखस तुम सयणे हो तुम नयणे मूकि ए पोटकी, ए तो भेट करी में तेह ॥ हवे० ॥ ४ ॥ इम राखस गयो कहिने हो ए तो वहीने फरी निज थानकें, तव चिंतवे बिभीषण चित्त ॥ विस्मय पाम्यो मनमें हो राय जनमें ढोडी जाणके, ए तो राखसनी पोटकी दीत ॥ ५ ॥ एम हरिबल कहे नृपने हो घणे यत्नें भस्म करें ग्रही, मुज बांटे अमृत तोय ॥ ए आंकणी ॥ विद्याबलें करी शुद्धो हो मुज कीधो जीवतो देखतां, तिणे दीधो फरि अवतार ॥ सनमान्यो मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुज कीधो बहु उपगार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुज पूछे हो ए शुं ढे तें काया दही, मुज मांझी कहो विरतांत ॥ तव में लंकापतिने हो कहि यतनें मांझीने सही, एतो आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नगरी हो ढे सघरी सघला देशमें, ए तो महोटी पुण्य पवित्र ॥ मदनवेग त्यां राया हो सुखदाया सघला

नरेशमें, ए तो सोहे प्रजामें छत्र ॥ ए० ॥ ७ ॥ अंग
जने परणावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें प्रभु, एतो
मांड्यो उच्छव रंग ॥ तिण कारण नृप मेले हो मंत
नेले सघलाशुं विभु, एतो तेडी ते आसंग ॥ ए० ॥
। ए ॥ तेणें तुम आमंत्रवा हो ए तो मंत्रवा हर्ष हि
ये धरी, तिणे तेडवा मूक्यो मुझ ॥ ते माटे तुमें वे
ला हो ए तो लगननी पहेला परवरी, तुमें आवोज्युं
यडे सूझ ॥ए०॥१०॥ तव लंकापति बोल्यो हो मनं
बोली कहे मुझ आगलें, तुं सांभल पंथी सुजाण ॥
तें किम तिहां अवराय हो न जवराये निज नागलें,
तो किम थाय प्रयाण ॥ ए० ॥ ११ ॥ ते माटे
तुमें कहेजो हो मुझ मुजरो लेजो दिन प्रतें, तिहां
रंगा विशाला मझ ॥ खड्गनी आ सहनाणी हो गुण
वाणी मूकी तुम प्रतें, ए तो सघले कामें सकज ॥
। ए० ॥ १२ ॥ एम कहिने बिभीषणें हो मुने नूष
ण देइ जडावनां, वली पुत्री पण मुझ दीध ॥ तुम
परसादें सांइ हो प्रभु मुझ अंतर मांइ भावना,
मुझ कीधी बिभीषणें वृद्ध ॥ ए० ॥ १३ ॥ घणे आमं
त्रें करीने हो जस वरीने मुझ वोलावियो, निज पुत्री
सहित महाराज ॥ वलि निज सेवक साथें हो ए

तो मूकी हाथे नजावियो, मुज लंकापति शुज आ
ज ॥ ए० ॥ १४ ॥ विद्याबलें पंथ काप्यो हो सुख
व्याप्यो पलकमें ढूकडे, एतो जब थइ प्रज्जुनी लहेर ॥
रजनी मध्य प्रदीपें हो निज नगरी समीपें रूंखडे, ए
तो मूकी वलिया घेर ॥ ए० ॥ १५ ॥ हुं पण मंदिर आ
यो हो सुख पायो प्रज्जुनी महेरथी, हुंतो जे गयो बीडुं अ
बेय ॥ फलि मुज चाकरी लंका हो देइ मंका आयो तुम
लहेरथी, हुं तो लंकालाडी लेय ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए सहना
णी खङ्गनी हो जे निपनी सगेनी तुम जणी, एतो मूकी
बिन्नीषणें साच ॥ वलि तुमने कर जोडी हो मान
मोडी प्रणिपत करी घणी, तुम सपगो कह्यो ए मुख
वाच ॥ ए० ॥ १७ ॥ ए सहनाणी देखी हो मुने
पेखी आव्या जाणजो, एतो अमने विवाहमांहि ॥
वलि तुम सेवक नांखे हो मुख वचनें दाखे ते मा
नजो, तुम मदनवेग उन्नांहि ॥ ए० ॥ १८ ॥ इणि प
रें व्यतिकर सघलो हो नृप आगल मांहि परगलो, ए
तो सपगो मह्नि कहेय ॥ ते नृप सांजली वाणी हो मन
जाणी हरिबल अटकल्यो, ए तो साहस धैर्य धरेय ॥
ए० ॥ १९ ॥ सघली परषदा निसुणि हो मन हर
णि सांजली वातडी, ए तो हरखित परषद होय ॥ ध

न्य करणी हरिबलनी हो गयगमणि लंका जातडी, ए तो परणी आणी सोय ॥ ए० ॥ २० ॥ नृप पण थयो मन राजी हो शुन देइजाजी वधामणी, ए तो हरिबल कीध प्रसन्न ॥ घणे आमंबरें करीने हो हरिबलने कीध पहेरामणी, ए तो मूक्यो निज आसन्न ॥ ए० ॥ २१ ॥ गोखें बेठी देखे हो पियु आवतो पेखे रंगशुं, थइ नारी दो उल्लास ॥ दंपतीनी दो दृष्टि हो थइ सुधावृष्टि चंगशुं, ए तो पहोती सघली आश ॥ ए० ॥ ॥ २२ ॥ हवे हरिबल मतवालो हो ए तो दो गोरीनो नाहलो, ए तो सुख विलसे संसार ॥ प्रेम सुधारस प्यालो हो एतो पियुने वालो वाहलो, ए तो सफल करे अवतार ॥ए० ॥ २३॥ जुवो नविया प्राणी हो मन जाणी जीव ऊगारीयो, एक जलचर जीव जो मत्स ॥ तो तस पुण्य प्रनावें हो शुन नावें जनम सुधारियो, लह्यो मठी लछि सुलत्त ॥ए० ॥२४ ॥ हुं बलिहारी तेहने हो ठे जेहने लेश्या धर्मनी, तस होवे सुर नर दास ॥ त्रिजा उल्लासनी पूरी हो बीजी ढाल स नूरी मर्मनी, ए तो पत्नणी लब्धि सुवास ॥ए०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें हरिबल नारीनी, डुविधा मूकी दूर

॥ जाग्यो जब मंदिर धणी, लाज्यो चोर मजूर ॥१॥ तिम नृप समजी मन्नमें, हरिबलशुं करे प्यार ॥ हरि बल पण सेवा करे, नृपनी ते दरबार ॥ २ ॥ हरिब लनी थइ वातडी, नगरि विशाला मझ ॥ लंका लाडी लावियो, परणी लज सुलज ॥ ३ ॥ ते वातो श्रव णें सुणी, कालसेन परधान ॥ परजले मनमें पापी यो, हरिबल सुणि जस वाण ॥४॥ दिनकर देखी घूक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं, त्युं बले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अंधज होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थ यो, हरिबलने ते दुष्ट ॥ छल ताके छलवा जणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेगो मालीये, मद नवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, बेगो प्रण मी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन की राड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥९॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इण सरोवरीयांरी पाल, आंबा दोय रावला ॥ ल लना ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबलनां वयण, वखाण तें नृप करे ॥ ल० ॥ खागी त्यागी निकलंक के, शूर सु

नट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ गयो ॥ ल० ॥ माहरुं काज सुधारवा, वली नस्म थयो ॥ ल० ॥ १ ॥ काढयो आपणे दो जणें, मलीनें स्त्रीवती ॥ ल० ॥ टाढे पाणीयें वेगली, खस काढी हती ॥ ल० ॥ पण ते साहामुं लाडी, लंका लेइने ॥ल०॥ आव्यो आपणे. मंदिर, मंका देइने ॥ ल०॥२॥ तो में जाण्यो ए पूरण, नाग्य वली घणो ॥ ल० ॥ जामाता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सहनाणी खड्गनी, नृपशुं मत करी ॥ ल० ॥ लंकापतिनी माहरी, दो राखी सरनरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, में दीगो सही ॥ ल० ॥ मद नवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि कही ॥ ल० ॥ काल सेनने पगथी, मांमी माया लगें ॥ ल० ॥ प्रगटी जाल ते सांजली, जागी अंगो अंगें ॥ल०॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रीशें बली ॥ ल० ॥ नलि तुम अकल जे नरपति, हरिबलनी कली ॥ ल० ॥ शुं तुमें जाणो स्वामी, ए धूरतनी कला ॥ ल० ॥ मानो सघलुं धोलुं ते, दूध करी नला ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारें मिंग असंबंधने, अणघडीयां वली ॥ ल० ॥ गजनुं कालिंग तेमांहे, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दी

गो चंद, अमासनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिबल
नी ए मानजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं
जाणी प्रभु वयण, वखाण करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दं
नीनां सयल, चरित्र लहुं अमें ॥ ल० ॥ जे परदेशी
लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ नाटक चेटक जाणे,
वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच,
करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडीयें
कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फरे थइ छेल
सा ॥ ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, धोबी बेलसा ॥
॥ ल० ॥८॥ बेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥
॥ ल० ॥ फिंगे फिंग चलावे ते, लोक जाणे खरी ॥
॥ ल० ॥ साची जूठी करे ते, मुखें न लगाडीयें ॥
॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन बिगाडीयें ॥
॥ ल० ॥ ए ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सही करी मान
जो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार एँ, हरिबल जाणजो
॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥
॥ल०॥ अणमलती ए वात, घडी एणें बुत्रिका ॥ल०॥
॥१०॥ ए तो कोइक धूर्त, पणे करी वातडी ॥ल०॥
परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम जातडी ॥ ल० ॥ ना
म लियें निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥

किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥
शी डुनियामें खोट, पडी हती पुरुषनी ॥ ल० ॥ लं
कापतियें कीध, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवकुल
नाग विछेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
कीडाने, राजसरे ते अणमिले ॥ ल० ॥ १२ ॥ एउ
खाणो सांजली, नृप तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम ह
रिबलनी वातो ए, साची गारजो ॥ ल० ॥ जो लंका
पति केरो, जमाइ साचो हशे ॥ ल० ॥ तो तुम
नोतरी मंदिरें, जमवा तेडशे ॥ ल० ॥ १३ ॥ तेहने
मिशें जइ आपणें, नारी दो जोइयें ॥ ल० ॥ उत्तम
मध्यमनी गति, दो कुल सोहियें ॥ ल० ॥ इणि परें
मंत्रियें नृपना, कान जंजेरीया ॥ ल० ॥ नृपना मन
ना कषाय, ज्रुजंग ढंढेरीया ॥ ल० ॥ १४ ॥ जूठ कु
बुद्धी मंत्रीयें, चकमक पाडीयो ॥ ल० ॥ हरिबल उ
पर द्वेषनो, सिंह जगाडीयो ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रि
यें हरिबल, नी कुबुद्धियें ॥ ल० ॥ नृप मन फेरव्युं जा
णे, हरिबल ऋद्धियें ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम नृप मंत्री
दो जण, मलि गोमो रचे ॥ ल० ॥ जमण मिशें दो
नारीने, जोवा नृप लचे ॥ ल० ॥ एहवो संकेत करे
जिहां, नृप मंत्री मली ॥ ल० ॥ तिण अवसर तिहां

आव्यो, अजाणे हरिबली ॥ ल० ॥ १६ ॥ आगत स्वागत हरिबल,नी ते नृप करे ॥ ल० ॥ बांह पसारी आघो, आघा आसण धरे ॥ ल० ॥ बेग एकण गादीयें, हरिबल नृप जिहां ॥ ल० ॥ मुखथी साकर घोलतो, बोल्यो मंत्री तिहां ॥ ल० ॥ १७ ॥ हवे करे मंत्री हरिबलनी, खुश मशकरी ॥ ल० ॥ हरिबल हर्षे एहवी, बोली उच्चरी ॥ ल० ॥ कहो हरिबल तुमें लंका, लाडी लाविया ॥ ल० ॥ राय बिभीषण केरा, जमाई लाविया ॥ ल० ॥ १८ ॥ पण एक नो तरुं तेहनुं, तुम कने मागीयें ॥ ल० ॥ लेखावटनी लागति, ते नवि भांगीयें ॥ ल० ॥ लाखनी बगसिस कोडि, हिसाब न चूकीयें ॥ ल० ॥ ले संसारमां री ति ए, ते किम मूकियें ॥ ल० ॥ १९ ॥ गडदानो पण भाग, नथी कोइ मूकता ॥ल०॥ तो किम मूकशुं जम ण, अमारुं उतावतां ॥ ल० ॥ बाइना कात्यामां भा ग ते, कोइनो पाउ ले ॥ ल० ॥ इम हरिबलने मंत्री, कहे हस्त चाड ले ॥ ल० ॥ २० ॥ इणि परें हास्य कुतूहल, नी करी मंत्रीयें ॥ ल० ॥ समज्यो मनमां हरिबल, सांभली गंत्रीयें ॥ ल० ॥ पापी कुमति मंत्रीयें, चकमक फेरियो ॥ ल० ॥ जमण तणो मिश

काढी, नृपने जंजेरियो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहवा दुष्ट कुबुद्धि ते, कां जगें अवतस्था ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें कां न, गया जे गलि जस्था ॥ ल० ॥ परनिंदा करता फरे, दुष्ट सुसाधनी ॥ ल० ॥ खावे उखर निंदकी, काक ज्युं वाधनी ॥ ल० ॥ २२ ॥ तप जप क्रिया कष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥ ते मरि जाये नरग, निगोदें ए वकी ॥ ल० ॥ जारे कर्मी जीव, कह्या ए जिनवरें ॥ ल० ॥ इह जव परजव सुखने न, देखे जली परें ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां छिद्र जूवे ते, निंदकी बोकडा ॥ ल० ॥ देवकीवंशें ते ऊपजे, ए फल रोकडां ॥ ल० ॥ समजू थइने जीव, करे निंदा पारकी ॥ ॥ ल० ॥ ते जीवनें किम लेती नथी, चंफा बारकी ॥ ॥ ल० ॥ २४ ॥ इम हरिबल मन समजी, खुणस राखी रह्यो ॥ ल० ॥ खेलशुं दाव ते अवसर, आवे जे लह्यो ॥ ल० ॥ गुडथी मरे जे जीव ते, विषथी न मारीयें ॥ ल० ॥ ए उखाणो लोक, कहे ते संजारियें ॥ ल० ॥ २५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल बोलीयो ॥ ल० ॥ ल्यो प्रजु लंकाजोजन, वचन ए खोलीयो ॥ ल० ॥ नगरि समेत जे परखद, लेइ पधारजो ॥ ल० ॥ करशुं टहेल ते सगति, सारु अवधा

रजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, हरि बल उठीयो ॥ल०॥ पण हवे नृपने मंत्रीने, जगदीश रूठीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल ए, त्रीजी पूरी थई ॥ ल० ॥ लब्धि कहे नवि सांजलो, जे आगें जई ॥ ल० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल घरें आवियो, बेठी नारी दोय ॥ आवतो दीठो नाहने, ऊठी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निश नर बेठां रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सरोवर फीलतां, निगमे राति टकोल ॥ २ ॥ हरिबल कहे पटनारीने, सांजल प्रिया मुफ वात ॥ लंका लाडी ले हणुं, ते नृप मागे जांच ॥ ३ ॥ पंच समक्षें मंत्रीयें, माग्युं जोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो छुं आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सांजल मुज्फ ॥ एक वार नृप तेडतां, लाज वली नही तुज्फ ॥ ५ ॥ नकटी देवी देवलें, सरड पूजारो जेम ॥ लोक उखाणो जे कहे, प्रीतम छो तुमें तेम ॥ ६ ॥ वलि शी शक तुम धाइयो,प्रीतम बीजी वार ॥ ते हुं इम जाणुं अछुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ देखी पेखी कूपमें, दीपक लेइ पडो हब ॥ नृप मंत्री मीठुं

चवे, ते तमें मानो सच्च ॥ ८ ॥ मीठां बोलां मान वी, केम पतीजां जाय ॥ नीलकंठ मधुरुं लवे, साप सपुच्छो खाय ॥ ए ॥ तेहनी छे ए जातडी, नृप मंत्री दो लंठ ॥ चूक करी तुमने प्रज्जु, करशे स्त्री दो नंभ ॥ १० ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ विसास ॥ एतां कबहि न धीरियें, जो वंछो तन आश ॥ ११ ॥ नेष ज्जुजंगम जामिनी, महेत ने जूपाल ॥ ए पांचने जे धीरशे, ते नर पामशे काल ॥ १२ ॥ यम वेश्या दासी नदी, अग्नि जूआरी काल ॥ ए साते नही आपणां, प्रीतम निज संजाल ॥ १३ ॥ तव प्रीतम वलतुं कहे, हरिलंकी निसुणेह ॥ जो मुज दीहा पाधरा, शुं नृप करशे तेह ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतमसेंत्ती वीनवे ॥ अथवा हो मत बोले साजनां ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल एहवो जबाप ते धीवरें, वसंत सिरीने दीध ॥ मोरालाल ॥ जोजननी जे जोइयें, मेली सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार निपाई रसवती, जेहवी कही सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक जो कवल तेपेटमां, उतरे तो चढी रहे छाक ॥ ॥ मो० ॥ २ ॥ हांरे लाल सागर देव पसायथी,

नोतर्यां नगरी लोक ॥ मो० ॥ नृपने पण दिये नोतरुं, श्रीफल लेइ करे ढोक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ ह्रां० ॥ शाला करि चउ चिहुं दिशें, पंचरंगी बनात ॥ मो० ॥ जरतारी मेरा किया, केडें बांधि क नात ॥ मो० ॥ सा० ॥४॥ ह्रां० ॥ नर नारीनी पांत मां, मांझ्या सोवन थाल ॥ मो० ॥ रतन कचोलां शाकनां, मांझ्या ऊाक ऊमाल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ५ ॥ ॥ ह्रां० ॥ कुमर कुमारी पांतमां, तिहां पण मांझ्या थाल ॥ मो० ॥ बारें दरवाजे जइ, तंडुल ठवे उज माल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ह्रां० ॥ जोजन वेलाने समे, हरिबलें तेडां कीध ॥ मो० ॥ राउ राणा नग री जना, बेठी पांत प्रसिद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ ७ ॥ ॥ ह्रां० ॥ ठयल ठबीला ठोगालुआ, रसिया वालम जेह ॥ मो० ॥ जांग अमल चढाइने, खाइम फेरा तेह ॥ मो० ॥ सा० ॥ ८ ॥ ह्रां० ॥ प्रीसे पांतें प्रीस णां, सुखडी एकविश जाति ॥ मो० ॥ मेवा मीठी जातना, प्रीसें पांतिमां खांति ॥ मो० ॥ सा० ॥ ए ॥ ॥ ह्रां० ॥ घेवर पेंडा मोतीया, कसमसीया कर्णसाई ॥ मो० ॥ ऊरमरीया सिंह केसरी, लावणसाइ स वाई ॥ मो० ॥ सा० ॥ १० ॥ ह्रां० ॥ सिरा सुंहाली

लापशी, गुंदवडां गुंदपाक ॥ मो० ॥ मर्कि जलेबी हे समी, मेहेसु पतासां चाक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ११ ॥ ॥ हां० ॥ व्यंजन केह्नी जातिनां, खारां खाटां तिख्क ॥ मो० ॥ खडका ने ब्रडका घणा, हिंग वघाऱ्या हविख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १२ ॥ हां० ॥ मांह्नोमांहि ते एकमना, मांन्हे रसिया वाद ॥ मो० ॥ अवला सवला जूझता, करे ते नोजन स्वाद ॥ मो०॥ सा०॥ ॥ १३०॥ हां० ॥ शूर सुनट रण खेतमें, ज्युं लडे कर ता चोट ॥ मो० ॥ तिम रसिया लडे नोजनें, कर मुखशुं करे दोट ॥ मो० ॥ सा० ॥ १४ ॥ हां० ॥ शाल दाल ने घृतसरा, चाली ज्युं नदीनीक ॥ मो० ॥ रसिया राजन जन जम्या, स्वादें करीने ठीक ॥ मो०॥ ॥ सा० ॥ १५ ॥ हां० ॥ सारनी नीपाइ रसवती, जे हमां कांइ नथि डुःख ॥ मो० ॥ नगरी जन सहुको जमी, काढी सघली नूख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १६ ॥ ॥ हां० ॥ कपूर कस्तूरी वासिया, जलशुं करे मुख शुद्ध ॥ मो० ॥ पान सोपारी एलची, तंबोल दे मन शुद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥ हां०॥ पहेरामणी सहु- ने करी, नर नारी विस्तार ॥ मो० ॥ मुझनी करी द क्षिणा, वरताव्यो जयकार ॥ मो० ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ हां० ॥ जशपडहो वजडावियो, नगरीमांहे विख्या
त ॥ मो० ॥ वातडी चाली चिहुं दिशें, हरिबल केरी
ख्यात ॥ मो० ॥ सा० ॥ १९ ॥ हां० ॥ हवे सुणजो
रसीया तुमें, जमता जे थइ वात ॥ मो० ॥ नृपने
प्रिसवा नारी दो, आवी शोन्ति गात ॥ मो०॥ सा०
॥ २० ॥ हां० ॥ नृप जमतां भूली गयो, निरखी दो
स्त्री रूप ॥ मो० ॥ विकलेंद्रिय थयो राजवी, पडियो
मोहने कूप ॥ मो० ॥ सा० ॥ २१ ॥ हां० ॥ काम
ज्वर व्याप्यो घणो, नृपने तेह अथाह ॥ मो० ॥ नृ
प जाणे दो कर ग्रही, ले जाउं मंदिरमांह ॥ मो० ॥
॥ सा० ॥ २२ ॥ हां० ॥ मूर्छागत थयो राजवी, मोह
बाण लागां असेच ॥ मो० ॥ विषयारसने कारणें,
पडियो गडदापेच ॥ मो० ॥ सा० ॥ २३ ॥ हां० ॥
नृपने घाली पा[illegible], ले गया निज दरबार ॥ मो०॥
जाणे जमने मंदि[illegible]प गयो जाणे संसार ॥ मो०॥
॥ सा० ॥ २४ ॥ हा[illegible] पूरव भवनी वेरणी, वसंत
सिरी दो नारि ॥ मो० ॥ चित्त हर्युं हरिणाक्षीयें, नृ
पनुं उतार्युं वारि ॥ मो० ॥ सा० ॥ २५ ॥ हां० ॥ वैद्य
बोलाव्या तिहां कणे, पकडी जुए बांह ॥ मो० ॥ वै
द्य बिचारा शुं करे, करक ते काळजामांह ॥ मो० ॥

॥ सा० ॥ २६ ॥ ह्रां० ॥ आय उपाय करे घणा, टे की न लागे कोय ॥ मो० ॥ जेणें दीधी वेदना, दूर करेशे सोय ॥ मो० ॥ सा० ॥ २७ ॥ ह्रां० ॥ जो जो करणी करमनी, नृप थयो ते असराल ॥ मो० ॥ त्रीजा उल्लासनी ए कही, लब्धें चोथी ढाल ॥ मो०॥ ॥ सा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणा जोषी जाण जे, परबंधी कहे आय ॥ मुख पोथां दूरें रह्यां, जोर न चाल्युं कांय ॥ १ ॥ तिण समें मेहर मंत्रवी, फरि कीधो उपचार ॥ कोकशास्त्र तणै बलें, नृपने कर्यो करार ॥ २ ॥ मेहरमंत्री जस लह्यो, नगरी विशाला मऊ ॥ वाह वाह सहु को कहे, मंत्री महोटो सकऊ ॥ ३ ॥ मेहर चिंते चित्तमें, नृपने न वली शान ॥ न वले ज्युं खटमासनी, पाधरी पूंछडी श्वान ॥ ४ ॥ वली केताइक दिन गया, नृपने करतां केलि ॥ वली नृप कामें व्यापियो, वसंत श्रीनी चढि वेलि ॥ ५ ॥ तिण अवसर नृप मंत्रीनें, तेडाव्यो ते दुष्ट ॥ तें पण आव्यो नृप कने, काल सेन ते कुष्ट ॥ ६ ॥ प्रणमी नृपने मंत्रवी, [illegible] पासें नजीक ॥ नृप कहे मंत्री आगलें, सां[illegible] मंत्र[illegible] ॥

॥ ७ ॥ प्यारी प्राण ते ले गइ, पिरसण आवि जिवार ॥ तन मन सुध ज्ञुली गयो, मंत्री देखत वार ॥ ॥ ८ ॥ मन लाग्युं ते ऊपरें, जिम मन केतकी जंग ॥ तिम मंत्री तुं जाणजे, रह्यो मुऊ जिउ तस संग ॥ए॥ लागी लगन ललना तणी, शुं कहुं मंत्री तुऊ ॥ लालच रहे मुऊ तेहनी, सुण तुं मंत्री गुऊ ॥ १० ॥ ते माटें मंत्री तुमें, कोइक करो विचार ॥ बल बल कल ते केलवी, मेलवो ते दो नार ॥ ११ ॥ मानिश तुऊ उपगारडो, थाइश नही गुण चोर ॥ जीवित सूधी ताहरी, अहनिश राखिश होर ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ठोगलो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल कालसेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांजलो स्वामी नाथ, प्रजाना पाल ते ॥ साहेबजी ॥ प्रजु शुं तुमें एहने तेडी, आघो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी, आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दजनें [illegible]म, [illegible]व रंगी देयवो ॥ सा० ॥ तिम हरिबलने प्रजु म[illegible]इ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि गर्दज पासें शा[illegible]ला[illegible]री करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दूध

ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि
परें राजन साचो, उखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदे
शी अजाण ते दुर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥
ए तो वेरी तुमचो प्रगट्यो, रुधिरने शोषवा ॥ सा०॥
तुम हृदये नारीनी झाल ते, घाली दोषवा ॥ सा०॥
। ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, ऊगतो वैरी छेदीयें ॥
। सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वेदीयें
। सा०॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥
। सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीठो तेहने ॥
। सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो
नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धू
री सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जाणजो स्वामी महो
टो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगें मारे मिं
ा, असंबंध जोर ते ॥सा०॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तुमें मा
नी साची, जाणि सवी कही ॥ सा०॥ पण हुं जाणुं
ए कल्पित, वात करी सही ॥ सा०॥ ए तो एहनो
गो विशवास, करो तुमें राजवी ॥ सा०॥ ए तो एह
ना खाधामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥सा०॥६ ॥
ए तो शी लंका शी लंका, गढना नाथनी ॥ सा० ॥
ए तो समुद्र उल्लंघी जावुं, ते मुश्कल साथनी ॥सा०॥

ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥सा०॥ ए तो महोटा मगरमछ, मुखें गली जावतो ॥ सा०॥ ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं नावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा०॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खड्ग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धाइने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो हरिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए वृक्ष, चोलो मोफर थइ ॥ सा० ॥ ॥ ए ॥ ए तो एहवा नरने मूकीयें, स्वामी यमघरे ॥ ॥सा०॥ ए तो काढीयें आखड छेट ते, दूरें नली परें ॥ सा० ॥ ए तो हवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धें चालशो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथें मालशो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हवे आज पछें कदि आण न, लोपुं ताहरी ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करी तें, मंत्री ते खरी ॥सा०॥ ए तो चोकस बेठी माहरें मनडें सहचरी ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण ते हवे मंत्री

वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं
जेहथी कार्य, सीझे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिब
लनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥सा०॥ ए तो आप
णे मंदिर रामा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥
तव मंत्री बोल्यो नृपने, प्रणमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥
एह वातनुं बीडुं छबूं छुं, हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥
तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल धरे ॥
॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीझे, काम ते कल
करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हवे ते माटे तुमें सन्ना, मध्यें
बेसीने ॥सा०॥ तुमें यम नोतरवा हरिबल, मूको विह
सिने॥सा०॥जव बीडुं छबशे हरिबल,ते चित्त राखशुं ॥
सा० ॥ तव बाली जाली खाख, करीने नाखशुं ॥
सा० ॥ १४ ॥ विण पइशे आपणि दूर, विराध ते जा
यशे ॥ सा० ॥ तव शशिवयणी मृगनयणी, आप
णी थायशे ॥ सा० ॥ नवि शोन्ने वायस कंठें, रयण
नो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो छे तुम लायक नाथजी,
नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन हरख्यो महि
पति मंत्रिनी, वाणी सांजली ॥ सा० ॥ ए तो जली
बुद्धि बताइ ते, सुखदायीमां जली ॥सा०॥ इम दो ज
णे मलीने परछ, कर्यो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नो

तरवानो मिश करि, हरिबल्ल यंत्रीयें ॥ सा०॥१६॥ इ
म डुर्मति दीधि नृपने, काल्ल सेन ते ॥ सा० ॥ हरिब
ल्लनें चुकवा दो जन, रहे लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण
एतुं न जाणे मूरख, दो जण खूट ते ॥सा०॥ किण गा
णे किणे कडणे,बेसशे ऊंट ते॥सा०॥१७॥जीवलालचि
यो थइ आकरि,बांधी मोहनी॥सा०॥कोडा कोडी साग
र सत्त्वर, लहे डुःख डोहनी ॥ सा० ॥ लाख चोराशी
जीवा जोनिमें, जीव ते बहु रुले ॥ सा० ॥ पण तो
हि पाप जोगवतां, साटुं नवि वल्ले ॥ सा० ॥ १८ ॥
ए तो काटें काट वल्ले जिम, लोहने जाजनें ॥ सा०॥
तेंम जीवने कर्मे कर्म, वधे सूसाऊने ॥सा०॥ ए तो पर
निंदा परद्रोह, करे जे आकरा ॥ सा० ॥ तेणें दीधां
शिवपद बारणें, आडां ऊांखरां ॥सा०॥ १९ ॥ ए तो
कंचन कामिनी ए दो, सारु बापडा ॥ सा० ॥ जीव
बांधें निकाचित कर्म, गल्लीनां कापडां ॥ सा० ॥ जी
व जटके वार अनंती, नरक निगोदमां ॥ सा० ॥ ए
तो सूक्ष्म बादर थइ फरे, राज ते चौदमां ॥ सा० ॥
२०॥ ए तो कंचन कामिनी सारु, जीव जंफाय छे ॥
सा० ॥ ए तो इहजव परजव चोर, थई दंफाय छे ॥
सा० ॥ जिम मीनी देखे दूध, न देखे फांगडी ॥ सा०

॥ तिम जीव न देखे करणी, आगें अघलाकडी ॥ सा०॥२१॥ इम जाणतो जीव चेते नहिं, कर्मना जोर थी ॥सा०॥ ए तो ज्ञान क्रिया दो नवि गमे, कर्म कठो रथी ॥ सा०॥ इम मंत्री बांधे निकाचित, कर्मने काल ते ॥सा०॥ ए तो हरिबल उपर द्वेष, धरे चंमाल ते ॥ सा० ॥ २२ ॥ विण खुने मंत्रि वांसे थयो, दीशाशूल ते ॥ सा०॥ पण नृप मंत्रीना मुखमें, पडशे धूल ते ॥ सा०॥ कोइ वातें पापी बीहे नही, मंत्री व्याल ते ॥ सा० ॥ पण अंतें जातां वहेशे, पाणी ढाल ते ॥ सा०॥ २३ ॥ ए तो साहिबने घरे जोतां, लेखुं एक छे ॥सा०॥ रूडी नूंमीनो जोनारो, प्रनू नेक छे ॥सा० ए तो काल प्रस्तावने योगें, करणी संनालशे ॥सा०॥ तव दूधने जलनो वेहरो, करि देखाडशे ॥सा०॥२४॥ एक समकित विना जे जीवने, घोर अंधार छे ॥ सा० निशि दिन घन घाती कर्मनो, नमे वधार छे ॥ सा० पुद्गल परावर्तन काल, अनंतो तें करे ॥ सा० ॥ जप तप क्रिया कष्ट करे ते, सवि निःफल वरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ जेहने घट न्यंतर समकित, केरी ज्योत छे ॥ सा०॥ तस अनुनव सुरमणि वंछित, सुख उद्योत छे ॥सा०॥ तस जोगें ज्योति सरूपीनुं, रूप ते उलखे ॥

सा० ॥ चिदानंद ते आनंदमें लहे, शिव सुख जिन लखे ॥ सा० ॥२६॥ जेहनी करणी शुभ महोटी, छे संसारमें ॥सा०॥ तस वास कह्यो भगवानें, सुख आ गारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुभ पांचमी, त्री जा उल्लासनी ॥ सा० ॥ ए तो लब्धि कहे भवि सुण जो, आगें सुवासनी ॥ सा० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥इणि परें परठ करी भलो,नृप मंत्री जण दोय॥ पहोता निज निज मंदिरें, चूप धरी मन सोय ॥ ॥ १ ॥ बीजे दिन नृप मंत्रियें, किधी कचेरी सार ॥ चामर छत्र बिराजते, बेठो तखत उदार ॥ २ ॥ छ त्रिश राजकुली मली, वड वडा ते सामंत ॥ खान उमराव ते आविया, परखदमें माहंत ॥ ३ ॥ ह रिबल पण तिहां आवियो, बेठो नृपनी संग ॥ एक ण गादी बिराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥ हवे नृप तेडुं मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महा जन समसत मेलियां, मूकी निज तलार ॥५॥ वड व खती व्यवहारिया, माही माना जेह ॥ माही मति छे जेहनी, मलिया ते गुणगेह ॥६॥ दानें मानें आगला,

दीसंता जडधार ॥ धनद भंभारी सारिखा, राखे वड व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥

॥ लूहारण जायो दीकरो ॥ सोभागी हे ॥ आयो मास वसंत के ॥ लाल सोभागी हे ॥ ए देशी ॥ माहाजन साथें सहू मली ॥ सो० ॥ पहेरी भला शणगार के ॥ ला० ॥ निज निज घरनां भेटणां ॥ सो० ॥ ले आया दरबार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सातशें ॥ सो० ॥ शंकर शंभु सगाल के ॥ ला० ॥ सूरचंद सूरो सूरजी ॥ सो० ॥ सोभागी सुंदर साल के ॥ ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीठो मालजी ॥ सो० ॥ माणक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेठो जगसी जीवणो ॥ सो० ॥ जगजीवन जगमाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥ थानो थोभण थावरु ॥ सो० ॥ भाणो भीमो भवान के ॥ ला० ॥ कीको केशव करमसी ॥ सो० ॥ कल्याण करमी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देवसी ॥ सो० ॥ दीपो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ प्रेमो प्रेमजी पोमसी ॥ सो० ॥ पूरो ने पुण्य पाल के ॥ ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ नाथो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो रवजी रंगजी ॥

॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥ ६ ॥ वाघो वेलो वालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद के ॥ ला०॥ हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरचंद के ॥ ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गलालजी ॥ सो० ॥ गांगो ने गोपाल के ॥ ला० ॥ गणजी गणेश ने गांगजी ॥ ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ खबो खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥ ॥ ला० ॥ तारो तुलशी त्रीकमो ॥ सो० ॥ त्र्यंबकने त्रिभुवन्न के ॥ ला० ॥ ए ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥ ॥ सो० ॥ शामो ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिवशी शामजी ॥ सो० ॥ साचो साकर वृंद के ॥ ला०॥ ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहारिया ॥ सो० ॥ मलिया माहाजन साथ के ॥ ला०॥ नेट नली नृपने करी॥ ॥ सो०॥ बेग प्रणमी नाथ के ॥ ला० ॥ ११ ॥ इणि परें सहु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेल्या वर्ण अढार के ॥ ला० ॥ बेठी परखद सहु मली ॥ सो० ॥ नृपने करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे नृप अवसर जोइने ॥ सो० ॥ बोल्यो वयण विचक्ष के ॥ ला० ॥ बीडुं यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समक्ष कें ॥ ला० ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांजलो ॥ सो० ॥ बीडुं

अहो तुम एह के ॥ ला० ॥ यमने नोतरुं देइने ॥ ॥ सो० ॥ तेडी आवो तेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें ॥ सो० ॥ तेडी लावे जेह के ॥ ॥ ला० ॥ माहरी रीझ ते पामशे ॥ सो० ॥ मनोवंछित ससनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे बीडुं अहो ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित लगें हुं तेहनी ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥ ॥ ला० ॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांभली ॥ सो० ॥ सभा थई विलक्ष के ॥ ला० ॥ पर्षद मौन करी रही ॥ सो० ॥ जाणे तेलमें बूडी मक्ष के ॥ ला० ॥ ॥ १७ ॥ निज निज मुख सामुं जुवे ॥ सो० ॥ परषद थइ मन नूर के ॥ ला० ॥ उपडे को नहिं जीभडी ॥ ॥ सो० ॥ जाणे गले देवाणो सिंदूर के ॥ ला० ॥ ॥ १८ ॥ परषद जाणे मनमें ॥ सो० ॥ ए शुं बोल्यो राय के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सो० ॥ कहो किम तिहां जवराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहितो ए परजले सहि ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फरेय के ॥ ला० ॥ लूंटी धनने लेयशे ॥ सो० ॥ यमनुं मसलूं करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥ आगें तो नृप जाणतो ॥ ॥ सो० ॥ मिनि कंकण पहेर्यां केदार के ॥ ला० ॥

पण काम पडे मीनी मुषकने ॥ सो० ॥ मुब्ने मिश करे संहार के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ए दृष्टांत ते नृपें कस्यो ॥ सो० ॥ मांड्यो बिडानो ए पास के ॥ ला० ॥ कोइकनी ते फरी दिशा ॥ सो० ॥ लुसी मुसी लेशे तास के ॥ ला० ॥ २२ ॥ इम समझी मनमें रही ॥ ॥ सो० ॥ सहु परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ स्वर्गे मटा मट जोइ रही ॥ सो० ॥ पण उत्तर कोइ न देय के ॥ ला० ॥ २३ ॥ तव नृप बोल्यो घरकीने ॥ ॥ सो० ॥ ए तो लमणे भ्रकुटी चढाय के ॥ ला० ॥ ग्रास खाउ तुमें अम तणा ॥ सो० ॥ हवे बेगा कान ढलाय के ॥ ला० ॥ २४ ॥ जो अम ग्रासनो खप करो ॥ सो० ॥ तो तुमें ग्रहो बीडुं एह के ॥ ला० ॥ नहितर को मारग ग्रहो ॥ सो० ॥ अन्य मूलकनो होय जेह के ॥ ला० ॥ २५ ॥ इणि परें नरपति बोलियो ॥ सो० ॥ थरकी परखद त्यांहि के ॥ ला० ॥ चमक्यां सहुनां शीश ते ॥ सो० ॥ नृप मूकशे बे यम ज्यांहि के ॥ ला० ॥ २६ ॥ मावित्र द्ये दुःख बेरुनें ॥ ॥ सो० ॥ कहो तस कुण राखणहार के ॥ ला० ॥ वाड जो गलशे चीभडां ॥ सो० ॥ किहां होवे तास पुकार के ॥ ला० ॥ २७ ॥ हवे सुणजो जवियण

तुमें ॥ सो० ॥ जे बोलशे मंत्री काल के ॥ ला० ॥ ए कहि लब्धि उठी सही ॥सो०॥ ए तो त्रीजा उल्ला सनी ढाल के ॥ ला० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर लहि कालसेन ते,बोल्यो तव कर जोडि ॥ अरज सुणो प्रनु माहरी, कहुं तुम आलस छोडि ॥ ॥ १ ॥ यम नोतरवा नाथजी, बीडुं ग्रहावो जेह ॥ देखत मरवा कुण ग्रहे, मरणनुं बीडुं एह ॥ २ ॥ गोरनुं बीट जे नवि लहे, शुं जाणे ते यम्म ॥ गज गाखर जंबुकशिरें, नाखी स्वामि तुम्म ॥ ३ ॥ देव रूप जे मानवी, छे तेहनां ए काम ॥ शुं जाणे शश क्रीडलां, यम राजानुं गाम ॥ ४ ॥ आगें काम सुधा रियां, लंका केरां जेह ॥ ते जाशे यम तेडवा, हरि बल छे गुणगेह ॥ ५ ॥ साहासिक शिरोमणी, सघ ले कामें सज्ज ॥ वीरबल केरो पुत्रडो, ते करशे तुम कज्ज ॥६॥ इणि परें परखद देखतां,महा डुष्ट ते काल॥ शीशथी चरण उतारीने, दूर रह्यो ते व्याल॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥काली ने पीली वादली राजिंद ॥ए देशी॥ हवे हरि बलने नृप कहे, लाला सांजल जीवन गुज्ज ॥ यमरा

जाने तेडवा, लाला सोंपुं ए बीडुं तुज्क ॥ १ ॥ पंथी डा रे यमपंथ पंथें वहे तुं वेगें हो प्यारा लाल ॥ ए आंकणी ॥ माहरुं काज सुधारवा, लाला तुज्क विण बीजुं न कोय ॥ स्वारथीया सहु को मल्या, लाला रोटीतोडा तुं जोय ॥ २ ॥पं०॥ जगदीश जेहमें साच छे, लाला पाले ते निजवेण ॥ परडुःख जांगे जे पल कमें,लाला साचा कहियें ते सेण ॥ ३ ॥ पं० ॥ वयण विलुद्धां मानवी, लाला अगनी जंपे समशान ॥ दो पखें उज्जल दाखवा, लाला तन मन करे खुरबान ॥ ४ ॥ पं०॥ शिर उंढे एक वयणथी, लाला रूडी जूंफी गाल ॥ सुख डुःख न गणे मन्नमें, लाला वयण तणा प्रति पाल ॥ ५ ॥ पं०॥ श्रेणिक ज्युं वयणें करी, लाला पर णावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने, लाला कीधो जमाइ जीय ॥ ६ ॥ पं०॥ तेमाटे हरिबल तुमें, लाला बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदिं पांचम लगें, लाला तेडी यम घरे आण ॥ ७ ॥ पं० ॥ इम नृपवाणी सां जली, लाला हरिबल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाला तो न रहे मुज्क मान ॥ ८ ॥ पं० ॥ जा मगरी सलगाडीने, लाला डुष्ट रह्यो ते दूर ॥ जरी गोलिमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ ए ॥

॥पं०॥ कोइक नवनो नीमज्यो, लाला मंत्री वैरी व्या
ल ॥ मरणनुं बीडुं ग्रहावतां,लाला कीधो महोटो जंजा
ल ॥ १० ॥ पं०॥ तो शुं थयुं प्रभु माहरो, लाला जो
छे पाधरो तेह ॥ तास पसायें कालने, लाला जीव
थी टालुं छेह ॥ ११ ॥ पं० ॥ तो मुजरो खरो माह
रो, लाला जग सर चाले वात ॥ महिषी नीत ते म
हिषीने, लाला पाईने करुं ख्यात ॥ १२ ॥ पं० ॥
एम विचारी चित्तमें, लाला हरिबल उठ्यो त्यांहि
नृपने प्रणमी हाथशुं, लाला बीडुं ग्रह्युं ते उल्लांसि [illegible]
॥ १३ ॥पं०॥ तव परजा कर जोडीने, लाला विनवे
त्यां महिनाथ ॥ हरिबलने उगारीयें, राज बांह करी
दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण वि
शेषें मानो हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी
कीडी उपरें, राज तृण पर [illegible]कगार ॥ ते उखा
णो नाथजी, राज मैलो ते[illegible]र ॥ १५॥रा०॥ ए
परदेशी प्राहुणो, राज [illegible] वायु झकोल ॥ आप
णी नगरी जमाडीने, [illegible]राज देखाड्यो रंग चोल
॥ १६ ॥ रा० ॥ ते नरने किम दूवियें, राज गुण ग
ण रयण करंभ॥ देव करीने पूजीयें,राज होवे लाभ अ
खंभ ॥ १७ ॥ रा०॥ ते माटे तुमें नाथजी, राज दी

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मागे एतुं मान ॥ १८ ॥ रा०॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांछशो, राज करशो काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना माल जे, राज खाता हशो तुम जेह ॥ ते किम पाछा देयशो, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा०॥ तव नृप रीष चढाइने, राज बोल्यो भृकुटी चढाय ॥ ... अणबोली परज ते, राज समजो नही तुमें काय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा छानी रहि, राज समजी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, राज सुगुणने करशो आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ये नृप पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २३ ॥ रा० ॥ ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ विलखी थइने परज ते, राज उठी मन उलजाय ॥ ॥ २४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां लोक अनेक ॥ टोलें टोलें सहु मली, राज करतां वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केताइक मानवी, राज नृप बिगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हरिबल उपरें, राज ते लालचथी द्वेष ॥ २६ ॥ रा० ॥ कहे केता

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूठी ते करे, राज काग परें ते उच्छिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि बलने डुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ठे पाधरो, राज मटशे डुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांजल तुं मुज जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव हरिबल बोल्यो हसि, सांजलो स्वामी सूल ॥ कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रभु, पाठो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठ्यो तुरत, हरि बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी, जावुं बे सहि इख ॥६॥ नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं बे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें बो चक्कु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी, लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अबूं, तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो पुण्य कयब ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा जक्ति प्रजावना, करजो रहि साव धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जिनधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्क दो, राखजो निज गृह जर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, निज नारीने कीध ॥ पंथ जणी संबाहिने, गमन जणी पग दीध ॥१२॥ पिशुनां वयण ते सांजली, नारी दो अकुलाय ॥ जाणे रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्बाय ॥१३॥

॥ ढाल आठमीं ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि नारी तदा, पन्नव पिशुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें गाह रे, म करो मरणनो राह रे, बो प्रीतम सुख गाह रे, लीजें जोबन लाह रे, होवे ज्युं नारी उबाह

रे, होवे गजबनो घाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥१॥ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह विहूणी ते नारीने, न गमे वात सोह्नाह रे॥ जीवित सुधी धरवती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें दाह रे, विरहनी जाल असाह रे ॥ पीडे मदन अथाह रे, न रही. शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए सुख मंदिर मालियां, जरियां बे धन धान्य रे ॥ कंत विना.ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे,इम स्त्री विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दैवने, श्यो तुऊ कीधो अपराध रे, विण खूने मुऊ कंतने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध रे, काढि ते को जवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख महिपुत्री पडो,जेह पाडे बे वियोग रे॥ गण्या दिनमां ते नाथजी, कां नथी लेतो बलिजोग रे, जाये सघलाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे,जाणे ज्युं सघला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोगणी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते बाफ

मां, सीझी रहे तनसार रे, होवे बबूलाकार रे, खावे धावे ते ठार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे शकुन श्रीकार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन ते नार रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं, ध्यान रहे तस जीव रे ॥ तंडुलमच्छ परें कर्मने, बांधे निकाचि सदीव रे, शमतारस नवि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन आजीव रे, चिन्ह ए विरही लहीव रे ॥ ७ ॥ प्री०॥ एणि परें प्यारी कंतने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वरसती, जाणे नाद्रव मेह रे, रहो प्रीतम तुमें गेह रे, म दहो सुरंगी देह रे, नोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी रेह रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ हरिबल कहे दोय प्यारीने, नांखी अमृत वाण रे ॥ म करो मन कोइ सोच ना, तुमें ठो जीवन प्राण रे, आंखनी कीकी समान रे, पण ठे नृपनी ते आण रे, बीडुं ग्रह्युं में ते जाण रे, होवे ज्युं कोडि कल्याण रे, तुमें ठो घरना मंमाण रे, म करो खांचा ए ताण रे, अमें बुं पंथी केकाण रे, करवुं शीघ्र प्रयाण रे ॥ ए ॥ सांजल गोरी रे मा हरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मही चालीयो, रोती मूकी ते नार रे, नृपनुं वयण ते पालवा, आव्यो

वहि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, कहे मन्त्री ति
णि वार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे, म करो ढील
लगार रे, सुणी नृप चित्त मझार रे, पाम्यो हर्ष अपा
र रे, तेडाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥
॥ १० ॥ सां० ॥ हरिबल बले नृप कारणें ॥ ए आंक
णी ॥ अगर चंदन काठना, रचना चयनी ते कीध
रे ॥ सुगंध द्रव्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध
रे, जाणे रमणी ने रिद्ध रे, प्रभुयें मुझने ते दीध रे,
थइ मुझ पुण्यनी वृद्ध रे, आजथी वंछित सिद्ध रे ॥
॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिबल चय सुधी आवीयो, पहेरी
वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें भूषण शोभतां, पहेर्यां झाक
झमाल रे, कीधां तिलक ते भाल रे, करमां श्रीफल
जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते जा
ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
ण समे सागर देवतां, हरिबल समरे ते चित्त रे ॥ तत
क्षण जलनिधि नाथजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे,
जाण्यां सयल चरित्त रे, बोल्यो सुर थइ मित्त रे, हरि
बल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिबल सम
कर्युं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, बेगो चयमें ते

चूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मल्ली अनूप रे, हरख्यो मंत्री ते नूप रे, पण ते पडियो नवकूप रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सघ ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल निधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन कोइनां धीर रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ होमी काया ते जालमें, चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे, रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलता नी जाल ते, लागी नन्न लगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नन्न ते थकी, दीसे कालो ते धोट रे, रविरथने पण दोट रे, दीधी जालें ते फोट रे, थयो रवि आकरो नोट रे, वरुणें अरुणनो उट रे, वरसे अगनीनो गोट रे, थयो ते दिनथी तपकोट रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ इणि परें वैक्रिय रूप ते, हरिबलनुं करी त्यांहि रे ॥ कारिमो हरिबल जालियो, जोतां खिण एकमांहि रे, नस्म करी सहु साही रे, जन कहे मांहो मांहि रे, थयो अक राकर ज्यांहि रे, रहेवुं न घटे ते आंहि रे, देखत अ

न्याय थाहि रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ जस्म थइ जे चिता तणी, छांटी जलशुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी जस्म ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढयुं शल्य ते आय रे, रमणी रिद्ध दो आय रे, हवे मुफ वंछित थाय रे, वाहवा मंत्रीनुं न्याय रे, नली तें बुद्धि उपाय रे, इम जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां लोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखर मरवुं सहु कोय रे, शुं लेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा नवि होय रे, जावुं मूकीने सोय रे, शुं कीधुं तें जोय रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ पुरजन सहु वल्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्मीजन धर्म रागथी, हरिबलनुं दुःख लेय रे, कीधा उप वास ते केय रे, व्रत पच्चख्काण धरेय रे, केहि जप माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंछित सुख लहेय रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि बल कीधो अलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां छे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा नलनी गइ हूंफ रे, थयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

इंड ज्युं कप रे, त्रीजा उल्लासनी चूंप रे, आठमी ढाल अनूप रे,लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥२२॥ह०॥

॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनशुं थइ सुप्रसन्न ॥ हरिबल मूकी मंदिरें, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥ जो जो नवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ देशें परदेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह नव परनव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ नेद कह्या नव पुण्यना, ठाणंगसूत्र मझार ॥ इव्य नावथी सां धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य सखायी ठे, तस घर लीलविलास ॥ शक्रपरें थइ नोगवे, रमणि रुद्धि सुवास ॥६॥ इम जाणी नाविक तुमें,नि सुणी पुण्य प्रनाव ॥ हरिबलनी परें साधजो, प्रगटे. पुण्यरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें बेसी करि, तरीयें नव दधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीयें शीर ॥ ८ ॥ परतख देखो पारिखुं, लोक कहे आख्यात ॥ पोसानुं परतखपणुं, दल पामे परनात ॥ ए ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ माहारी सहि रे समाणी ॥ ए देशी ॥ पांचे नेदें दान प्रकाश्युं, केवलीयें जे आख्युं रे ॥ नवि ते पुण्य कहियें ॥ साते खेत्रें जे ड्व्य वावे, सुकृत करणी उपावे रे ॥ १ ॥ न० ॥ श्रीजिन मंदिर बिंब नरावे, पुस्तकें ज्ञान लखावे रे ॥ न० ॥ साहामीवब्बल नाव धरीने, जे करे चाह करीने रे ॥ २ ॥ न० ॥ श्रीजिनकेरी नक्ति करेवा, डुःकृत पाप हरेवा रे ॥ न० ॥ वध बंधनादिक जीव छोडावे, करुणा आणी नावे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे करे निर्मल गात्रा रे ॥ न० ॥ परियागतनां नाम रखावे, संघवी तिलक धरावे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तप जप संयम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरियादो रे ॥ न० ॥ नय विवहारथी व्रत पच्चरकाण, जे करे चतुर सुजाण रे ॥ ५ ॥ न० ॥ इत्यादिक शुन्न करणी नांखी, सघली ए पुण्यनी साखी रे ॥ न० ॥ ड्व्यथी नावथी जे करे करणी, ते नरे पुण्यनी नरणी रे ॥ ६ ॥ न० ॥ ड्व्य स्तवथी बारमे स्वर्गें, उपजे सुर उपवर्गें रे ॥ न० ॥ नाव स्तवथी केवल नाणी, थइ वरे मुक्ति ते प्राणी रे ॥ ७ ॥ न० ॥ ड्व्यथी आशी पणे जे करणी,

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे नावथी करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ८ ॥ ज०॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जिणंदा रे ॥ज०॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम पदवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते नव सिद्धि जिनवर नांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दानव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे रे ॥ १० ॥ज०॥ अष्ट माहा जय कदिय न देखे; निर्नय सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपड्व रोग न होवे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे सघले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥ सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, हुआ ते पुण्यरा नावा रे ॥१२॥ ज०॥ ते नावाथी नवोदधि तरीया, उपशम रसथी नरीया रे ॥ज०॥ अभ्यंतरनी गांठ विछोडी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ सवा कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥ ॥ ज० ॥ श्री नरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते नेहें रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो, शालिनड्र नोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान प्रनावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ ज० ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, नवि ल्यो ते गु
ण चूणीने रे ॥ ज० ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धां
तें, नवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ गुरु
उपदेश सुणीने नवियां, जुउ हरिबल चित्तमें ठवि
यां रे ॥ ज० ॥ तो ते जीवदयाने प्रनावें, मन वं
छित फल पावे रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीवदयाथी दधि
पति मलियो, दुःख दोनागथी टलीयो रे ॥ ज० ॥
रमणि रूद्धिनो थयो नुगतारी, चिहुं दिशें लाज वधा
री रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
थयो शुद्ध समकितधारी रे ॥ ज० ॥ गुरु उपदेशें
जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९ ॥ ज० ॥
देव प्रनावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी मुष्टी रे ॥
॥ ज० ॥ कारिमो हरिबल जलतो देखाडी, निजगृह
मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ ज० ॥ गुप्त रहे निज ना
री दो संगें, सुख विलसे ते अनंगें रे ॥ ज० ॥ निज
मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे द्रव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
॥ ज० ॥ नृपजन जाणे मह्यो न जीवे, यममंदिर
जइ रीवे रे ॥ ज० ॥ पण हरिबलने पुण्य प्रमाणें,
जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ हवे तुमें
सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

॥ भ० ॥ पुण्य प्रभावथी अतिहे विशाला, होशे मंग लमाला रे ॥ २३ ॥ भ० ॥ शुद्ध परंपर सोहम स्वा मी, हुआ मुक्त अंतरजामी रे ॥ भ० ॥ तस पाटें गु रु हीर सूरिंदा, उपजे तेज दिणंदा रे ॥ २४ ॥ भ०॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, निशिदिन भरे पुण्य उरी रे ॥ भ० ॥ तस शिष्य धनहर्ष ज्ञानना दरि या, कवि जनमें अनुसरिया रे ॥ २५ ॥ भ० ॥ तस शिष्य कुशलविजय कविराया, जैनमारग दीपाया रे ॥ भ० ॥ तस लघु बंधव आज्ञाकारी, कमलविज य जयकारी रे ॥ २६ ॥ भ० ॥ तस शिष्य लक्ष्मी विजय गुणगेही, श्रुत चारित्रना नेही रे ॥ भ०॥ तस शिष्य केशर अमर दो भ्राता, पंडित जनने विख्याता रे ॥ २७ ॥ भ० ॥ तस पद किंकर लब्धि कहावे, ह रिबलना गुण गावे रे ॥ भ० ॥ उत्तम नरना ते गुण गातां, बांधियें पुण्यना खातां रे ॥ २८ ॥ भ०॥ त्रीजो उल्लास कह्यो ए पूरो, नव ढालें ते सनूरो रे ॥ भ०॥. लब्धें कही ए वारता मीठी, जेहवी शास्त्रमां दीठी रे ॥ २९ ॥ भ० ॥ इति श्री जीवदयापरे हरिबलच रित्रे पुण्याधिकारे तृतीय उल्लासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ उल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिएंद ॥ दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख वृंद ॥ १ ॥ तस पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परभात ॥ केवल कमला पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा नमुं, विनवुं बे कर जोडि ॥ मुझ मन मंदिरमें वसी, पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मच्छी रायनो, प भणुं चोथो उल्लास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते सुणजो इक मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, होवे पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल कीधो छार ॥ काढयुं शल्य जीवित लगें, उपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुझ अपछरा, प्रभुयें दीधी हत्थ ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुझ जीवित सुकयत्थ ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥ वज्री सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ए ॥ को नवि जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी आश ॥ रज

नी थइ घडि दो समे, पहोतो मन्त्री आवास ॥१०॥ दूरथी नृपधणी आवतो, वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी निजकंतने, हरिबलगृहमें पइठ ॥११॥ एटले महिपति आवियो, दो नारीनी पास ॥ कुमरी तव उठी तुरत, आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी दो जनी रही, कारिमो करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महिनाथने, केम पधार्या स्वाम ॥ ते कारण मुझने कहो, खोली मन अभिराम ॥ १४ ॥ हमणां पियु गयो यम घरे, राखवो लोकाचार ॥ अध्यवसाय जे मन तणा, कही पहोंचो दरबार ॥१५॥ मुज मंदिर स्वामी तुमें, आव्या छो महाराय ॥ पण पाेशीने घर वाघ लो, कहो ते केम समाय ॥ १६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव हरखित थइ राजवी रे, बोल्यो ते मदनवेग ॥ विषयी वसुधाता ॥ कोइक पुण्यना योगथी रे,थयो तुमशुं शुभ नेग ॥ १ ॥ वि० ॥ जव आव्यो हुं मंदिरें रे, तुमचे भोजन काज ॥ वि० ॥ मोहनी लागी ते थकी रे, ते जाणे जिनराज ॥ २ ॥ वि०॥ जगमां छे नारी घणी रे, पण

तुमची नावे जोड ॥ वि० ॥ तुम सुघडाइ देखीने रे, वाध्यो मोहनो गेड ॥ ३ ॥ वि० ॥ ते दिनथी नवि वीसरो रे, दो नारी तुमें चित्त ॥वि०॥ जीव रहे चरणे बुजें रे, तुमचे अविहड हीत ॥ ४ ॥ वि० ॥ ज्युं धरे ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरुं तुमचो ध्यान ॥ वि० ॥ सास उसासमें सांजरो रे, शत वार तुम गुण थान ॥ ॥ ५ ॥ वि० ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आव्यो हुं धरी हूंश ॥ वि० ॥ एहमां जूठ न जाणजो रे, सत्य कहुं तुम सूंस ॥ ६ ॥ वि० ॥ कांइ न करशो शोचना रे, चतुर तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस सांजली रे, द्यो मन सुख अभिराम ॥ ७ ॥ वि० ॥ तन धन जोबन पामीने रे, लीजें मनुजव लाह ॥ वि० ॥ पामी अवसर चूलशे रे, तस रहेशे दिल दाह ॥ ८ ॥ वि०॥ यौवनकथ सुख पामीने रे, जे नही माणे पूर ॥ वि०॥ वननां कुसुमं तणी परें रे,ते रहेशे मन जूर ॥ ॥९॥वि०॥ जीवित सूधी तुम तणुं रे;पालशुं निशिदिन वेण ॥ वि० ॥ हरिबलनी परें राखशुं रे, तन मन करीने सेण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम अम वचें कोइ वातनो रे, वहेरो न राखियें कोय ॥ वि०॥ मुज मन प्राणनि कुंजमें रे, राखुं तुमने दोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ माहारी

छती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥
जो तुमें आपशो हेतशुं रे,ते सही जमशुं अम्म॥१२॥
वि०॥ कोइ वातें डुहवुं नही रे, माहरी करीने जी
ह ॥ वि० ॥ सवलुं कमल हर्दे धरी रे, नाव रह्यो
मुज गीह ॥ १३ ॥ वि०॥ इम नारी दो आगलें रे,
नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो
रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
॥ वि० ॥ कामें केइ नर छेतख्या रे, कहेतां नावे पार ॥
॥ वि० ॥ काम वशें मल कूपकें रे, पड्यो ललितांग
कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे,
सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
पहोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूड्या
बापडा रे, कुण ते रांक ने ढीक ॥१८॥ वि० ॥ उत्तम
मध्यम गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
नारीनां जोडलां रे, गावे उछव गाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
कामिनी कामना कूपमें रें, बूड्यो सहु संसार ॥
॥ वि० ॥ केवलरयणने खोलवा रे, दीठो कामकुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, खली चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुउ श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली बत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस गाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंदा कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धाखना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मकार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥ तो शो मदनवेगनों रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवमें रे, जे रह्या कामथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि सांजलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांभली, बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महोटी मतिना छो धणी, ए शी कीधि अकल्ल ॥ विण तेडे स्वामी तुमें, आव्या थइ बेकल्ल ॥ २ ॥ एम न कीजें नाथजी, छोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें, नवि पेसीजें झत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम छे लंछनुं, जेहमें लांगे लार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे सार ॥४॥ परणी घरणी जे हुवे, तेहने चढावो पाड ॥ खाशो ते खमशो प्रभु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥ परदुःख भंजन राजवी, ए छे तुम्म बिरुद ॥ परनारी सहोदरु, ते किम छंम्यो हद्द ॥६॥ हुं परजा अमें तुम तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण घटती ए वातडी, केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी, तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल कहे, जे निज दुःखनी राड ॥८॥ आबला जाणी ए. कली, जाण्युं ते मारवी मछ ॥ शुं जाणीने आवीया, लेवा रमणी रुछ ॥ ए ॥ कंत विहूणी कामिनी, जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुझ मनडुं हाथ छे, तेणें हुं सपराण ॥१०॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

हैय्युं हाथ ॥ काम हुवे तो चिहुं दिशें, जइयें धिंगा साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कंतने, मूक्यो जम घर अज्ज ॥ वली शुं करवा आवीया, थइ नकटा निर्लज्ज ॥१२॥ तुमें तो म्हारा तात बो, एवा म कहो बोल ॥ सो वातें एक वातडी, सती न चूके तोल ॥ १३ ॥ एहवां वयण तें सांजली, प्रगटी नृपने जाल ॥ क्रोधानलनी बाफमां, सीझि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुं तो पाधरुं बोल शीपाइडा ॥ ए देशी ॥ तव खीज्यो नृप नराडो, जिम आगें हाथी हराडो, बोल्यो थइ लाडो रे, दो कुमरीशुं रोष धरी खरो ॥ तुमें सांजलो दोय सहेली, तुम लेखवुं मोहनवेली, चालो थइ वेहेली रे, मुज मंदिर महेल मूकी परो ॥ १ ॥ तुमें पाधरुं बोलो राजनजी, तुमें वांकुं म बोलो राजनजी, नारी पीयारी रे, राजनजी थाहरी को नही ॥ सेना विहूणी जाणी, पण मनेथी हुं संपराणी, नांखे इम वाणी रे, दो कुमरी नृपने मुखें रही ॥ २ ॥ तु० ॥ तुम मन तो रहेशे दूरें, अम जाण्युं याशे सनूरें, नांखे मद पूरें रे, नृप कामातुर थइ घणो ॥ नृप आकुल व्याकुल थाय, जिम जल विना मछ तडफाय, देखी तव

थाय रे, दो कुमरीनुं रूप सोहामणुं ॥ ३॥ तु०॥ वली जंपे ते मल्लिनाथ, तुमें सांजलो कुमरी साथ, कुंची तुम हाथें रे, मृगनयणी दीधी में आजथी॥ तुमें कहे शो ते विध करशुं,तुम आतमकमलमें धरशुं, मन सुख वरशो रे, मारी मृगानयणी लाजथी ॥ ४ ॥तु०॥ तव जंपे कुमरी वयणां, तुमें सांजलो नरपति सयणा,दूष दशुं रयणां रे,राजनजी नहीं जांगे सही ॥ ए तो जो फरे पृथिवी सारी, ए तो जो फरे ध्रुनी तारी, तो पण नारी रे,नरपतिजी न फरे सती कही ॥५॥तु०॥ तव जंपे महिपति एम, बल बांधो मुऊशुं केम, कहोजी ते जेम रे,बल बांधो बो ते शे गजे॥ तव कुमरी बोले ह सती, नृप सांजलो कहुं तुम रसती,राखो मन वसती रे, महिपतिजी प्रजु सहु जजे ॥६ ॥ तु० ॥ फरी जंपे वली नृप ताम, नथी प्यारी हवनुं काम, जोरें करी धामें रे, मुऊ मृगानयणी ले चलुं ॥ तव शुं करो तुमें इहां जोरो, तुम नाखुं तोडी तोरो,शुं ते बल फोरो रे, मुऊ आगल गोरी केटलुं ॥ ७ ॥ तु० ॥ तुम प्रीतमने करी कपटें, में बाल्यो अगनी ऊपटें, तो शुं मन लपटे रे, कंरी बारने जल शरणें करी ॥ मुऊ दासीने दीधो मार, मुऊ नूषण राख्यां सार, नाख्यां मुऊ लारें रे,

तव में ए दाफ काढी परी ॥ ८ ॥ तु० ॥ मुक आगल. हवे किहां जाशो, तुम करणी तुमेंहिज पाशो, मा ऊ घणुं थाशो रे, जिम तस्कर संधि मुखें ग्रहे ॥ जो मुकने करशो राजी, तुम राखिश अहोनिश ता जी, रहेशो तुमें गाजी रे, अगंजी मुक चित्तशुं वहे ॥ ॥९॥ तु०॥ अहि आगें मेडकुं जेते,हरि आगें मृग जाय केते,जाय कहो केतें रे,बाज आगें चडकली दोडीने॥ति म तुमेंहीज नामिनी नोली, तुमें रहेशो आंख्यो चोली, जाशो किहां रोली रे, मुक आगलें डिंग ते छोडीने ॥ १०॥तु०॥ तव कुमरी नांखे बोल,नृप दीसो छो फूटा ढोल,निगुण निटोल रे,वडा दीसो छो कोइ तुमें ॥क हे कुमरी रीषें नंनेरी, जिम कूदे कच्छी वछेरी, नाखुं नस वेरी रे, नरपतिजी हुं अबला अमें ॥ ११ ॥ तु०॥ के शुं नृप हियडो फूटो,के शुं तुम जगदीश रू छो, के शुं कांइ खूंटो रे, तुम सासोसास हतो जिके ॥ तुमें शुं नृप आप वखाणो, तुमें अबलाशुं मत ताणो, अबलाथी जाणो रे, केइ हाख्या नर बलीया तिके ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुमें सुणो परदेशी राजा, जे हनी हती महोटी माजा,तेहनी ते नार्यो रे, सूरीकं तोयें नख देइ हण्यो ॥ वली जितशत्रु मल्लिनाथ, हतो

परजनी महोटी आथ, राणीयें नरी बाथ रे, पियु ना ख्यो जलनिधिमें सुण्यो ॥ १३ ॥ तु० ॥ ए तो इत्यादिक नर बलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो शुं तमें बलीया रे, अम आगल नरपति शुं बको ॥ अम चरित्रथी को नवि जीत्यो, त्रीजगने नाख्यो चीतो, सुर नर खूतो रे, स्त्री आगल को नवि जक्यो ॥ १४॥ ॥ तु० ॥ सिद्ध साधक जे होय जाण, तेहनां अमें चुकवुं गाण, एकादश गुणगणें रे, अमें पाडुं तिहांथी नरजणी ॥ अमें जातें बुं स्त्री नूंझी, अमें चालती नरकनी कूंझी, बुं अमें हूंझी रे, ए तो चालती नव दंझक तणी ॥ १५ ॥ तु० ॥ तेमाटें नृप तुम आखुं, अमें कूडुं कदिय न नांखुं, चपटीमें नाखुं रे, ऊमाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतोय न चुकुं गाढुं, अमें दीगे ते आ राढुं, बीजो न चाढुं रे, नरपतिजी सुरगिरि जो पडे ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम करवुं होय ते करजो, धन लेई पोतुं नरजो, पण में तुम वरज्यो रे, ए तो पहेलां दासी आवी हती ॥ तव में तस काढी कूटी, जिम घरथी हांझी फूटी, दासीने में जूंटी रे, में मूकी तुम घर दी ठते ॥ १७ ॥ तु० ॥ तुम असिबल म्यानमां राखो, तुम बल तुम स्त्रीने

दाखो,बांधी मूठी राखो रे, नरपतिजी मत छेडो कोइ ने ॥ तुम कुल मरजादायें चालो,जिम सुखें मंदिरमां मालो, मूको तुमें ख्यालो रे, नरपतिजी परस्त्री जोइने ॥ १८ ॥ तुं० ॥ तव सांजली नरपति कोप्यो, क्रोधारुण अग्निमें रोप्यो, कामें करी लोप्यो रे,नृप विरहानल दाझी गयो ॥ तव नृपनी डुर्मति हाली, मुख कुमरीने कर झाल, कीधी नृपें काली रें, दो कुमरीशुं द्वेषी थयो ॥ १९ ॥ तु० ॥ तव कुमरी रोषें दाधी, नृपने तिहां काढयो बांधी, झकडबंध बांधी रे, नृप नाख्यो उंधे मस्तकें ॥ दे गडदा पाटु प्रहार, करे मुद्गरना प्रहार॥ दासी मली मारे रे, ए तो नृपने जबड जस्त के ॥ २० ॥ तु०॥ नृप पाडे बहुली चीस, कहे तोबां मुख जगदीश, कुमरी ते रीषें रे, ए तो नृपना पाड्या दांतडा ॥ वली त्रोडे नृपनी मूछ, फल लेतो जा तुं तुछ, कुमरी दो पूछे रे, नृप किहां गयुं बल तुमें जातडा ॥ २१ ॥ तु० ॥ ए तो कुमरीयें नृपने रांक, कस्यो पूरो कुंदीपाक, काने पडी धाक रे, सुनकारें नृप चढयो हेडको ॥ कुमरी हणे नृपने तमाचे, तेतो हरिबल केरी साचें, गारुडीथी नाचे रे, ए तो फणिधर माथे देडको ॥ २२ ॥ तु० ॥ नृपने कस्यो

घणो उपसर्ग,नृप जाणे पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गें रे,नृपपाणी उतारयुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप बोल्यो मान संकोडी, मूको मुज छोडी रे, हुं आज थी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प रजात, जाणी धीवरें सघली वात, मछीनी जाती रें, हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीठी रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ २२ ॥ तु० ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥ झल्लरिना झणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥ दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ पराधी तुम तणो, तुं मुज बंधन छोड ॥२॥ हुं मूरख तुमशुं थयो, सतीशुं घाली बाथ ॥ जेहवी करि ते हवी लही,वृद्ध पणानी आथ ॥३॥ जाणशुं तो घणी ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि. म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाधरो नेत्र ॥ ५ ॥ सतीयोने डुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥ ते तुमें खमजो मातजी,हुं छुं तुम सुत साध ॥६॥ इत्या

दिक वचनें करी, रीझवी कुमरी दोय ॥ बंधनथी छो
ड्यो परो, मदनवेग नृप सोय ॥ ७ ॥ गुप्त पणे नृ
प तिहां थकी, आव्यो निज गृह मझ ॥ मुख पो
थावी आवियो, निगुण थइ निर्लज्ज ॥ ८ ॥ जिम
कोठीमें मुख घालीने, रोवे तस्कर मात ॥ तिमं नृप
रोवे मन्नमें, जे लह्यो प्रछन्न घात ॥ ए ॥ जाएयुं हतुं
सुख मालशुं, दो प्यारीनी साथ ॥ लेणेंथी देणे पडी,
खाली पडी नरी बाथ ॥ १० ॥ जे नर मूरख बापडो,
देखी परायो माल ॥ लेवा जाये दोडीने, ते थाये पें
माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने थइ, मनमें रह्यो
फूर ॥ मुख दीवाली दाखवे, वहे मन होलीपूर
॥ १२ ॥ रमणीथी मन वालीयुं, मूकी ममता दूर ॥
राज काज नृप चालवे, दिन दिन चढते नूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धण समरथ पियु नानडो ॥ ए देशी ॥ हवे कुम
री दो कंतने, कहे कर जोडी सुणो सुलतान ॥ सजनी
नृपने काढयो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥१॥
सांजलो प्रीतम माहरा, तुम परसादें वाध्युं जोर ॥
ढिंक पाटूना प्रहारथी, मजबुत काढयो ज्युं करी ढोर ॥
२ ॥ सां० ॥ जीवित लगें नृप जाणशे, खटकशे नि॰

दिन काळजे साल ॥ निराशी थइ दीन ते मारनी, पूंजी ले गयो माल ॥ ३ ॥ सां० ॥ साजी हळदर फट कडी, सेववी पडशे मास बे चार ॥ मम्मइ अशेलीयो, खाशे त्यारें थाशे करार ॥ ४ ॥ सां० ॥ इत्यादिक श्रवणें सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥ सुकुलीणी साची तुमें,पणधारी में दीठी सुजाण ॥५॥ सांभलो प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें बो आत म जीवन प्राण ॥ आंखनी कीकी बो तुमें, तुमें बो महोटां घरनां मंमाण ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुलवधूनां ए चिन्ह बे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥ कष्ट पडे कें इ जातिनां, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ ७ ॥ सां० ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथी वरशे जग ज ल धार ॥ सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य आधार ॥ ८ ॥ सां० ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी, सत्यथी शशि रवि चाले आकाश ॥ पृथिवी पण फ ले सत्यथी, वणसइ भार अढार उल्लास ॥ ए ॥ सां० ॥ वणज व्यापार चाले बहु, हुंमी चाले देश प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कह्युं सत्य विशेष ॥ १० ॥सां०॥ केवली केवल सत्यने,त्रिगडे बे ठी करेय प्रकाश ॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य बे,सत्यथी पामे

ज्योति निवास ॥११॥सां०॥ नर नारी सोहे सत्यथी, सत्यथी माने सहु संसार ॥ सत्यथी चूके जे मानवी, नव दंफक लहे ते निरधार ॥ १२ ॥ सां० ॥ शिरनामें लखे कागलें,साडी चम्मोतेर आंक जे दोय ॥तेहमें पण जन पंफितें, सत्य ठराव्युं लोकमे जोय ॥ १३॥सां०॥ सत्य मत गेडे मित्र तुं, चोगडे लच्छी चोगणी होय ॥ सुख डुःख रेखा दो कर्मनी, टाले पण नं टले होय ॥ १४॥सां०॥ इणि परें पण लौकिक मतें,सत्यथी पामे सुखनी रेख ॥ मानवी चूके जो सत्यथी,तो लहे डुःखनी रेखा देख ॥१५॥सां०॥ सतीया सत्त न गेडीयें, सत्त गेडे पत जाय ॥ सत्तनी बांधि लच्छी ते, आवे सन्मुख धाय ॥ १६ ॥ सां० ॥ नूदेव नामें द्विज थयो, तेणें न मूक्युं सत्य लगार ॥ दश दोकडा नृप दानथी, सत्यथी लह्यो ते अखुट नंमार ॥ १७ ॥ ॥ सां० ॥ धण कण कंचण पामीयें, ते पण सत्य तणी परनाव ॥ मनवंगित महिमा मिले, सतिय शिरोमणि शुद्ध सुनाव ॥ १८ ॥ सां० ॥ शोल सती थइ मोटकी, ते पण अद्यापी गवराय ॥ सत्य जो राखे आपथी, जिनवर ते पण सूत्रें चढाय ॥१९॥ सां०॥ त्रेशठ शिलाका पुरुष ते, सत्यवादी थया थाशे अने

क ॥ इम जाणी प्राणी तुमें, राखजो पूरो सत्य वि
वेक ॥ २० ॥ सां० ॥ इणि परें हरिबलें नारीने, सत्य
ऊपर देई दृष्टांत ॥ कामिनी दो हरखित करी, दंपती
मांहोमां हरखात ॥ २१ ॥ सां० ॥ सुखें समाधें दंप
ती रहे, निज मंदिर मांहे उच्छाह ॥ दो गुंडुक सुरनी
परें, पंच विषय सुख जोगवे त्यांह ॥ २२ ॥ सां० ॥
निज मंदिर रहेतां थकां, जब थयो पूरण एक मास ॥
तब हरिबल चित्त चिंतवे, निकलुं डिंगमें मनने उ
ल्लास ॥ २३ ॥ सां० ॥ नृपने ते जडी शीखडी, फरी
पाछी सर सांधे न सोय ॥ पण मंत्री काळसेन ते,
एणें कीधी ते न करे कोय ॥ २४ ॥ सां० ॥ जो जग
दीशनुं चाह्युं छे,तो करुं काळकंटकने दूर ॥ बाळी जा
ळी ते छारने, लेइ जइ नाखुं ते वहेते पूर ॥ २५॥सां०॥
विण अपराधें मो परें,अहनिशि करतो खेद अथाह ॥
नृपना कान जंजेरीने, मुजनें मूक्यो यमने गाह ॥
॥ २६ ॥ सां० ॥ तो हुं खरो ए मंत्रीने, नृपने हाथें
करावुं छार ॥ शल्य काढुं आखा जगतनुं, मो मननो
पण काढुं खार ॥ २७ ॥ सां० ॥ हणताञ्जुं हणीयें
सही, तेहनुं पाप न गणीयें कांय ॥ जेहवी देवी ते
हवी पातरी, एम उखाणो जगमां कहाय ॥ २८ ॥

॥ सां० ॥ ए मुझायें कामिनी, कालने बाल्यानुं छे का
म ॥ काल जूंभो छे संसारमां, कालथी बिगडे केहिनां
गाम ॥ २९ ॥ सां० ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, स
मस्यो सागरसुर उजमाल ॥ लब्धि कहे शुभ सत्यनी,
चोथा उल्लासनी त्रीजी ढाल ॥ ३० ॥ सां० ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल हरखें करी, समस्यो सागर देव ॥
तें पण ततखिण आवियो, कहो वच्छ किम समरेव ॥
॥ १ ॥ तव हरिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोछाह ॥
कालसेन कम जातिने, द्यो तुमें अग्निमांह ॥ २ ॥
शल्य काढो प्रभु माहरुं, जिम लहुं सुख भरपूर ॥ वि
ण खूने मुझने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब
लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल
केरी कांतिमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यां
बर पहेरी करी, पहेरी भूषण चंग ॥ दिव्य रूप हरि
बल तणुं, कीधुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासें
सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नभ मारगथकी उतरी,
आवि दो भेटे भूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लही,
हरखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया
बांह पसार ॥७॥ नृप मंत्रीने प्रगटीयुं, महोटुं दुःख

अपार ॥ जिम रोगीने दीजीयें, चांदा उपर खार ॥
॥ ७ ॥ हरिबलने बाली परो, जलमें नाखी बार ॥
ते किम पाबो आवीयो, कुशलें करि शणगार ॥ ए ॥
हरिबलने सही उलख्यो, मदनवेग ते राय ॥ आगत
स्वागत नृप करे, बेग प्रणमी पाय ॥ १० ॥ पूबे नृप
हरिबल प्रतें, कहो यमराजनी वात ॥ शी शी हकी
गत लाविया, कुण ए तुम संघात ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रंगरो रसीयो रे, फूल गुलाबरो हे सुंदर ॥ ए
देशी ॥ हवे हरिबल नृपने कहे, सांजलो प्राणाधार
हे ॥ जेहवी नीपनी तेहवी कहुं, तुम आगल सार हे
॥ १ ॥ रंगनी रे तमने रे, जांखुं ते सांजलो ॥ ए आं
कणी ॥ जव थइ करुणा तुम तणी, कीधो में अगनी
शुं प्यार हे ॥ तव तुम कारणें नाथजी, देही दही
करी बार हे ॥ २ ॥ रं० ॥ ततखिण तुम परसादथी,
पहोतो ए स्वर्ग मजार हे ॥ इंद्रपुरि श्रवणें सुणी, दी
ठी नजरें श्रीकार हे ॥ ३ ॥ रं० ॥ ते इंद्रपुरीना ना
थजी, केतां कीजें वखाण हे ॥ तेजें झलामल झल
कती, जाणे कोडी गमे ऊग्या जाण हे ॥ ४ ॥ रं० ॥
पंचरंगी रतने करी, बत्रीश लाख विमान हे ॥ लघु ते

जोजन लक्खनां, नवि नवि जातिनां जाण हे ॥ ५ ॥ रं० ॥ तेहमां एक विमान छे, पण चउलक्ख प्रमाण हे ॥ को रणी धोरणी शी कहुं, सोहमवासीनुं गाण हे ॥ ६ ॥ रं० ॥ तेह विमानें शोजतां, छे महोटां चउ द्वार हे ॥ तेहमें द्वार दक्खिण दिशें, छे तिहां यम दरबार हे ॥ ७ ॥ ॥ रं० ॥ स्वर्गपुरी हुं इणि परें, जोतां महोटां मंमाण हे ॥ तेह सजामां हुं गयो, जिहां बेठो यमराण हे ॥ ॥ ८ ॥ रं० ॥ सुर असुर नर खेचरा, मेली परखद तत्र हे ॥ न्याय अन्याय खीर नीर ज्युं, बेठो करे यम यत्र हे ॥ ९ ॥ रं० ॥ जे तें यम जडवाथकी, बीहे इंदने चंद हे ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, देव दाणव दि णंद हे ॥ १० ॥ रं० ॥ कुण राणा कुण रांकने, स हुने गणे एक पाड हे ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहनां ते पूरे लाड हे ॥ ११ ॥ रं० ॥ लौकिक मतें यम रा णनो, कहे सहु सूरय तात हे ॥ शनि यमुना जाइ बहेन छे, श्रीसंग न्यात समात हे ॥ १२ ॥ रं० ॥ धर्माणी तस जार्या, छे पट्टराणी तास हे ॥ असवारी तस महिषनी, चंम प्रचंम छे दास हे ॥ १३ ॥ रं० ॥ बल ने माहाबल जाइ दो, ए छे यमना पूत हे ॥ ज नक सवाइ दो बेटडा, चलवे घरनां सूत हे ॥ १४ ॥

॥ रं० ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल हे ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखत विशाल हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ दुनीयां जे करणी करे, सुकृत दुःकृत देख हे ॥ चित्र विचित्र ते मांभिने, दाखवे यमने लेख हे ॥ १६ ॥ रं० ॥ ते करणी यम देखीने, द्ये दुनियाने शीख हे ॥ सुकृतने सुख दाखवे, दुःकृतने दे नीख हे ॥१७॥रं०॥ ईति उपद्रव जगतने, मर्कीना जे रोग हे ॥ काल दुकाल तें जे पडे, ज्वरना मेलवे जोग हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा, वलगे ते सनमुख हे ॥ ए सवि करणी यम तणी, दुनियां जे लहे दुःख हे ॥ १९ ॥ रं० ॥ रूसे जो यम जगतने, दाखवी नारकी घात हे ॥ तूसे तो यम ने हसुं, आपे ते सुख शात हे ॥ २० ॥ रं० ॥ जोरो घणो यमराजनो, कहेतां नावे पार हे ॥ यमनो विचार विशेष छे, नगवतीमांहे विस्तार हे ॥ २१ ॥ ॥ रं० ॥ लौकिकनें मतें जे सुणो, तेह में दीठो सत्य हे ॥ तेह सन्नामें हुं गयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥ ॥ २२ ॥ रं० ॥ ततखिण यमें मुऊ उलख्यो, अवधि ज्ञानें सार हे ॥ देव शक्ति करी मुऊनें, फरी दीधो अवतार हे ॥ २३ ॥ रं० ॥ नौतन काया माहरी,

मुझने जीवित दीध हे ॥ २४ ॥ रं० ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुझने ते धर्मराज हे ॥ सोक समाचार तुम तणा, पूछे ते यमराज हे ॥ २५ ॥ रं० ॥ तव में तिहां कर जोडीने, यमने करि अरदास हे ॥ आव्यो हुं एक राजथी, तेडवा तुम उल्लास हे ॥ २६ ॥ रं० ॥ विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय हे ॥ अंग जने परणाववा, उत्सव महोटो कराय हे ॥ २७ ॥ ॥ रं० ॥ देश देशांतरि राजवी, मेलशे महोटा राज न्न हे ॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें, परणशे पुत्र रतन्न हे ॥ २८ ॥ रं० ॥ ते माटे तुम तेडवा, मूक्यो छे मुझ आज हे ॥ तुम आवे प्रभु जगधणी, वधशे महोटी लाज हे ॥ २९ ॥ रं० ॥ इणि परें अरज ते सांभली, बोल्यो यम ततकाल हे ॥ चोथी चोथा उल्लासनी, लब्धि कही ए ढाल हे ॥ ३० ॥ रं० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरखित थइ यमराजजी, बोल्यो मुखथी मिष्ट ॥ यम कहे हरिबल तुम धणी, छे मुझ मननो इष्ट ॥ १ ॥ पण तुम नृप मुझ मंदिरें, जो आवे इक वार ॥ त्यार पछें मुझ आववुं, थाशे तव निरधार ॥ २ ॥ अवली गंगा जो वहे, तो मुझथी अवराय ॥ दुनियां

माने मुजने,करि परमेसर गाय ॥३॥ तेमाटे हरिबल तुमें, कहेजो नृपने एम ॥ एक वार मुज मंदिरें,आवो ज्युं करि तेम ॥ ४ ॥ जो सेवक साचो हुवे, तो ले नगरी साथ ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, मदनवेग महि नाथ ॥ ५ ॥ मुज मंदिरनी रसवती, कबुल करेशो आय ॥ तव तुम मंदिर चाहिने, आवीशुं अमें धाय ॥ ॥ ६ ॥ एह संदेशो अम तणो, हरिबल कहेजो तुम्म ॥ तुम नृपने अम तेडवा, मूकुं ए नृत्य अम्म ॥ ७ ॥ वलि तुमें शाता पूछजो, कहेजो अम्म जुहार ॥ जो आशा करो अम तणी,आवजो सर्ग मझार ॥८॥ एम कही सनमानिने, पहेरावी शणगार ॥ वोलावी अमने वल्या, यमराजा हितकार ॥९॥ देव प्रनावें ततखिणें, जोतां एक पलक्क ॥ तुम पासें अमें आविया, जोई सर्ग हलक्क ॥१०॥ यमनृपनो ए नृत्य छे, आसोमब्र नामें सनूर ॥ आमंत्रण करवा नणी, आव्यो तुम्म हजूर ॥ ११ ॥ इणिपरें हरिबलें मांमीने, कह्या संदेशा जाम ॥ मदनवेग राजी थयो, ते निसुणी अनिराम ॥ १२ ॥ तिणे अवसर तक जोइने, सुरनें कीधी शान ॥ सुर बोल्यो जमनो थइ, सांजलो तुमें राजान ॥ १३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फतमल्लनी देशी ॥ नरपति सांजलो माहरी वाण, आसोमब वेधक कहे ॥न०॥ छे जगमें यमराण, त्रिजग आणा शिर वहे ॥ १ ॥ न० ॥ तेणें मुऊ तुम संग, मूक्यो तुम आमंत्रवा ॥न०॥ राखी मने बहु रंग, चालो तुमें स्वर्ग यंत्रवा ॥२॥न०॥ छे मनमें घणी होंश, मिलवा तुम यम नाथने ॥न०॥ दीधा छे घणा सूंस, वेगें पधारो लेइ साथने ॥ ३॥ न० ॥ मंत्रि प्रमुख परिवार, तुम नगरीमें जे होवे ॥ न० ॥ ल्यो तुम साथ विस्तार, सुरलोक नर नारी जोवे ॥ ४ ॥ न० ॥ तुम मन वंछित होय, रमणी रुद्धि दो पावशो ॥ न० ॥ अजरामर पद जोय, सो पण लहेशो जो आवशो ॥ ५ ॥ न० ॥ म करो ढील लगार, शीघ्र थाउ तुमें नूधणी ॥ न० ॥ यम नृप तुमशुंजी प्यार, राखे छे एकंगो तुम्म नणी ॥ ६ ॥ न० ॥ इणिपरें सुर ते वदंत, हरिबल शाखा नेदथी ॥ न०॥ सांजली मन हरखंत, यमना संदेशा उमेदथी ॥ ७ ॥ न० ॥ धन घडी धन मुऊ दीस, यमशुं थयो मुऊ नेहलो ॥ ॥ न० ॥ सज थइ विशवावीश, यम कने जाउं जो वेहलो ॥ ८ ॥ न०॥ पूछी यमने संदेश, मननी न्रांति

टालुं परी ॥ न० ॥ यमशुं वधारी नेह,अमरपणुं ते लहुं खरी ॥ ९ ॥ न० ॥ नगरमां पडहो वजाय, घरोघर लोकने नोतस्यां ॥न०॥ नर नारी हर्ष नराय, यमघर जावाने परवस्या ॥ १० ॥ न० ॥ निर्धन विरहिणी नार,बालरंमादि दो नागिया ॥न०॥ जाणे जम दरबार, जाइने थइयें सोनागियां ॥ ११ ॥न०॥ वांऊीया वांढा बेकार, ङःखीया स्त्री सुत कारणें ॥ ॥ न० ॥ ते पण उमह्या अपार, जावाने यम बारणें ॥ १२ ॥ न० ॥ रोगीने ङःखीया जेह, लुला टूंटा ने पांगला ॥न०॥ कोढीया काला तेह, काणा कोंचा ने आंधला ॥ १३ ॥ न०॥ बाल तरुण जे वृद्ध, सक्क थयां फोकर फोकरी ॥ न० ॥ अमर पदवी पर सिद्ध, ले आवो यमने नोरो करी ॥ १४ ॥ न० ॥ इक इकनी माहोमांहे, उपरा उपर पडी वहे ॥ न० ॥ जावाने स्वर्ग उबाह, जमण लाडु खावा गह गहे ॥ ॥ १५ ॥ न० ॥ इणिपरें नगरीनां लोक, यमनणी जावाने हलफले ॥ न० ॥ नृप पण यम सारु ढोक, लेइने नृप पण नीकले ॥ १६ ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, नृप संगें करी परवरी ॥ न० ॥ नेटवा ते यमनाथ, बत्रीश नृपकुली संचरी ॥ १७ ॥ न० ॥ धक

मक करतां रें एम, नागर जन सद्दु संचर्यां ॥ न० ॥ हरिबल ने सुर तेम, ते पण साथें नीसर्या ॥ १८ ॥ ॥ न० ॥ तिल जेटलो नहि माग, एटली मांधाता म ली ॥ न० ॥ चय सुधी पामी ते लाग, तव हरिबल मन अटकली ॥ १ए ॥ न० ॥ मन्त्रीयें जाणी ते वात, सही तो ए नृप कांठे चढे ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, ते पण जइ वासें चढे ॥ २० ॥ न० ॥ बीजा नगरजन सर्व, ते पण नृपनी केडें चढे ॥ न० ॥ तव होवे पापनुं पर्व, घोर करणी बहु जव नडे ॥ २१ ॥ ॥ न० ॥ हरिबल चिंते रे ताम, ठे मुज वयरी जे माहरे ॥ न० ॥ बीजानुं शुं काम, काम ठे एकनुं मा हरे ॥ २२ ॥ न० ॥ देउं उपाडी तास, चिता अग्नीनी जा लमां ॥ न० ॥ निकले जमनो पास, एठ जायें यम शालमां ॥ २३ ॥ न० ॥ चिंतवी इम अनेदान, देउं नृपादिक जंतुने ॥ न० ॥ गुरु उपदेशने मान, जी वित देउं बीजा संतने ॥ २४ ॥ न० ॥ इम जाणी ततकाल, सलगाडी चिंता तिण समे ॥ न० ॥ नन्न लगें प्रगटी त्यां जाल, देखत कायर मन नमे ॥ २५ ॥ ॥ न० ॥ नृप कहे करी शणगार, वाजित्र महोटें वाजते ॥ न० ॥ पेसे ते अगनी मजार, तव हरिबल

कहे गाजते ॥ २६ ॥ न० ॥ खमो एक स्वामी ल
गार, वात विचारीने कीजियें ॥ न० ॥ पूछी जम प
डिहारु, विण पूछे पगलुं न दीजीयें ॥२७॥न०॥ तव
पूछे महिपाल, यम पडिहारने तक लही ॥न०॥ चोथा
उल्लासनी ढाल, पांचमी लब्धिविजय कही ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी परिहारने, पूछे तव महिपाल ॥ जो
तुम हुकम हुवे खरो, तो वरुं अग्नीजाल ॥ १ ॥
तव कहे सुर परिहार ते, सांभलो कहुं नृप तुम्म ॥
दुष्ट कुबुद्धि अटारडो, छे यम राणो अम्म ॥२॥ तुम
नगरीनां मानवी, जोवा थयां सहु सज्ज ॥ पण यम
आगल नवि रहे, तुमची महोटी लज्ज ॥३॥ तेमाटे
तुमें मोकलो, जे तुम वल्लभ होय ॥ यमने पूछी उ
तावलो, आवे स्थानक जोय ॥ ४ ॥ त्यार पछें आपें
सहु, जइ यम नृप प्रणमेय ॥ तेहना हुकमथी उतस्या,
जिहां उतारो देयं ॥ ५ ॥ विण पूछे जो जाइयें, तो
खीजे यमराय ॥ जीवथि यम जूदा करे, तुम सहु
साथने धाय ॥ ६ ॥ इम नृपने ते सुर कहे, यमनुं
ए छे शूल ॥ काज विचारी कीजियें, तो वधे आपणुं
मूल ॥ ७ ॥ ते वाणी नृप सांभली, चमक्यो चित्त

मझार ॥ नली कही इण नाकियें, आणी मन उप गार ॥ ७॥ तव नरपति कहे मंत्रिने, सांजल तुं कालसें न ॥ जमदरबारें जायवा, शीघ्र थाउ तुम तेण ॥ ए ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ नयन हमारे लालनां ॥ ए देशी ॥ तव हरखित मंत्री थयो, सांजलि नृपनी वात ॥ सनेही ॥ यमने मंदिर जायवा, थयो उत्सुक हरखात ॥ स० ॥ त० ॥ १ ॥ जाणे मंत्री मननमें, तूग मुऊ जगवान ॥ स० ॥ यम मंदिर हुं जाइने, मागुं वंठित दान ॥ स० ॥ त० ॥ २ ॥ राजी करुं श्राद्धदेवने, लटपट करी गुण गेह ॥ स० ॥ अमर पटो लेउं मागीने, रमणी रुद्धि सुदेह ॥ स० ॥ त० ॥ ३ ॥ इणिपरें मंत्री आलोचीने, सऊ थयो तिणिवार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण उदार ॥ स० ॥ त० ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार ठे, तें आवें मुऊ साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने नेटीयें, नरीयें वंठित बाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे पडिहारने, मुऊ मंत्री ले संग ॥ स० ॥ सर्ग जुवन पद दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥ ६ ॥ करी प्रणिपत माहरी तिहां, करजो मुऊ अरदास ॥ स० ॥

कह्नो तो ठडी अस्वारीशुं, आवुं तुमचे विसास ॥
॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ कह्नो तो सहु नगरी तणो, सघ
ळो आवे साथ ॥ स० ॥ यम राजाने जेटवा, आवें
विशाळानाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ इणिपरें विनती
माहरी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आ
वजो, यमनी रजा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ए ॥ तव सु
र कहे ते रायने, जजी कही तुमें गुऊ ॥ स० ॥ मुऊ
स्वामी यमनाथने, मेळवुं मंत्री तुऊ ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १० ॥ एम कही पडिहार ते, मागी नृपनी शीख
॥ स० ॥ बेगो अगनी जाळमां, सहु जन देखत
ईख ॥ स० ॥ त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण काळसेन ते,
नृपने कीध जुहार ॥ स० ॥ नगरी जन सहु साथने,
प्रणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥ १२ ॥ बेगे च
यनी जाळमां, मंत्री पण तेणि वार ॥ स० ॥ सुर
संगें काळसेन ते, मंत्री बळी थयो ठार ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १३ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री सुर थयो
ठार ॥ स० ॥ जोतां खिण एक पलकमें, पहोता यम
दरबार ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ नगरीजन नृप आदि
ते, मंत्रीनी जोवे वाट ॥ स० ॥ जाणे मंत्री आवशे,
यम जणी करी गहगाट ॥ स० ॥ त० ॥ १५ ॥ इणिपरें

दो घडी चौ घडी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ हजीय लगण आव्यो नही, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥ ॥ त० ॥ १६ ॥ तव हरिबल कहे नृपने, शुं कह्यो स मजू थाय ॥ स० ॥ जे गयो यमने मंदिरें, ते किम आवे धाय ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां मडदां मशाणमां, ते जो जीवतां थाय ॥ स० ॥ तो पाछो मंत्री इहां, आवे तुमचे पाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥ शी हवे एहनी चिंता करो, म करो मंत्रिनी तांत ॥ ॥ स० ॥ करणी जेहवी इणें करी, तेहवो लह्यो ते घात ॥ स० ॥ त० ॥ १ए ॥ विण खूने तुम मंत्रवी, लीधी माहरी केड ॥ स० ॥ तव में दीधो ए अग्निमें, यम मिशें ए करि जेड ॥ स० ॥ त० ॥ २० ॥ वली तुमने इणे कुमतियें, तुमचां भंगव्यां हाड ॥ स० ॥ दांत पडाव्या जे तुम तणा, ते तुम मंत्रीनो पाड ॥ ॥ स० ॥ त० ॥ २१ ॥ ए गुण मंत्री तुम तणा, हुं करुं केतां वखाण ॥ स० ॥ दुष्ट कुबुद्धि जे हतो, ते हनां में काढ्यां प्राण ॥ स० ॥ त० ॥ २२ ॥ एहनो धोखो मत करो, राखो मन नृप गोर ॥ स० ॥ मूक्यो में नारकी पांतिमां, सातमी जे कही घोर ॥ सं० ॥ ॥ त० ॥ २३ ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहवी लहे

फलपत्य ॥ स० ॥ कंकण झुंकणनी परें, मेल्यो ऊखाणो सत्य ॥स०॥त०॥२४॥ कुण राणा कुण दूबला, करणी सारु होय ॥ स० ॥ कुगति सुगति लहे करणीयें, उत्तम मध्यम जोय ॥ स० ॥ त० ॥ २५ ॥ इणिपरें नरपतिजी तुमें, जो करशो अन्याय ॥स०॥ तो तुमची गति इणि परें, होशे गाऊकी राय ॥स०॥ ॥ त० ॥ २६ ॥ इणिपरें वाणी सांजली, चमक्यो नरपति चित्त ॥स०॥ सांजल रे जीत जाटिका, जाणी मञीनी रीत ॥ स०॥ त०॥ २७ ॥ मंत्रीनी लइ जस्मते, जल शरणें करी राय ॥ स० ॥ हरिबल कहे नृपगुरु तणी, जाय अजाय बलाय ॥स०॥त०॥२८॥ इम कहि नृप मंदिरें,वलियो ते महिपाल॥स०॥ लब्धि कही बठी मर्मनी, चोथा उल्लासनी ढाल ॥स०॥त०॥२९॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपादिक नगरी जना, सहु समज्या मनमांहि ॥ ए करणी हरिबल तणी, जाणी सघले त्यांहि ॥ १ ॥ जली थई जावठ गई, विण ऊषधें विराध ॥ हरिबल केरा धर्मथी, हवे थइ सुख समाध ॥ २ ॥ इम कहेतां नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ हरिबल साचो हीरलो, पुण्य तणो ए थोक ॥ ३ ॥ कालसेन कुपा

त्रने, बाव्यो हरिबलें बीप ॥ जन दिये रंग वधामणां, घर घर घृतना दीप ॥ ४ ॥ सर्ग नरग दुनियां मुखें, नाखे सघली वात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेह वी वहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो कहे ज्ञानथी, देखी स्वर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मतें करि,करणीयें नर्ग ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधुं जाएयुं का म ॥ हरिबल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति ताम ॥ ७ ॥ तव हरिबल कहे रायने, म करो मनमें सो च ॥ तुम मंत्री ते कुमतियें, तुमचो कराव्यो लोच ॥ ॥ ८ ॥ लंकायें मुज मोकल्यो, वलि मूक्यो यम घेर ॥ तुमें चूक्या मुज नारीशुं, तव में करि ए पेर ॥ ए ॥ तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में राख्या जीवता, करुणा आणी नाथ ॥१०॥ ए गुण लेजो माहरो, जीवित सूधी नृप ॥ एम कही हरिब ल तिहां, आव्यो निज घर चूंप ॥ ११ ॥ वसंतसिरी कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ पिंयु मुखचंद विलो कतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलसे संसा रमां, टाली सघलां शल्य ॥ करणी करे जिन धर्मनी, हरिबल मबी अबील ॥ १३ ॥ परतख देखी पारखुं, हरिबल केरो धर्म ॥ पुरजन सहु धर्मी थया, टाली

मिथ्या जर्म ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे निज कीधां चरित्र ॥ तें देखी धोखो करे, नरपति म नशुं विचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ महिपति जांखे प रजने रे, बेगो ते निज धाम ॥ साजन सांजलो रे ॥ हा हा में ए शुं कर्युं रे, अणघटतुं ए काम ॥ १ ॥ सा० ॥ गुणवंत ले गुण धाम, मूकी आमलो रे ॥ ए आं कणी ॥ किया जवनी मोहनी रे, जागी इण जव मांहि ॥ सा० ॥ ए नारीथी फुःख लह्युं रे, विण कामें निरुछाहि ॥ २ ॥ सा० ॥ तन धन खोयां नृप कहे रे, खोइ नारीथी लाज ॥ सा० ॥ वात चलावी चिहुं दिशें रे, वाजते ढोल आवाज ॥ ३ ॥ सा० ॥ पूरव जवनी वैरिणी रे, पोष्युं वयर विशेष ॥ सा० ॥ जेहवी करणी में करी रे, तेहवी लही तस रेख ॥ ४ ॥ सा० ॥ दोष नहीं को एहनो रे, ठे सघलो मुफ दोष ॥ सा० ॥ पी पाणी घर पूठीने रे, शो तस करवो शोष ॥ ५ ॥ सा० ॥ कुलमर्यादा मूकीने रे, खोटी में मागी जीख ॥ सा० ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गण्यां रे, कोनी न मानी शीख ॥ ६ ॥ सा० ॥ पारकी मति हुं चाली

यो रे, मेल्यां कुकर्मनां मूल ॥ सा० ॥ कोडीनी गरज सरी नही रे, नृप करे नावी धूल ॥७॥ सा० ॥ मुज घरे छे छती पदमणी रे, राणी रूप निधान ॥ सा० ॥ ते मूकी होंशी थयो रे, उखर करवा निदान ॥ ८ ॥ सा० ॥ छे स्त्री अशुचिनी कोथली रे, मल मूत्र नरियां गात्र ॥ सा० ॥ बारे द्वार वही रह्यां रे, पहेर्यां दिसे सुपात्र ॥ ए ॥ सा० ॥ अण बोलाव्यां सुंदरु रे, दीसे ढांक्यां रतन्न ॥ सा० ॥ काम पडे त्रटकी वहे रे, वि-चक विचाडी तन्न ॥१०॥ सा० ॥ जागे योवन यौवनें रे, वाधे कामनुं जोर ॥ सा० ॥ सिद्ध साधक कुण सुर नरा रे, जोवे अंगनां गोर ॥ ११ ॥ सा० ॥ पंचास्ति-कायमें पण कह्यां रे, जिनवरें कामनां बाण ॥ सा० ॥ तो मानवनुं शुं गजुं रे, कामें मनावी आण ॥१२॥ सा० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, कामें लाज गमा य ॥ सा० ॥ कामें खोवे मालने रे, कामें गीत गवाय ॥ १३ ॥ सा० ॥ वध बंधन कामें लहे रे, कामें उं चा टंगाय ॥ सा० ॥ कामें दंम नरे सही रे, कामें हां सी कराय ॥ १४ ॥ सा० ॥ कामज्वरें बलतो रहे रें, तनथी क्षीण ते थाय ॥ सा० ॥ मात पितादिक नवि गणे रे, न गणे कामांध कांय ॥ १५ ॥ सा० ॥

वीती हशे ते जाणशे रे, जे करे परस्त्रीनो संग ॥ सा०॥ ते होशे खेरु विकारशुं रे, खोई तन मन रंग ॥ १६ ॥ सा० ॥ शी मुजने ए उपनी रे, पडवा नारकी कुंम ॥ सा० ॥ धिग धिग माहरी बुद्धिने रे, जे थयो व्यसनी जुंम ॥१७॥सा०॥ धन हरिबलनी बुद्धिने रे, दीधुं जीवित दान ॥सा०॥ अजर प्यालो इण जीरव्यो रे, दीठो वडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे मुज उपरें रे, तो करे मंत्रीनी रीत ॥सा०॥ राजा ली ये मुज एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा० ॥ में म्हारे हाथे करी रे, करणी खोटी कीध ॥ सा० ॥ नीति मारग लोपी करी रे, हरिबलने दुःख दीध ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे रे, जे हुं चाल्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो शीखामण नली ज डी रे, कदि नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अव गुण उपर गुण करे रे, ते तो हरिबल एक ॥ सा० ॥ मुजने राख्यो जीवतो रे, दयावंत विवेक ॥ २२ ॥ सा० ॥ सुगुण पुरुष में दीठडो रे, हरिबल साहस धीर ॥ सा० ॥ उपगारी शिर सेहरो रे, वीर शिरोम णि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिबलना तातने रे, धन हरिबलनी मात ॥ सा० ॥ क्षत्रिवंशमां दी

पतो रे, सुनट शिरोमणि जात ॥ २४ ॥ सा० ॥ धन धन ते गुरुदेवनें रे, जेणें बताव्यो, धर्म ॥ सा० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुऊ शर्म ॥ २५ ॥ सा० ॥ इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मद नवेग ॥ सा० ॥ तोल वधास्यो माहरो रे, हरिबलशुं करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे, परणावुं शुन काज ॥सा०॥ कर मूकामण वली दीयुं रे, महीयल महोटुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण उशीगण ए थइ रे, हुं हवे थाउं निःपाप ॥सा०॥ पढें हुं संयम आदरुं रे, ज्युं मटे नवनो संताप ॥ २८ ॥ सा० ॥ एता दिन नूलो नम्यो रे, विण दर्शन मुऊ जीव ॥ सा० ॥ हवे करणी एहवी करुं रे, जिम ल हुं सूख सदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना परजमें रे, कीधी ते महिपाल ॥ सा० ॥ चोथा उ ल्लासनी ए कही रे, लब्धि सातमी ढाल ॥३०॥सा०॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें नृप आलोचनी, आलोयां निज पाप ॥
हलुआकर्मी नृप थयो, करवा शिव मेलाप ॥ १ ॥
जिहां सूधी अज्ञानतम, व्यापी रह्युं घटमांहि ॥ ति
हां सूधी ते जीवडो, पाम्यो ज्ञान न क्यांहि ॥२॥ स-

हज गुणे जग जीवने, आवे शुद्ध स्वभाव ॥ तव घट में दर्शन रवि, प्रगटे तेज प्रभाव ॥ ३ ॥ तव भेदे अज्ञान तम, प्रगटे ज्ञान उद्योत ॥ अष्ट करम दल छेदिने, जइ भले ज्योतिमें ज्योत ॥४॥ हवे करणी करुं धर्मनी, छेहडो समारुं शुद्ध ॥ वणकर पण ते वस्त्र नो, छेहडो समारे शुद्ध ॥ ५ ॥ इम जाणी हरिबल प्रत्यें, तेडाव्यो नृत्यपास ॥ हरिबल पण तिहां आवीयो, ततखिण नृप आवास ॥६॥ अरधुं आसन आपीने, कर जोडी कहे नाथ ॥ अरज सुणो एक माहरी, हरिबल गो तुमें आथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांजी रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांजी हरिबलप्रत्यें हवे नृप कहे, तुमें सांभलो गुणधि अगाध ॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं खूनी थयो तुम तणो, मुझ खमजो ते अपराध ॥ १ ॥ तो० ॥ हांजी लांबां झाखां शा करुं, हुं तो छुं, तुम भवोभव चोर ॥ तो० ॥ हांजी में तुमशुं एहवी करी, तिण नही मुझ सातमी गोर ॥ २ ॥ तो० ॥ हांजी विषयारसनो लोलुपी, थयो ते छती वस्तें उलूक ॥ तो० ॥ हांजी लंकागढ यमने घरे, में मूक्या

तुम करी चूक ॥ ३ ॥ तो० ॥ हांजी ए पातक किहां छूटस्यां, में कीधो जेह अन्याय ॥ तो० ॥ हांजी ते रखे रोष चित्तें धरो, तुम कहुं बुं गोद बिछाय. ॥४॥ तो० ॥ हांजी हुं तुम खामुखां थयो, मत राखजो अंतर वेर ॥ तो० ॥ हांजी इम नृप कहे हरिबल तुमें, मुफ उपर राखजो महेर ॥ ५ ॥ तो० ॥ हांजी तव हरिबल नृपने कहे, तुमें ए शुं बोल्या नाथ ॥ तोरी बलिहारी रे नरपति माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं सेवक बुं तुम तणो, मुफ तुमें बो महोटी आथ ॥ ६ ॥ तो० ॥ हांजी माहरे तुमशुं को नही, कांही अंतरगतमें द्वेष ॥तो०॥ हांजी तुम मंत्री काल सेन जे, तेणे भंभेस्यो तुम बेक ॥ ७ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम वचें विगताविने, तुम कुमतियें घाली राड ॥ तो० ॥ पण जेहवी करी तेहवी लह्यो, बल्यो जीव तो तेह किराड ॥८॥तो०॥ हांजी तुम अम हवे कोइ वातंनो, मत राखोजी अंतर कोय ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम जीवडो एक बे, ए तो देखत बे तन दोय ॥ ए ॥ तो० ॥ हांजी मिथ्याडुःकृत मुफथकी, तुमें मानजो नृप करि साच ॥ तो० ॥ हांजी राग द्वेषना योगथी, जेह बांध्यां निकाचित वाच ॥ १० ॥तो०॥

हांजी इत्यादिक वचनें करि, हांजी हरिबलें खामणां कीध ॥तो०॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल दोय प्रसिद्ध ॥११॥तो० ॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्यें नृप कहे, तुमें सांजलो मुज अरदास ॥ तो०॥ हांजी मुज पुत्री जयसुंदरी, तुम पालव बांधुं उल्लास ॥१२॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥ हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुज नगरीनुं राज ॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुज म होटी वधारो लाज ॥१३॥तो०॥ हांजी एम कहीने ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी पंचनी साखें मलीने, करे तिलक ते नृप उछांह ॥ ॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी शुज चोघडीयुं जोइने, करि थापना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥तो०॥ हांजी शुज लगनें शुज मुहूरतें, हरिबलने नृप पद दीध ॥ ॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तो० ॥ जाणें स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें जाकजमाल ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंमप रोपीने, नृप

देशनां तेडां कीध ॥ तो० ॥ हांजी सोवनमय चोरी रची, वर कन्या वरवा सुसिद्ध ॥ १८ ॥ तो०॥ हांजी वाजिंत्र महोटे वाजते, हांजी वाजते यंत्र मृदंग ॥ ॥ तो० ॥ हांजी तत थेइ नटुआ नाचता, हांजी करता नवनवा रंग ॥१९॥तो०॥ हांजी सोहागिणी साहेलीयो, मली सरखा सरखी बाल ॥ तो०॥ हांजी कोकिल स्वरें करी सोहली, जलां गावे गीत रसाल ॥ २० ॥ तो० ॥ हांजी ते गीत नादना स्वादथी, रहे थंभी अमर विमान ॥ तो० ॥ हांजी इणि परें नारी टोलें मली, ए तो गावे रूप निधान ॥ २१ ॥ तो०॥ हांजी मंगल वाजां वाजते, हांजी गाजते गुहिर निशाण ॥ तो० ॥ हांजी इण आडंबरें धीवरु, चढयो परणवा चतुर सुजाण ॥ २२ ॥ तो० ॥ हांजी अलबेला जानी थया, हांजी जाणीयें देवकुमार ॥ तो० ॥ हांजी हरिबलने परणाववा, हांजी आव्या नृप दरबार ॥ २३ ॥ तो०॥ हांजी घणे आडंबरें सो [illegible]कृत करी करता नृत्य हजार ॥ तो० ॥ हांजी जीव प्रवचन र[illegible]थी, ढबे तोरण हरिबल सार ॥ २४ ॥ सुविहित गु[illegible]जी प्रीतिमती पट्टरागिणी, तीर धूंसरें सवि ढां[illegible] ॥ तो० ॥ हांजी चोरीमां पधरावीयां,

वर कन्या कर मेलाइ ॥ २५ ॥ तो० ॥ हांजी पालव बांधी दोयना, हांजी फेरा फेरव्या चार ॥ तो० ॥ हांजी वर कन्यायें आरोगीयो,हांजी सुंदर मिठो कंसार ॥ ॥ २६ ॥ तो० ॥ हांजी जयसुंदरी परणावीने, हरिबलने दीधुं राज ॥ तो० ॥ हांजी पायक सप्त लक्ष अश्वनी, ठकुराइ दीधि समाज ॥ २७ ॥ तो०॥ हांजी जो जो नवियां पुण्यथी, लहि मद्धी सुकृत माल ॥ तो०॥ हांजी चोथा उल्लासनी ए कहि, शुन लब्धें आठमी ढाल ॥ २८ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनवेग हरखें करी, कीधो उब्रव सार ॥ सोनुं रूपुं सामटुं, वरसे ज्युं जलधार ॥१॥ जसपडहो वजडावियो, नगरी जमाडी सार ॥ हरिबलने राजें ठव्यो, वरत्यो जय जयकार ॥२॥ बंदीजन मूंक्या परा, आणी मन उपगार ॥ आसीजन तृपता कस्या, दानें देदेकार ॥३॥ पद महोब्रव अतिहे कस्या, राखी जग [illegible] ख्यात ॥ हरिबल जे राजा थयो, चाली फियां [illegible] वात ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु हरखी[illegible]वा रे,मनो हरिबल राय ॥ देश देशाउरि नेटणां,[illegible] रे, मदन धाय ॥ ५ ॥ इणिपरें पद महोत्सव क[illegible] जपता रें,

नवेग ॥ हरिबलने राज्यें ठवी, प्रबल वधास्यो नेग ॥
॥ ६ ॥ हरिबल पण सुख भोगवे, पाले राज्य अखं
ड ॥ आण मनावी चिहुं दिशें, भुजबलि भीम प्रचं
ड ॥ ७ ॥ हवे नृप जामाता कने, ससरो मागे शी
ख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं लेहुं दीख ॥
॥ ८ ॥ निज आतमने तारवा, लेहुं संयमभार ॥ शिव
रमणीशुं नेहलो, करवा थयो हुशियार ॥ ९ ॥ एम
कही नृप सज थयो, चढते ते परिणाम ॥ दीक्षा
महोत्सव शुभ करे, हरिबल तव गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावादना खेड्या रे, वालम आवजो रे ॥
ए देशी ॥ संयमनारी वरवा रे, नृप मन उल्लस्यो रे ॥
पापस्थान अढारथी रे, नृप दूरें खस्यो रे ॥ आणी
समता भाव रसाल, राणी पण थइ साथें विशाल ॥
पंचम गतिने हेतें रे, संयम आदरे रे ॥ १ ॥ सातें
क्षेत्रें भावें रे, धन बहु वावरे रे ॥ निर्मल चित्तें थइने रे,
हता, हा[illegible]णी आचरे रे ॥ समकित निर्मल शुद्ध करेय,
दयाना प्रभ[illegible] चित्त धरेय ॥ घणे आडंबरें आवे रे,
॥ तो० ॥ [illegible] रे ॥ २ ॥ बाह्याभिंतर केरा रे, मल
पोंखे जम[illegible] परमातमने गेहें रे, संकेत मांडिया.

रे ॥ मूकी घरनो सघलो शोच, पंच मुष्टिचुं कस्यो
तिहां लोच ॥ राजा राणी आदें रे, चारित्रने ग्रहे
रे ॥ ३ ॥ तव हरिबल शुन नावें रे, ससराने ऊजवें
रे ॥ दीक्षा महोत्सव नावें रे, कस्यो जन संस्तवे रे ॥
वरसें ज्युं नादरवानो जलधार, वरसे त्युं हरिबल
सोवन धार ॥ कविजन जेता तेता रे, श्लोक नणे
घणा रे ॥ ४ ॥ सुरपतिनी परें कीधो रे, महोत्सव
दीक्षनो रे ॥ क्षायिक समकित केरो रे, ग्रह्यो दंभ
ईक्षनो रे ॥ दीक्षा उब्बवनुं फल एह, हरिबल पाम्यो ते
गुणगेह ॥ शिव रमणीनो साचो रे, पालव बांधियो
रे ॥ ५ ॥ धन धन मदनऋषिजी रे, बलिहारी ता
हरी रे ॥ संजम नारी प्यारी रे, वरी तुमें जाहरी
रे ॥ धन धन स्वामी तुमचो नेख, धन धन जीत्या
राग ने द्वेष ॥ ते गुण लीणो तुमचो रे, हुं किंकर थइ
रह्यो रे ॥ ६ ॥ धन्य स्वामी करुणारसें रे, मन संतो
षियो रे ॥ संवेग रसें करी आतम रे, निर्मल पोषि
यो रे ॥ धन धन्य स्वामी तुम दृढ चित्त रे, नचंढुं दिक्षि
कण राजनी नीत ॥ धन धन्य स्वा[redacted] जव थयो
बल नावनें रे ॥ ७ ॥ इम गुण[redacted] आवे नृप
वेग ऋषिराजना रे ॥ धन्य धन्य [redacted] जे नृप मद

हरिबल पुरजना रे ॥ इणि परें करता स्तवनां अपार, ऋषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिबल राजा आदि रे, सहु वांदी वल्या रे ॥ ७ ॥ हवे ऋषि॰म दनवेगजी रे, गुरुसंगें नणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रें, विचार ते संथुणे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चाले सूधा नय व्यवहार ॥ दंपति दोये साचां रे, जिन म तमें वहे रे ॥ए॥ अध्यातमपुर सुंदर रे, निरखी तिहां रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, महोटां गह गहे रे ॥ तेहमें कीधो दो जणें वास, करे तिहां बेगं ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चरणशुं रे, रहे लीनां थकां रे ॥ १० ॥ ध्यान सुतखतें बेगं रे, दो वखतें इक मनां रे ॥ समकित छत्र धरावि रे, हरखें दो जणां रे ॥ सोहे चामर श्रुत चारित्र, पाले महोटां आण मावि त्र ॥ धर्म सना दश मेले रे, सत्य दरबारमां रे ॥ ११ ॥ संयम हाथी शुन मन रें, घोडा दीपता रे ॥ अष्टक रम[illegible]नें रे, वेगें जीपतां रे ॥ शीलांगरथ शुन मह[illegible], संवर सुनट सुतेज अनंत ॥ मदन वेग [illegible]ने रे, दरबारें गाजता रे ॥ १२ ॥ नेद॰वि ज्ञान[illegible] रे, बांधी न्यायनी रे ॥ खीर ने नीर ज्युं [illegible] करे संनायनी रे ॥ सातमे गुणगाणे

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो कारिमो झगडो रे, मिटाड्यो खिण एकमां रे ॥ १३ ॥ तेरमे गुणगणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते भावियां रे ॥ तव तिहां पाम्यां केवल नाण, तीन भुवनमें थयां ते जाण ॥ केवल महोत्सव महोटुं रे, इंद्रादि सघला करे रे ॥१४॥ बारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ भव्य जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ तार्यां भवोदधि थी केइ जीव, ज्योति वधूशुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें बणाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विशमा जिननें वारें रे, मदनऋषि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरष तेत्रीश हजार, पाली पूरुं दंपति सार ॥ शैलेशी गुणयोगें रे, दो मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना भय सवि रे, दूरें छंडिया रे, शिवरमणिना संगमें रे, निशिदिन मंझिया रे ॥ चौद भुवननां नाटक चंग [illegible] ज्युं करजल रेह सुरंग ॥ लोक अलोकने [illegible] तिहां रही रे ॥ १७ ॥ जो जो भविय[illegible], शी करणी हती रे ॥ मोह नृप जोरें शिव[illegible]नी न को रती रे ॥ तेहना धणी थइ बेग [illegible] भुव

नमें मानीता कीध ॥ ए सवि गुण तुम लेजो रे, नवि समकित तणा रे ॥ १७ ॥ समकित रयण छे जगमें रे, जनने तारवा रे ॥ नविक जीवने निमी रे, वंछित सारवा रे ॥ नाख्युं ए समकित परम निधान, मुगति वधूनुं दाता निदान ॥ जिनवरें नाख्युं सघले रे, सूत्र सिद्धांतमां रे ॥ १ए ॥ एहवा गुण तुमें जाणी रे, समकित धारजो रे ॥ निंदा विकथा परनी रे, दूर निवारजो रे ॥ ज्युं लहो नवियां समकित शुद्ध, जो जगदीश दे तुमने बुद्ध ॥ तो सडशठ बोलें करीने रे, समकित धारजो रे ॥ २० ॥ नविक जीवने समकित रे, जीवनुं मूल छे रे ॥ समकितधारी जीवने रे, शिव अनुकूल छे रे ॥ इम कहे लब्धिविजय उजमाल, चोथा उल्लासनी नवमी ढाल ॥ हलुवा कर्मी जीव ते रे, वयण ए मानशो रे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] सुणजो नवियण तुमें, हरिबल केरी वात
[illegible] पुर नयरनुं, विलसे राज विख्यात ॥ १ ॥
[illegible] प्रबल, मांफी दाननी शाल ॥ नम
[illegible] ने, देवे दान विशाल ॥ २ ॥ नव नेदें
[illegible] त्र तणे अनुसार ॥ जन्म सफल करवा

नणी, मांड्यो सत्तुकार ॥ ३ ॥ साते खेत्रें वावरे, के इ लख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मांडि स्वर्गशुं होड ॥ ४ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सुधी आणा राय ॥ मारी शब्द को उच्चरे, तो ते खूनी थाय ॥ ५ ॥ विण खूनें को जीवने, को न उपाडे श स्त्र ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥ ६ ॥ इणि परें हरिबल राजवी, पाले राज्य अखंड ॥ परजाने इंदु समो, अरिमन नीम प्रचंड ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मारुजी साथीडा साथें धण रें, हाथें मद पियो रे लो, मारो माणिगर मारुलो ॥ ए देशी ॥ नवियां नगरी विशाला झाक, झमाला सोहती रे लो, मानुं कैलासपुरी लो ॥ न० ॥ सोहम वासीनी परें खासी, मोहती रे लो ॥ ठकुराइ उंपे सनूरी लो ॥ १ ॥ न० ॥ पुण्य प्रनावें नावें, नोगवे राजने रे लो, हरिबल नाग्य विशाला लो ॥ न० ॥ सुजस [illegible] रजने, करवा साजनें रे लो ॥ प्रगटयो प[illegible] लो ॥ २ ॥ न० ॥ शोलशें देशें पुण्य, [illegible] यें रे लो, साध्या देश हगीला लो ॥ [illegible] राया तेह, नमाया हवियें रे लो, हु[illegible]

लो ॥ ३ ॥ ल० ॥ करटी काला मद मत, वाला फूल-
ता रे लो, जाणियें टूक हिमाला लो ॥ ल० ॥ चैत
रें केसु रंग, नवेसुं फूलता रे लो, सोहे सिंदूरें शुंढाला
लो ॥ ४ ॥ ल० ॥ घुघर घंटा रण झण, घंटा वाजता
रे लो, गाजता अंबर सूधी लो ॥ल०॥ एहवा संख्या
ता गण्या नवि, जाता साबता रे लो, गज घंटा श्रेणि
विशुद्धी लो ॥ ५ ॥ ल० ॥ रवि रथना ज्युं वाजी,
ताजी वेगना रे लो, लाजे हरिबल द्वारा लो ॥ ल०॥
करे खुडताला पद पड, ताला मेघना रे लो, अगणित
अश्व अपारा लो ॥ ६ ॥ ल० ॥ वहेल सुखासन
मानुं, सुरासन ताकडा रे लो, एहवा रथ रढियाला
लो ॥ ल० ॥ रण सुलटाला जे मठ, राला वांकडा रें
लो, एहवा अगणित पाला लो ॥ ७ ॥ ल० ॥ सुरप
ति सरिखो हरिबल, हरखी आमनी रे लो, लोगवे रा
ज्यनी लीला लो ॥ ल० ॥ अपछर वरणी पियु मन,
हरणी कामिनी रे लो, विलसे शोलशें बाला लो ॥
८ ॥ ल० ॥ बत्रीश बद्धा नाटक, सुधा स्वादना रें
सण तेहनुं ला ॥ २१ ॥ ल० ल० ॥ गणि[redacted]
छुं, विचारी प्रेष्यने रे लो, मूकुं नगरी वि[redacted]
॥ ल० ॥ बेसी एकांतें लिखें हवे, खांतें लेखने रें

री रे लो, चिहुं दिशि कीरति चावी लो ॥ न० ॥ साग र स्वामी अंतर, जामी सुस्तरी रे लो, आपी ठकुराइ मवी लो ॥ १० ॥ न० ॥ हरिबल आगें पु एय, विनागें नूतलें रे लो, बीजा नृप ढंकाणा लो ॥ न० ॥ दानें मानें जन सवि, माने नुजाबलें रे लो, हरिबल जगमें पंकाणा लो ॥ ११ ॥ न० ॥ जो जो तोई पुण्यवंत, होइ कगीयो रे लो, एकण जीव दयाथी लो ॥ न० ॥ जन मन वसियो मधुकर, रसियो नोगी यो रे लो, थयो सुगुरुनी मयाथी लो ॥ १२ ॥ न० ॥ नाखी जालने ग्रही, मछलने छेदतो रे लो, नि शिदिन जलमें हस्तो लो ॥ न० ॥ काचलां घस्तो पा पनो, रस्तो वेदतो रे लो, ते थयो नृपमें वस्तो लो ॥ १३ ॥ न० ॥ एहवी वातो गुण, विख्यातो सांनली रें लो, वसंतसिरीने तातें लो ॥ न० ॥ बारे वरसें क विजन, आशें मन रली रे लो, लही सुधी पुत्रीनी मातें लो ॥ १४ ॥ न० ॥ नूपति निसुणी चिंते, सुगुणी शी थइ रे लो, जो जो धाता करणी लो ॥ न० ॥ पुत्री रूडी [illegible] कडी ऊली [illegible] तडवा साथ ॥ ७ ॥ [illegible] परवरी, सेना पंच हजार ॥ योजन चउसय लंघिने, आव्यो विशाला पार ॥ ८ ॥ वीशालापुर नय

नो संबंध मले पर,बंध ते जातिना रे लो ॥ जावि तेह
ज करे रे लो ॥ १६ ॥ ज० ॥ उत्तम मध्यमनुं इहां,
कारण को नही रे लो, जाविथी को नही माह्यो लो ॥
ज०॥ जेहनी लागी लगन, तेहने ते सही रे लो,कोइ
न रह्यो साह्यो लो ॥ १७ ॥ ज० ॥ मुजथी गानी
गइ, निशानी कुत्रीने रे लो, न पडी खबर को अंदरें
लो ॥ ज० ॥ हवे शा विशासा दइ, दिलासा पुत्रीने
रे लो, तेडुं हवे निज मंदिरें लो ॥ १८ ॥ ज० ॥
सुणि नृप हरख्यो जमाइ, परख्यो धीवरु रे लो, अतुली
बल पुण्यवंतो लो ॥ ज० ॥ धीवर जाति थयो नृप,
पांति शूरवरु रे लो,माहरी पुत्रीने संतो लो ॥ १ए॥
॥ ज० ॥ मुज नगरीनो लोक ए, धीवर जातिनो रे
लो, जेहनी दुष्कृत करणी लो ॥ ज० ॥ कुल ब
त्रीशें क्षत्री, वंशें नातिनो रे लो, ते थयो सुकृत कर
णी लो ॥ २० ॥ ज० ॥ रायमें रायां कविजनें, गाया
चिहुं जगें [illegible]लो, प्रबल ए पद छे जेहनुं लो ॥ ज० ॥
एहवो ज[illegible] पुण्यवंत पाइ, जली वगें रे लो, देखुं दरि
लो, होवे [illegible] रंगाल[illegible]
कवि जन, [illegible]ता उल्लादना रे लो, बोले बिरुद वडाल
लो ॥ ए ॥ ज० ॥ हरिबल केरी अतिही, जलेरी विस्त

लो, वसंतसेन नृपाला लो ॥ २२ ॥ न० ॥ जो जो धर्मी हरिबल, कर्मी अब्धियें रे लो, कीधो झाक झमाला लो ॥ न० ॥ चोथा उल्लासनी पुण्य, प्रकाशनी लब्धियें रे लो, नांखी दशमी ढाला लो ॥ २३ ॥ न०

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें चित्तमां चिंतवी, वसंतसेन नृपाल ॥
कागल मश लेखण करी, मांमे लेख रसाल ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री श्रीकृष्णजना, चरण कमल नमि तास ॥
लेख लख्यो रलियामणो, जामाताने उल्लास ॥ २ ॥
नृप तेडावे ततखिणें, मतिसागर मंत्रीश ॥ ते पण तत्तखिण आवियो, प्रणमी नाथ जगीश ॥ ३ ॥ नृप कहे सुण मंत्रवी, आ सोंपूं तुझ लेख ॥ जामाता मुझ पुत्रिने, देजे लेख विशेष ॥ ४ ॥ कहेजे प्रणिपत माहरी, घणी करी मनुहार ॥ कहेजे ससरे तेडवा, मूक्यो मुझ निरधार ॥ ५ ॥ शीख नलामण इणिपरें, नृपें कीधी जोर ॥ सैनशुं मंत्री [illegible]ो, देइ नगारे गोर ॥ ६ ॥ कंचन पुरनां मानवी, [illegible]से जाणी वम्न ॥ जामाता निज पुत्रिने सो, जे येह [illegible]नी घरणी लो ॥ १५ ॥ न० ॥ छठी रातना लेख, लख्या जे जातिना रे लो, कुण ते टाली शके रे लो ॥ न० ॥ जेह

रनां,दिगं महोटां मंमाण ॥ जाणे स्वर्गपुरी वसी,आवीने इण गाण ॥ ए ॥ वाडी महोलें मलपति, फुलि चिहुं दिशि वनराय ॥ जाणे वन नंदननी बहेनडी, आय वसी इण गाय ॥ १०॥ इणिपरें सेना मंत्रवी, देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें कस्यो, वेला शुन्न घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी सखरी जोवतां, आव्या ते दरबार ॥ हरिबल नृपने नेटिया, उपनो हर्ष अपार ॥१२॥ हरिबल सुरपति सारिखो, बेगो धरावी उत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी,दीधो नृप कर पत्र॥१३॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ शेत्रुंजानो वासी साहेब, माहारे दिल वस्यो रे ॥ मोरा साहेबा ॥ आदिजिन करुं रे जूहार ॥ ए देशी ॥ कागल देइ हर्ष धरे चित्तशुं रे॥मोरा साहिबा॥ ए तो विनवे मंत्री विशेष ॥ तेडवा तुमने मुक्या अमने हेतशुं रे ॥ मो० ॥ तुमचे ससरेजीयें लेख ॥ १ ॥ कागल० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन तुमचो राखे मनो मल्या तणो रे ॥मो०॥ तुम ससरोजी नूपाल ॥ दरिसण दीजें पावन कीजें आंगणो रे ॥मो०॥ तुमची सासुनो कृपाल ॥२॥का०॥ ससरो जमाई आनंद पाई एकगा रे ॥मो०॥ बेसी करो रंग रोल ॥ नेह सुधा

रस वरसे पावस गह्घटा रे ॥मो०॥ ऊपजे ज्युं रंगचो ल ॥ ३ ॥ का०॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम शुं रे ॥ मो० ॥ कह्युं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी अंतरजामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो धरी प्रेम ॥ ॥ ४ ॥ का० ॥ ससरो ने सासु नही कांहि फासु था वती रे ॥ मो० ॥ आव्या विना प्राणाधार ॥ पं जर तिहां ठे जीव इहां ठे जावथी रे ॥ मो० ॥ इणि परें राखे ठे प्यार ॥ ५ ॥ का० ॥ तेमाटे तुमने कहुं शुं प्रजुने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थइ एक रंग ॥ वेगा थाउ वार म लाउ सहचरी रे ॥ मो० ॥ ल्यो सेना तुम संग ॥ ६ ॥ का० ॥ इणि परें सयणा मंत्री वयणां सांजली रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिबल ताम ॥ कागल वांची मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥ सेना सजि अजिराम ॥ ७ ॥ का० ॥ तिहांथी मंत्री ऊठ्यो गंत्री शीघ्रथी रे ॥ मो० ॥ आव्यो ते कुमरी पास ॥ तातनो मंत्री उलख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥ ॥ मो० ॥ वसंतसिरीयें उल्लास ॥ ८ ॥ का० ॥ म लवा ऊठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां आंसू जोर ॥ जनकने जी परें मलियां जलि परें स यणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी समोर ॥ ए ॥ का०॥

बेसि एकांतें कुमरी खांतें पूछती रे ॥ मो० ॥ कुशल खेमनी रे वात ॥ मात पितानां सुख शाता जे छती रे ॥ मो०॥ ते कहो मुफ अवदात ॥१०॥का०॥ तव मंत्री जंपे पत्र समर्प्यो तातनो रे ॥ मो० ॥ वलि मुखथी कहे एम ॥ छे बहु तुमशुं मलवा मनशुं मातनो रे ॥ मो० ॥ चातक जलधर जेम ॥ ११ ॥ ॥ का० ॥ सो वातें एकण वातें मानजो रे ॥ मो० ॥ जंतुउ छे तुम संग ॥ मत जाणो काचुं सहि करि साचुं जाणजो रे ॥ मो० ॥ तुम आवे होशे रंग ॥ ॥ १२ ॥ का० ॥ एहवो उत्तर मंत्री पडुत्तर दीधलो रे ॥ मो० ॥ हरखी कुमरी ताम ॥ सचिवने राजी कुमरीयें मांफी कीधलो रे ॥ मो० ॥ देइ वधामणी उद्दाम ॥ १३ ॥ का० ॥ दंपति दोइ मुहूरत जोइ हरखशुं रे ॥ मो० ॥ शोलशें राणी समेत ॥ सस राने मलवा सगपण कलवा हर्षशुं रे ॥ मो० ॥ उमाह्या जनमनें खेत ॥ १४ ॥ का० ॥ श्री पति नामें वणिक सुधामें मल्हीने रे ॥ मो०॥ राख्या जे पूर्वें ते जाण ॥ तेहने तेडी पूर निगेडी लल्हीने रे ॥ मो० ॥ सोंपी कख्यो कुल्लन दिवाण ॥ १५ ॥ का०॥ जरतारी मेरा अतिही घणेरा सोहता रे ॥ मो० ॥

ताण्या तंबू जडाव ॥ रवि शशी सरखा निरखी हरख्या मोह्ता रे ॥ मो० ॥ देखी तंबू बणाव ॥ १६ ॥ का०॥ गज रथ घोडा सुन्नट सजोडा साबता रे ॥मो०॥ शण गाख्या नाइव रंग ॥ वहेल सुखासण जाणे सुरासण फावतां रे ॥मो०॥ इम सजी सेना चंग ॥१७॥का०॥ पंचरंगी नेजा नन्नना ठेजा जोवता रे ॥ मो० ॥ रोप्या नेजा उत्तंग ॥ पवनें फरके सुरपति धमके न्नोन्नता रे ॥ मो० ॥ देखी फंफा अन्नंग ॥ १० ॥ का०॥ गवरीजाया मेंदी रंगाया दीपता रे ॥ मो० ॥ कनकमें जडीया शिंगाल ॥ घूघरमाला घमके रढाला जीपता रे ॥ मो० ॥ सुरधोरी सुकमाल ॥ १ए ॥ ॥ का० ॥ इणिपरें सेन्या मानवसेना राखता रे ॥ ॥ मो०॥ मह्लीयें सजि सेना उद्दाम ॥ हरिबल राजा चढतरि वाजां वाजते रे ॥ मो० ॥ चाल्या जनमनी नूम ॥ २० ॥ का० ॥ ससरानो मंत्री पुण्यपवित्री नेयता रे ॥ मो०॥ ले चाल्यो दंपति सार ॥ शीघ्र प्रयाणें थाउ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां फरणी नार ॥ २१ ॥ का० ॥ ते वन देखी दंपति हरखीं दीधला रे ॥ मो० ॥ मेरा ते वनमांहि ॥ किधा उतारा जीमण सारां कीधलां रे ॥ मो० ॥ चउरंगी

सेना उच्चाहि ॥ २२ ॥ का० ॥ प्यारि पयंपे पियुने जंपे हेतनी रे ॥मो०॥ वाणीयें वीनवे नूप ॥ इंद्रपुरी सम नाम रहे तिम वेतनी रे ॥ मो० ॥ नगरी व सावो चूंप ॥ २३ ॥ का० ॥ श्रीजिनमंदिर अतिही सुंदर चोंपशुं रे ॥ मो० ॥ करो इहां तीरथ गाम ॥ जे मुज परणी ते करो करणी रूपशुं रे ॥ मो० ॥ जिम रहे जगमें नाम ॥ २४ ॥ का० ॥ तव ते मच्छी प्यारी सुलच्छी वयणथी रे ॥ मो०॥ समस्यो त्यां सा गर देव ॥ गुणनो रागी पुण्यविज्ञागी सयणथी रे ॥ ॥ मो० ॥ आव्यो सुर ततखेव ॥ २५ ॥ का० ॥ सुर कहे शाने तेडो माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होथ मननी हूब ॥ तव कहे हरिबल दाखो सुरबल मनें वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब ॥ २६ ॥ का०॥ तव तिहां नाकी बाकि न राखी पलकमें रे ॥ मो०॥ वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलशुं सुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥ ॥ २७ ॥ का० ॥ श्रीमुनि सुव्रत त्रीजग उक्षृत सो हती रे ॥ मो० ॥ बिंब ठव्युं करि चैत्त ॥ दंपति दोन्ही मूरति कीनी मोहती रे ॥ मो० ॥ पूर्वे जे लह्युं देवत्त ॥ २८ ॥ का०॥ रान वेलाउल ढिंग ने देउल देखिने

रे ॥ मो० ॥ दंपति थयां उजमाल ॥ चोथा उल्लासनी प्रेम प्रकाशनी. पेखिने रें ॥ मो० ॥ कहि लब्धियें अग्यारमी ढाल ॥ २९ ॥ का० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव जोयण लांबी वसी, पहोली योजन बार ॥ जाणुं लंकानी बहेनडी, वसी इहां वनह मझार ॥ १ ॥ सजल सरोवर जल नर्यां, वाडी तिम लह कंत ॥ जाणुं सुरवाडी इहां, प्रगट थइ महकंत ॥ ॥ २ ॥ पटराणीना नामनी, वासी नगरी सार ॥ वसंतपुरी नामें नली, चावी थइ संसार ॥ ३ ॥ इणि परें नगरी वासिने, हरिबल राजी कीध ॥ पहोतो ते निज थानकें, जलधी नाथ प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ वसंतसिरीना सचिवने, सोंपी नगरी तास ॥ केताई दिन तिहां रही, आगल चाल्या उल्लास ॥ ५ ॥ दल वादल हरिबल तणुं, चाले ज्युं जलपूर ॥ धरणी तलथी सलसल्यो, शेषनाग नयनूर ॥६॥ के शुं लेशे लंकने, के शुं लेशे स्वर्ग ॥ के शुं लेशे जगतने, इम जाणे जनवर्ग ॥ ७ ॥ इणिपरें हरिबल राजवी, चाल्यो अतिही चूंप ॥ सीमाडाना जे धणी, आवी नमिया नूप ॥ ८ ॥ इणि परें आण मनावतो, आव्यो आरज दें

श ॥ वात वधामणी ससुरने, मूक्यो मंत्रि विशेष ॥ ॥ ए ॥ ते पण अतिही उतावलो, मतिसागर मंत्री श ॥ आव्यो निज कंचनपुरी, पहोती मनह जगीश ॥ १० ॥ शीघ्र जई प्रणिपत करी, दीध वधाई ना थ ॥ जामाता तुम पुत्रीने, तेडी आव्यो साथ ॥ ११ ॥ वात वधामणी सांजली, हरख्यो कुमरी तात ॥ स न्मान्यो मंत्रीशने, दइ वधाइ विख्यात ॥ १२ ॥ हरि बल पण उतावलो, आव्यो जलधि तीर ॥ जिहां ल ह्युं समकित गुरुकने, दें त्यां मेरा सधीर ॥ १३ ॥ देखी जनमनी नूमिका, दंपति दो हरखात ॥ आ सा चूं के सोहणुं, मिलश्यां जननी तात ॥ १४ ॥ खूनी आपण दो जणां, हूतां नृपनां चोर ॥ ते थयां साचां पुण्यथी, जव मिल्या गुरु इण गोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मोतीयारां हें लुंबक फुंबखां ॥ अथवा ॥ अजि त जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ एंम चिंतवी दंपति दो जणां, कालिकाने देउल आय ॥ सहि हुआं रंग वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा नक्ति करी घ णी, एतो प्रणम्या देवीना पाय ॥ १ ॥ स० ॥ धन धन मावडी जगतमां, प्रगटी तुं जन सुख हेत ॥

॥ स० ॥ दीन डुःखीया जीवने उद्धरी, करी पावन संपद हेत ॥ २ ॥ स० ॥ इम आसना वासना देवी नी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माता जीव जे सुरगिरिनी परें, अम पुत्रची सघली जगीश ॥ ३ ॥ ॥ स० ॥ हवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसंत सेन नूपाल ॥ स० ॥ तेम वसंतसेना राणी, पट्ट राणी थइ उजमाल ॥ ४ ॥ स० ॥ निज पुत्रीने वर कारणें, शणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥ एतो देव दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मलिया अपार ॥ ५ ॥ ॥ स० ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शणगास्या ते बहु गाट ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथरा व्या सोवन पाट ॥ ६ ॥ स० ॥ डुर्वानां हे तोरण बांधियां, वच्चें सुरतरु दल महकंत ॥ स० ॥ एतो घ र घर चहुटे चाचरे, फुलमालापुंज सोहंत ॥ ७ ॥ स० ॥ टोडे टोडे मोतीना झूमणां, लहकी रह्यां तेजमें ते ज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आवी स्व र्गपुरी नेहेज ॥ ८ ॥ स० ॥ शणगारी नगरी इणि परें, हरखी नृप वसंतसेन ॥ स० ॥ चतुरंगी सेना स ज करी, वर कुमरीने तेडवा तेण ॥ ए ॥ स० ॥ गय णांगण गूडी उछले, गुंजालां गुंजे निशाण ॥ स० ॥

साबेलां सबल ते सज कस्यां, नगरीजन कुमर सुजा॰ण ॥ १० ॥ स० ॥ इम आमंबरशुं नरपति, सामश्युं सबल सजेय ॥ स० ॥ चाल्यो कुमरी वरने तेडवा, पुरजनशुं हर्ष धरेय ॥ ११ ॥ स० ॥ नवयोवन नारी सोहामणी, मली गावे मधुरां गीत ॥ स० ॥ रंना उ वेशीना मद गालती, गावे कोकिल स्वरनी रीत ॥ ॥ १२ ॥ स० ॥ दलवादल देखी पुत्रीनुं, नृप पुरजन हरख नरात ॥ स० ॥ जिम नविकनें समकित मले, तिम मलिया ससरो जमात ॥ १३ ॥ स० ॥ वर कन्या आदि सहु मल्यां, नृप राणी हर्ष नराय ॥ स० ॥ तिण वेला हर्ष जे उपनो, ते तो पुस्तकॅ लखियो न जाय ॥ १४ ॥ स० ॥ कुमरी ने जनकी जनक तणो, वर्ष बारनो नांग्यो वियोग ॥ स० ॥ आ तें साचुं के सुहणुं थयुं, कुमरी वरनो संयोग ॥ ॥ १५ ॥ स० ॥ धन दिवस धन वेला घडी, मुज पुत्रीयें जे लह्युं मान ॥ स० ॥ एम मावित्र हरखे मनमें, जिम डुमक लहे सुनिधान ॥ १६ ॥ स० ॥ हरिबल ए नोश्नी जातिमां, प्रगट्यो वडो पुण्य निधान ॥ स० ॥ मुज पुत्रीनी संगतें, थयो उंच ए जग सुलतान ॥ १७ ॥ स० ॥ हवे हरिबलने ससरो कहे, ज

ली मीठी अमृत वाण ॥ स० ॥ स्वामी पधारो गज शिर चढी, पुर पावन करो प्रमाण ॥ १७ ॥ स० ॥ शेठ सेनापति सारथ मंत्रि, करे विनती हर्ष विख्यात ॥ स० ॥ तव हरिबल हर्ष विनोदथी, गजशिर चढ्या ससरो जमात ॥ १९ ॥ स० ॥ आमां साहामां वाजित्र वाजते, गावे गुणिजन शब्द अखंड ॥ स० ॥ होवे नाटक बत्रीश बद्ध जे, तेणें गाजी रह्युं ब्रह्मंड ॥ २० ॥ स० ॥ कर्यो उत्सव विवाह जेटलो, कुमरी नी वधारवा लाज ॥ स० ॥ नृपें करमूकामणें मंत्रीनें, दीधुं कंचनपुरनुं राज ॥ २१ ॥ स० ॥ मणि सोवन रूपुं सावटुं, गुणिजनने कीध पसाय ॥ स० ॥ करि पृथवी उरण दानमें, आश्रीजन बहु तृपति कराय ॥ २२ ॥ स० ॥ नलां नेटणां लावे पुरजना, वर कन्याने करे नेट ॥ स० ॥ मन वंछित सुखनिधि उलटीयो, तेणें नारूयां दुःखने उछेट ॥ २३ ॥ स० ॥ निवास नी जायगा मोटकी, रहेवाने दीधीजी खास ॥ स० ॥ रंग महोलमें वास्यो कुमरीने, दीधो एकविश नूमि आवास ॥ २४ ॥ स० ॥ जसपडहो वजाड्यो नयर मां, वरतावी मंत्रीनी आण ॥ स० ॥ वीरबल केरो हरिबल पुत्रडो, थयो राज्यें लिखित प्रमाण ॥ २५ ॥

स० ॥ जो जो नवियां साधुनी संगतें, लह्यो जीवद यानो धर्म ॥ स० ॥ थयो परसन जलनिधि देवता, तिणें वधार्यो मछीनो नर्म ॥२६॥स०॥ थयो चावो ते चिहुं खूंटमें, नोगवे शुन ऋद्धि समृद्ध ॥ स० ॥ जाणे सुरपतिनो समोवडी, थइ बेगो मछी प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ स०॥ नलें प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, उपगारी परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोथा उल्लासनी बारमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ २८ ॥ स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवा सद्गुरु वयणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥ थयो परसन जल देवता, वधियो मछी नर्म ॥ १ ॥ हरिबल दो पदवी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुराइ बत्रीश लाखनी, पायकें अश्व सुहाय ॥ २ ॥ शुंढा दंम विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें गज घटा, सोहे सहस अढार ॥ ३ ॥ सुख विलसे संसारनां, शोलशें राणी सब ॥ पटराणी थापी वडी, वसंतसिरी सुकयब ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी, काली कर्कशा नार ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, करि अपबर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सूधी बे आण ॥ तिहां सूधी को जीवनां, का

ढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणिपरें लीला जोगवे, पूरव पुण्य पसाय ॥ चावो थयो चिहुं खूंटमें, महोटो ह रिबल राय ॥ ७ ॥ हवे ससरो हरखें करी, वसंतसेन नूपाल ॥ जामाताने वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥ ॥ ८ ॥ द्यो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपा र ॥ शिव रमणी वरवा अमें, लेशुं संजम नार ॥ए॥ एम कही आणा लही, सासू ससरो दोय ॥ पंच महाव्रत उच्चर्यां, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ च ढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां धणी, थयां सूधां अणगार ॥११॥ क्षपक श्रेणी चढ तां थकां, तेरमुं लह्युं गुणगाण ॥ शुक्ल ध्यानना जो गथी, पाम्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोशठ इंद्रादिक मली, अंबुज नंद रचेण ॥ नाविकने प्रतिबोधतां, लहे बिजबोध विशेण ॥ १३ ॥ केवल कमला जोग वी, पाली पूरण आय ॥ कर्म कुटिल दूरें करी, पहो तां शिवपुर गायं ॥ १४ ॥ धन धन वसंतसेनने, धन वसंतपट नार ॥ दंपति दो मुगतें गया, चढियां मुक्ति मझार ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ नथरो नगीनो महारो, हाररो हीरो महारो, नण

वीरो वीरो महारो साहेबो, पना मारु घडी एक करहो फुकाय हो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल सुख नोगवे ॥ पुण्य वंत ॥ पाले राज अखंम हो ॥ सागर देव पसाय्यथी ॥ पुण्यवंत ॥ थयो गुण मणिनो करंम हो ॥१॥ सुगुण सनेही प्यारो, धर्मनो मोही शुन, अनुनव गेही सुख सागरु ॥पु०॥ हरिबल परजा पाल हो ॥ ए आंकणी ॥ आण मनावी चिहुं दिशें ॥ पु० ॥ षोडश देश विशेष हो ॥ षोडश देशनी अंगजा ॥पु०॥ विलसे ज्युं सुख सुरेश हो ॥ २ ॥ सु० ॥ गुण लिये जीव दया तणो ॥पु०॥ गुण ले गुरु उपदेश हो ॥ परतख देखी पारख्युं ॥ पु० ॥ हरख्यो मन्नी नरेश हो ॥३॥ सु०॥ तो हवे महिमा धर्मनो ॥ पु० ॥ प्रगट करुं उजमाल हो ॥ मानव नव सफलो करी ॥ पु० ॥ मेली सुकृत माल हो ॥४॥ सु०॥ इम जाणी जल कांठडे ॥ पु०॥ जिहां लह्यो गुरु उपदेश हो ॥ तिहां कणे चैत्य रची नलुं ॥पु०॥ राखुं तिहां नांम विशेष हो ॥५॥सु०॥ षोडश देश सुहामणा ॥पु०॥ कीधा जिन प्रासाद हो ॥ बिंब नराव्यां रयणमें ॥ पु० ॥ ठंमी सघलो प्रमाद हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ अमारि पलावे आपथी ॥ पु० ॥ षोडश देश मकार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे ॥पु०॥

सघली परजा विचार हो ॥ ७ ॥ सुं० ॥ नव नेदें जे पुण्य छे ॥ पु० ॥ गणांग सूत्र मजार हो ॥ तिण वि धें हरिबल केलवे ॥ पु० ॥ गुरुमुखी थइने विस्तार हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ जीव दया फल देखीने ॥ पु० ॥ सद्गुजन धर्म दीपाय हो ॥ लोक कहे जेहवा रा जवी ॥ पु० ॥ एहवी परजा कहाय हो ॥ ए ॥ सु० ॥ इणि परें रंग विनोदमें ॥पु०॥ काढे सुखमें दीह हो॥ तिण समे मल्लीरायने ॥ पु० ॥ प्रेष्य आव्यो अबीह हो ॥ १० ॥ सु० ॥ विशाला नगरी तणो ॥ पु० ॥ आप्यो प्रेष्यें लेख हो ॥ श्रीपति मंत्री तुम तणो ॥ ॥पु०॥ तेडवा मूक्यो विशेष हो ॥११॥सु०॥ ए अधि कार ते सांजली ॥ पु० ॥ वांच्यो विशालालेख हो॥ सन्मानी ते प्रेष्यने ॥ पु०॥ दीधो उतारो अशेष हो॥ ॥ १२ ॥ सु० ॥ मतिसागर मंत्रीसरु ॥ पु० ॥ मल्ली यें तेड्यो सुजाण हो ॥ कनक पुरी रखवालवा ॥ ॥ पु० ॥ कीधो कुल्ल दीवांण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ बांध छोड दरबारनी ॥ पु० ॥ में सोंपी तुज आ ज हो ॥ परजा जिम सुखमें रहे ॥ पु० ॥ ते तुमें क रजो काज हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ शीख जलामण इणि परें ॥पु०॥ मल्लीयें कीधी चंग हो ॥ हरिबल चाल्यो

पुर जणी ॥ पु० ॥ सचिवने सोंपी डिंग हो ॥ १५ ॥
सु० ॥ चतुरंगी सेना सज करी ॥ पु० ॥ जाणियें ना
इव रंग हो ॥ दलवादल जलपूर ज्युं ॥ पु० ॥ ले च
ल्यो घणे आरंभग हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ वसंतपुरी पट
नारीनी ॥ पु० ॥ पूर्वें वसावी जेह हो ॥ ते नगरीयें
आवीया ॥ पु० ॥ पामी परजानेह हो ॥ १७ ॥
सु० ॥ दिन केताइक तिहां रह्या ॥ पु० ॥ आगल
चाल्या शीघ्र हो ॥ विशालापुर संनिधें ॥ पु० ॥ आ
व्यो हरिबल तिग्र हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुज लग्नें शु
ज मुहूरतें ॥ पु० ॥ नगरीमें कीध प्रवेश हो ॥ जाणी
यें हर्षपयोधिमां ॥ पु० ॥ किधो प्रवेश नरेश हो ॥
॥ १९ ॥ सु० ॥ पुर जन सहु राजी थयां ॥ पु० ॥
नयणें निरखी नाथ हो ॥ सोहवें मली शुज मोती
यें ॥ पु० ॥ नृपने वधाव्यो सनाथ हो ॥ २० ॥
सु० ॥ जलें आरंबरें उत्सवें ॥ पु० ॥ पहोतो नृप द
रबार हो ॥ बत्रीश राजकुली मल्यां ॥ पु० ॥ मलि
या बांह पसार हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ जल जलां लावे
जेटणां ॥ पु० ॥ नृप पण ते करे अंग हो ॥ सनमा
नी मब्बी तेहने ॥ पु० ॥ देइ शिरपाउ ते रंग हो ॥
॥ २२ ॥ सु० ॥ इणिपरें लीला राजनी ॥ पु० ॥

जोगवे मञीराय हो ॥ रहे जीनो रसतानमें ॥ पु०॥ वीशाला पुरराय हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ शोल कलामें चंद्रमा.॥ पु० ॥ सोहे ज्युं ऊजास हो ॥ तिम हरिबल शोल जनपदें ॥ पु० ॥ सोहे तेजप्रकाश हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ ए गुण जीवदया तणो ॥ पु० ॥ फलिया मनोरथ सिद्ध हो ॥ लब्धें चोथा उल्लासनी ॥ पु०॥ तेरमी कही परसिद्ध हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच विषय सुख विलसतां, वीता केता दिन्न ॥ वसंतसिरी पटनारीयें, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ १ ॥ श्री बल नामें सिंह ज्युं, प्रगट्यो माहाबलवंत ॥ हरिबल केरो पुत्रडो, सकलकला ऊीपंत ॥ २ ॥ कुसुमसिरी जे लंकनी, तिणें पण जन्म्यो पुत्र ॥ मात पिताने सुख दियें, चलवे घरनां सूत्र ॥ ३ ॥ सुबलनामें पुत्र जे, प्रगट्यो ज्युं रवितेज ॥ मातपिता हरखे घणुं, देखी दो सुत हेज ॥४॥ रामने लखमण जोड ज्युं,सो हे त्युं दो च्रात ॥ दानें मानें आगला, पुहवीमां करे ख्यात ॥ ५ ॥ जोड मली दो च्रातनी, श्रीबल सूबल नाम ॥ राज काजमें तत्परा, राखे मन अन्निराम ॥ ॥ ६ ॥ बीजी राणी जे अछे, षोडशें जे शुन्न मन्न॥

तिणें पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ७ ॥
इणिपरें लीला नोगवे, हरिबल पुण्य विख्यात ॥ सं
सारिक जे सुख कह्यां, विलसे ते सुख सात ॥ ८ ॥
तन धन स्त्री सुत सस्यनी, अंबर रस ए सात ॥
जेहने घरें पुण्यवेल छे, तेहने ए सुख शात ॥९॥ इणि
परें काल ते नीगम्यो, वर्ष सहस पचवीश ॥ नृप
राणी सरखे मनें, पाले धर्म जगीश ॥ १० ॥ जैन
दरीसनमें थइ, नृपनी जगती कहाय ॥ तिहां सूधी
ऋषि विचरता, पुहवि पवित्र कराय ॥ ११ ॥ देव गु
रुने वांदिनें, सांजलि गुरु उपदेश ॥ त्यार पछें ते कें
लवे, घरनां काज विशेष ॥ १२ ॥ इणिपरें हर्ष विनो
दमें, श्रीजिनधर्म दीपाय ॥ तिण समे विशमा जिन
तणा, आव्या मुनिजन राय ॥ १३ ॥ पंचसयाशुं
परवस्या, गणधर सुस्थित नाम ॥ वीशाला पुर परि
सरें, उतस्या निरखीं गाम ॥ १४ ॥ साधु वधामणी
मालीयें, नृपने दीधी ताम ॥ नृप पण निसुणी
मालीने, देवे महर्द्धिक गाम ॥ १५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ सुडला संदेशो कहेजे महारा पूज्यने र ॥ अथवा॥
जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥ वात वधा.

भणी गुरुनी सांजली रे, हरखित थया नृप लोक रे ॥ धव धव धाइ गुरुने वांदवा रे, आव्या ते जोगी चातुर अनेक रे ॥ १ ॥ सांजले मीठी गुरुनी देशना रे ॥ ए आंकणी ॥ जेह थकी पाप पुलाय रे ॥ पावन होवे जीवित आपणुं रे, अक्षय पद ते लहाय रे ॥ ॥ सां० ॥ २ ॥ अजिगमन पांचे साचवी रे, बेग ते गुरुना वंदि पाय रे ॥ एकण चित्तें एकण ध्यानथी रे, सांजले दो कर जोडी राय रे ॥ ३ ॥ सां०॥ तिण समे गुरु पण अवसर उलखी रे, देशना देवे ज्युं जल धार रे ॥ जिनवरें जांखी जेहवी देशना रे, तेहवी ते वाणीयें कीधो उच्चार रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ सांजलो जवियां मीठी देशना रे ॥ पामी ते मानवनो अव तार रे॥एलें कां हारो मनुजव पामीने रे,सज्ञान संधी सारो सार रे ॥५॥सां०॥ पंखी परें रे मेलो ए मल्यो रे, उमतां शी लागे तस वार रे ॥ तेम रे सगाइ स्वारथनी जणी रे, मटतां शी लागे तेहनी वार रे ॥ ६ ॥ सां०॥ को कहो तात ने को कहो मात नें रे,को कहो भ्रात ने को कहो जात रे॥इणिपरें सयण संबंध ते वयणथी रे,स गपण वेंची लीधुं ख्यात रे ॥७॥सां०॥ को करो प्रीत को करो वेरनें रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थावुं

छे अंतें सहुने कालथी रे, आखरे प्राणी धूड भेली धूड रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ कूडी माया ने कूडी कामिनी रे, कूडां छे अर्थी बंधव लोक रे ॥ कूडी छे दुनियां घा बल छांह ज्युं रे, ते पण अंतें होवे फोक रे ॥९॥सां०॥ प्राणथी वाहालो जेहने जाणियें रे, राखीयें तेहने ज्युं करि ग्रंथ रे ॥ ते पण न रहे उनो पूछवा रे, जातां ते लांबे महोटे पंथ रे ॥ १०॥ सां०॥ केहि गया ने केहि जायशे रे, केहि छे प्राणी जावणहार रे ॥ पुण्यं विहूणा इण वाटडी रे, जाशे ते प्राणी हाथ पसार रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ कुण ते राणा ने कुण ते रांकने रे, आखर एहिज एक छे वाट रे ॥ आवशे साथें सु कृत कीधलां रे, उतरतां ते भवनो घाट रे ॥ १२ ॥ ॥सां०॥ श्यो रे भरोंसो काचा कुंभनो रे, श्यो वली क रवो धननो मंद रे ॥ देखत संध्याराग तणी परें रे, उडी ते जावे खिणमें अछद रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ दश रे दृष्टांतें मानव भव तणो रे, पाम्यो जो जनम क दाय रे ॥ तो वली फरि फरि पामवो दोहिलो रे, जिम करी घूणाक्षरने न्याय रे ॥१४॥ सां०॥ दान शीयल तप भावना रे, भांख्यो जे जिनवरें चउविह धर्म रे ॥ तेहनो जो कीजें खप शुभभावथी रे, छूटीयें खिणमें

निज निज कर्म रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ होवे ते सहस्र गणुं पुण्य जाचतां रे, लाख गणुं ते अजाची होय रे ॥ कोडी गणुं फल गुप्त ए दानथी रे, ए फल पुण्यनुं इणि परें जोय रे ॥ १६॥ सां०॥ व्याजें दीये ते धन बमणुं लहे रे, चोगणुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ शत गणुं पामे एकृण क्षेत्रथी रे, दान सुपात्रनी संख्या न थाय रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ परभव जातां ए म होटी सूखडी रे, बांधीयें भातुं आवे काम रे ॥ सुर नर अक्षय पदवी सुख पामियें रे, वाधे ज्युं नरभव केरी माम रें ॥ १८॥ सां०॥ एहवुं जाणीने पुण्य कीजीयें रे, दीजीयें भावें दान सुपात्र रे ॥ भूगति मुगति दो पदवी लहे रे, कीजीयें आपणुं निर्मल गात्र रे ॥ ॥ १९ ॥ सां० ॥ आपज आपणे तरशो तुंबडे रे, नही कोइ आवे परभव साथ रे ॥ एहवुं जाणीने प्राणी चेतजो रे, जइ समकित वृक्षनी भरजो बाथ रे ॥२०॥सां०॥ इणि परें उपदेश सुणिने भावियां रे, व्रत पचक्काणनी सुखडी लीध रे ॥ राजा ने राणी पण थइ इकमनां रे, वचन सुधारस कानें पीध रे ॥ २१ ॥ ॥ सां० ॥ विषय कषायना मल सवि छांमीने रे, आदरे दंपति सुकृतमाल रे ॥ चोथा उल्लासनी लब्धि

विजयें कही रे, सुंदर महोटी चौदमी ढाल रे ॥ ॥ २२ ॥ सां० ॥

॥ दोहा ॥

॥इम उपदेश ते सांजली,हरखी परषद सार.॥ गुरुने वांदी थानकें, पहोता सहु आगार ॥१॥ तव कहे नृप कर जोडीने, सांजलो गुरु गुणगेह.॥ जव स्थिति क्यारें पाकशे, माहरी कहो ससनेह ॥ २ ॥ तव गणधर सुस्थित कहे, सांजलो तुमें माहाराय ॥ पांच व सहस्र ते वर्षनुं, छे महोटुं तुम आय ॥ ३ ॥ तिहां सूधी तुमने घणुं, छे जोगावलि कर्म ॥ जव ते स्थिति पूरी थशे, तव वधशे तुम जर्म ॥ ४ ॥ पूरव जव तुम सांजली, केवली मुनिचंद्र पास ॥ संयम नृपशर णुं ग्रही, लेहशो शिव पदवास ॥ ५ ॥ ए अधिकार ते सांजली, हरख्यां राणी राय ॥ पहोतां सहु निज मंदिरें, वंदी गुरुना पाय ॥ ६ ॥ .

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ छेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल निज मंदिर आवी, करे निज सुकृत करणी ॥ वसंतसिरी पट्टराणी आदें, करे सघली पुण्यजरणी ॥ १ ॥ नवियां सुणजो, हरिबलनी जे करणी ॥ ज० ॥ चडवां

मोक्ष निसरणी ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पहेलाथी चोथे गुणगाणे, आवे हरिबल लेहतो ॥ प्रकृति सात नो क्षय ते करिने, क्षायक समकित ग्रहेतो ॥ २ ॥ ज०॥ श्रावकना गुण एकवीश महोटा, जे कह्या सूत्र सिद्धांतें ॥ ते गुण श्रावकना शुन पाले, नृप राणी मन खांतें ॥ ३ ॥ ज० ॥ चैत्य करावे श्रीजिन केरां, षोडशें देश मझार ॥ देशें देशें सुंदर दीपे, देंउल शोल हजार ॥ ४ ॥ ज० ॥ कोटि एक ते कनक रयणमें, उपर छप्पन लाख ॥ ए संख्या कहि जिनमंदिरनी, शोलशें देशनी साख ॥ ५ ॥ ज० ॥ चैत्यें चैत्यें पांचे रंगें, थाप्या जिन चोविश ॥ कोटि एकशठ लाख चु म्मालीश, बिंब जराव्यां अधीश ॥ ६ ॥ ज०॥ साधु जनने रहेवा सारु,रजतमें झाक झमाला ॥ सवा कोडि ते धर्मने हेतें, कीधी पोषध शाला ॥ ७ ॥ ज०॥ साव सोवनमें अक्षर रचना, लखीयां पुस्तक सार ॥ ज्ञानोपगरण करिने महोटां, मूके पुण्य नंमार ॥८॥ ज०॥ साहामीवछल दिनप्रतें मछी, पोषे नाव विशे ष ॥ जिनमतिनां साते ए खेत्रें,वावे इव्य अशेष ॥९॥ ज०॥ श्रीजिन नक्तितणी लय आणी, करे नित त्रिटंक सेवा ॥ बत्रिश बद्ध नृत्य करावे, प्रनु आगल जश लेवा

॥१०॥भ०॥ खट दरशनने भावें पोखे,जाणी लाभ अनं ता ॥ दान तणां दश दूषण टाली,दे आदर बहु संता ॥ ॥ ११ ॥ भ० ॥ चोथा गुणठाणानी ए करणी, करे हरिबल दिल साच ॥ सिद्धवधू वरवा भणी सारु, जाणीयें देवे लांच ॥ १२ ॥ भ० ॥ देशविरति गुण ठाणे चढीने, करे पंचपर्वी पोषा ॥ चउद नियम सं भारी संखेपें, काढे मनना रोषा ॥ १३ ॥ भ०॥ श्रा द्धनां जे कह्यां व्रत बारे, ते पण साचवे रूडां ॥ आवश्यक दो टंकनां साचां, साचवे मन नहीं कूडा ॥ १४ ॥ भ०॥ छठ अठम वली दशम डुवालस, करे तप चढतां शक्ति ॥ अष्ट करम दल डुर्बल कीधां,बेसवा सिद्धनी पंक्ति ॥ १५ ॥ भ० ॥ एकादश जे श्राद्धनी प्रतिमा, भांखी जे भगवानें ॥ विधि पूर्वकशुं जिन अरचीने, ते पण वहि एक तानें ॥ १६ ॥ भ० ॥ सा तमे अंगें पाठ ए चावो, जो जो भवियां रंगें ॥ दश श्रावकें जिम वहि शुभ प्रतिमा, तिम वहि मह्नि अ भंगें ॥ १७ ॥ भ० ॥ षट आवश्यक नवकार आदें, तेहनां वहे उपधान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, प हेरी माल प्रधान ॥ १८ ॥ भ० ॥ श्रावकने उपधान वह्या विण, नवकार क्रिया न सूझे ॥ साधूने पण

योग वह्या विण, वांचवुं सूत्र न सूझे ॥१ए॥ज०॥
पंचांगी में जोजो सघले, ठे अक्षर परगट्ट ॥ ते जा
णीने हरिबल पोतें, करे करणी गहगट्ट ॥२०॥ज०॥
इणिपरें नृप राणी गृह बेगं, जाव संयमने पाले ॥
त्रिकरण शुद्धे नावें करीनें, आतम नव अजुवाले॥
॥ २१ ॥ ज० ॥ हरिबल जे करे चैत्यनी करणी, ते
कोइ कहेशे खोटी ॥ ते उपर तुमें सुणजो प्राणी,
साखी कहुं बुं महोटी ॥ २२ ॥ ज० ॥ पांचमे आरें
वीरने वारे, जे हुउ संप्रतिराजा ॥ सहस ठत्रीश ते
जीरण देहरां, सहस पचविश ते ताजां ॥२३॥ज०॥
ए संख्यायें चैत्य कराव्यां, बत्रीश थडां प्रासाद ॥ को
टि सवा उगणी संख्यातां, बिंब जराव्यां उन्नाद ॥
॥ २४ ॥ ज० ॥ पाटणराजें सिद्ध, सिंघपाटें जे
हुउ कुमारपाल ॥ बावन जीनालां तिणे पण कीधां,
जीवित सूधी विशाल ॥ २५ ॥ ज० ॥ आबू उपरें र
जत समोवड, देउल महोटां दीपे ॥ श्रीआदीसर
मूरति थापी, शा विमलो जग जीपे ॥ २६ ॥ ज० ॥
साते धातें चउदे मणनी, चउ जिन पडिमा जरावी ॥
शा जीमे गढ आबूयें थापी, ते जुउ नजरें चावी ॥
॥ २७ ॥ ज० ॥ लाख नवाणुं खरची देउल, राणक

पूरें जे कीधो ॥ शा धरणो पोरवाड वखाण्यो, चउ मुख जइ जुउं सीधो ॥ २७ ॥ ज० ॥ शोलमो उद्धार शेत्रुंजा उपरें, त्रिजगमें परसिद्धो ॥ मांनवजव लहि श्रावक कुलमें, शा करमें जस लीधो ॥ २९ ॥ ज० ॥ आजने समयें एहवा प्राणी, जे हुआ रतंन सरीखा ॥ तो शुं तदा ते कालनुं कहेवुं, शी तस करवी परीखा ॥ ३० ॥ ज० ॥ ए दृष्टांत सुणीने जवियां, मानजो सघलुं साचुं ॥ धर्मी जनना जे गुण जांख्या, ते मत जाणजो काचुं ॥ ३१ ॥ ज० ॥ ए अधिकार सुणी जे सद्दहे, ते लहे मंगलमाल ॥ चोथा उल्लासनी ढाल पन्नरमी, लब्धें ए जांखी रसाल ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ इम करणी करतां थकां, वोल्यां सहसचउ वर्ष ॥ एटले मुनिचंद केवली, पाउ धास्या उत्कर्ष ॥ १ ॥ वाजां नाकी वाजीयां, मलिया चोशठ इंद ॥ नंद कमल रचना करी, थाप्यां ज्ञानदीणंद ॥२॥ गुरुनी वधामणी मालीयें,आवी नृपने दीध ॥ सन्मानें नृप मालीने, ग्राम पसायो कीध ॥ ३ ॥ जिम तृषातुर प्राणीया, धाइ सरोवर जाय ॥ तिम नृप निज परिवारशुं, प्रणम्या निज गुरु पाय ॥ ४ ॥ चाबुक जन श्र

वर्णे सुणी, पीवे श्रुत जल हेत ॥ वचनामृत जलध र गुरु, वरसे नवि मन खेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ देशी आख्याननी ॥ चेतो चेतो चेतो रे प्राणी, जाणी संसार असार ॥ अंजलि जल ज्युं आउखुं जाणी, म करो प्रमाद लगार ॥ १ ॥ परमाद पांचे परम वैरी, घेरी संसारी जीव ॥ नरग निगोदें नाखे दुःखमें, विण खूने ते अतीव ॥२॥ आठे मद माहा महोटा थइने, पहेलो प्रमाद वखाणो ॥ चोवीश दं डकें जीव दंभावे, परमाद एहवो जाणो ॥३॥ पांचे इंद्रियना थइ सघला, नांख्या विषय त्रेवीश ॥ ए बीजो प्रमाद जे सेवे, ते लहे थान चोविश ॥ ४ ॥ एकेक इंद्रिय मोकली मूके, जीव लहे ते घात ॥ ते उपर कहुं ज्ञानी नांखे, सांभलजो दृष्टांत ॥ ५ ॥ आंखने विषे दीपक देखी, चौरिंद्रि करे झंपापात ॥ चर चर तन दहे हेमने लोभें, पतंग लहे उपघात ॥ ६ ॥ घ्रा णेंद्रियनो जो थयो विषयी, रोलंब पंकजवासी ॥ सुंढा दंडें दंतियें ग्रही कज, आवळ्यो भमर तनुराशि ॥ ७ ॥ कानना रसिया नादना लीणा, नाग कुरंगम जेह ॥ बाजीगरने पारधि जालें, पासमें पडिया ते बेह ॥ ८ ॥

रसनानो थयो लोलुपी मछलो, जल कल्लोल जे क॰ रतो ॥ धीवरें गलुं गुड लोल देखाडी, तालुएं ग्रह्यो सुचि धरतो ॥ ए ॥ हाथणी देखी मांतंग महोटो, थयो कामातुर कूल ॥ कामवशें करि पडियो अजा डि, निज शिर नाखे धूल ॥ १० ॥ इणिपरें पांचे इं द्रिना रसथी, जे थया विषयाअंध ॥ तंडुलमछ परें कर्म्म निकाचित, बांधि जोगवे धंध ॥ ११ ॥ शोल क षाय ने नव नोकषाय, ए दो मलीने पचवीश ॥ त्रिजो प्रमाद ए जाणिने सेवे, पाडे ते नरकमें चीस ॥१२॥ अनर्थकारी पांचे निद्रा, सेवे जे चोथो प्रमाद ॥ बा विस सागर छिये जाये, जोगवे नरकनो स्वाद ॥१३॥ राजकथादिक चारे विकथा, परमाद पांचमो कर ता ॥ जारे कर्मी थइने प्राणी, लहे दुःख चउ गइ फरता ॥ १४॰॥ पंच प्रमाद ए दुष्ट जयंकर, सुव्रत हरे ते सदीवो ॥ लंक्ष चोराशि योनी फरतां, ए छे संसारनो दीवो ॥ १५ ॥ पंच प्रमादना ए गुण जी वडा, मनशुद्ध जावमें आणी ॥ प्रमाद पांचे दूरें छं मो, जिम थाउ केवल नाणी ॥ १६ ॥ प्रमादने वशें जाणे जीवडो, छे सघलुं ए महारुं ॥ पण ते ज्यंतर नि रखी जोतां, शुं देखे छे तहारुं ॥१७॥ दिवस निशा घट

मालनें जोगें, आंयु सलील घटाडे ॥ चंद ने सूरय वृ षन्न धोरीथी, काल रहट्ट नमाडे ॥ १७ ॥ इणिपरें न्यंतरमें निशिदिन वहे,नवकूपक घटमाल ॥ काल अनं तो परमाद संगें, पडियो मोहनी जाल ॥ १९ ॥ मो हनी जालमां जे नर पडिया,ते कदि नावे ऊंचा ॥ सागर कोडाकोडी सित्तेर सुधी, धरमशुं मांफे खूचा ॥ २० ॥ कंचन कामिनी अरथें मेले, माया महोटुं माणुं ॥ पण ते निशिदिन रहे जीव धखतो, जिम शघडीनुं ढाणुं ॥ ॥ २१ ॥ स्वारथनूत संबंध ए मलीयो, पोषवा पिंमने धाइ ॥ काम पडे कोइ ढुकडो नावे, जो जो जगनी कमाइ ॥ २२ ॥ पोतानो करि गणियें जेहने, ते होवे साहामो वैरी ॥ जो जो नवियां सगपण सा चुं, ज्ञाननी दृष्टें हेरी ॥ २३ ॥ मात पिता बंधु जात सुता पति, लेखवे साचि सगाई ॥ पण तस आवी अदल पोहोंचे, नवि रहे पूढवा कांइ ॥ २४ ॥ छे संसार विचारी जोतां, बाजीगरना गोटा ॥ क्षणनं गुर छे जीवित तो पण, माने वंछित पोटा ॥२५॥ जल परपोटा समान ए काया, शी तस कूडी माया ॥ य मने मंदिर जावुं सहुने, कुण डुर्बल कुण राया ॥ ॥ २६ ॥ वांऊणीयें जिम सुहणुं दीठुं, जाणे में ज

न्म्यो बेटो ॥ नाम विश्वंभर देइ एहवुं, वंध्या मेहणुं मेव्यो ॥२७॥ जब जागी तब रोवा लागी, किहां गयो माहरो पुत्र ॥ वृद्ध कालें मुजने सुखदाता, राखे घरनां सूत्र ॥२८॥ वंध्यानुं जिम सुहणुं खोटुं, तिम संसार छे खोटो ॥ एहवुं जाणी प्राणी चेतो, टाली मोहनो गोटो ॥ २९ ॥ ए संसार असार वखाण्यो, जेहवो गारनो त्रेह ॥ माननी अणीयें ज्युं जल कणिया, तिम छे जगमें नेह ॥३०॥ ऋद्धि ने रमणी आपणी तिहां लगें, जिहां लगें आंख्यो साजी ॥ आंख मीचाणे को नही ताहरुं, इम कहे जिनवर गाजी ॥ ३१ ॥ एटलामांहे समजी लेजो, जो हुवो मोक्षना अर्थी॥ तो ए प्रमाद पांचे छंडीने, करो सुकृत निज करथी ॥३२॥ चोथा उल्लासनी शोलमी ढालें, दीधो एम उपदेश ॥ लब्धि कहे भवि परखद बूजी, बूज्यो मल्ली नरेश ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांभली, विनवे बे कर जोडि ॥
कहो स्वामी मुज आगलें, पूरव भवनी होडि ॥ १ ॥
शी करणीयें हुं लह्यो, धीवर कुलनी जात ॥ शी करणी नृप पद लह्युं, शे लहि नृपथी ख्यात ॥२॥ शी करणी मुजने मल्यो, तटिनीनाथनो नाथ ॥ सुरम

णिनी परें मुजने, पूरी वंछित आथ ॥ ३ ॥ शी करणि कालसेन जे, खेल्यो मुजशुं घात॥में पण पाछी तेहने, उपजावी घणी घात ॥४॥ शी करणी सद्गुरु मल्या, मुजने दीधो धर्म ॥ जीवदया मुज दाखवी, प्रबल व धारी शर्म ॥ ५ ॥ तव कहे मुनिचंद केवली, सांजलो तुमें राजान ॥ पूरव जव करणी करी, ते कहुं तुमची निदान ॥ ६ ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेहवुं फल पाय ॥ शुजाशुजना बंध जे, ते तेहवा जोगवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥जनम्यो जेसल मेर ॥ अथवा ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय ॥ ए देशी ॥ चौलक्ष जोजन सार, धातकी खंम विदेह में जी ॥ विजय पुष्फावइ मनोहार, जद्दिलपुर वसे तेहमें जी ॥ १ ॥ तेहज डिंग मजार, विप्र वसे जयदेवता जी ॥ जयसिरी नामें ते नार, जारिया विप्रणी सेवता जी ॥ २ ॥ प्रसव्या ते द्विजणीयें बाल, पुत्रजुगल दो सोहामणा जी ॥ नयण वयण सुरसाल, रूप रंग में कोइ नहिं मणा जी ॥ ३ ॥ सूनंद उपनंद दोय, नाम ठव्यां दो पुत्रनां जी ॥ वाधे शशि परें सोय, मन हरखे मावीत्रनां जी ॥ ४ ॥ पाम्या ते जोबन बाल, परणावी दो अंगना जी ॥ रूपें ते जाक जमाल, जा

णीयें नाकि वामांगना जी ॥ ५ ॥ पंच विषय सुख
नोग, विलसे ते केतकी अंग ज्युं जी ॥ पूरव पुण्य सं
योग, रहे नीना सुखरंगशुं जी ॥ ६ ॥ एक दिन दो
मलि भ्रात, वसंत जोवाने नीकल्या जी ॥ तव तिहां
दीगे सुज्ञात, उपशम रसमें जे नल्या जी ॥ ७ ॥
श्री जिनवरनो जे गात्र, ध्यान धरी रह्यो काउस्सगें
जी ॥ देखी ते नवली हो यात्र, आव्या दो बंधव त
स-पगें जी ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनिना हो पाय, सुनंद
द्विज स्तवना करे जी ॥ उपनंद द्वेषें नराय, मुंफ पणुं
ते देखी सरे जी ॥९॥ काली ते काय कृशांग, मलम
लीन पणे दीठडो जी ॥ जाणीयें नोई नुजंग, डुर्गंध
गंधा अधीठडो जी ॥ १० ॥ डुष्ट दरिद्रीनो वेश, दी
सतो जाणीयें वाघरी जी ॥ न मर्द न स्त्रीनो वेश, एक
मां नही ए पसांगरी जी॥११॥मावित्रें मूक्या निसास,
नूखने नाडे करी रला जी ॥ दाखवी पापनी राशि,
सहुने करावे अगेला जी ॥ १२ ॥ नीची ते दृष्टि धरे
य, बगपरें हिंमे रसातला जी ॥ वदनें हो ते कर देई, बो
ले मुखथी धूरतकला जी ॥ १३ ॥ मधुरां नांखे हो
वेण, नर नारी विप्रतारवा जी ॥ मेले टोली ते सेण,
जठरनुं काज सुधारवा जी ॥ १४ ॥ इणिपरें मन

धरी द्वेष, उपनंदें साधुनिंदा करी जी ॥ करि वली डु गंछा विशेष, नीच कुलीनुं पोतुं नरी जी ॥१५॥ बांधी ज्युं रेशम गांठ, उपर मीण लपेटियें जी ॥ तिम एणें बांधीजी गाठ, नोगव्या विण किम बूटियें जी ॥१६॥ तव तिहां सूनंद भ्रात, रीश धरी कहे बंधुने जी ॥ मत करो साधुनी तांत, नाव धरी नमो साधुनें जी ॥ १७ ॥ साधु ठे जगमां उद्योत, ज्ञान दीवो करि दाखवे जी ॥ बांधे तीर्थंकर गोत, साधु वचन चित्त राखवे जी ॥ १८ ॥ मेले ते सकल संयोग, जो रु षि आवे हलकमें जी ॥ टाली ते कर्मना रोग, ज्यो तिवधू मेले पलकमें जी ॥ १९ ॥ चिलाती पुत्र जे डु ष्ट, ते गयो सुरलोक आठमे जी ॥ अढी दिन मांहि ते पुष्ट, रुषि वचनें थयो गाठमें जी ॥ २० ॥ करे नव कल्पी विहार, नाविकने पड़िबोहवा जी ॥ सूफ तो लेवें आहार, निज आतमने सोहवा जी ॥ २१ ॥ जीती ते रागनें द्वेष, उपशम रसमें जे नल्या जी ॥ स्वारथीयो जग देख, अहिकंचुकि परें नीकल्या जी ॥ २२ ॥ एहवा जे मुनिराज, तेहने किम करी नंदी यें जी ॥ प्रबल वधारी हो लाज, साधुने कर जोडी वंदियें जी ॥ २३ ॥ साधुवंदणथी तुं जोय, नरग च

ज छेदी विषणुयें जी ॥ जिन पदवी तिहां सोय, नाव थी बांधी जिष्णुयें जी ॥ २४॥ नंदमणियारनो जीव, दर्दुर वाव्य जे सेवतां जी ॥ वीरने नमतां अतीव, ते थयो दर्दुर देवता जी ॥ २५ ॥ एहवा ते ऋषि गुण जाण, इव्यथी नावथी सेवीयें जी ॥ म करो को निंदा सुजाण, साधुने करी देव टेवीयें जी ॥ २६ ॥ इम उपदेश ते देय, सूनंदें समकावीयो जी ॥ तव कर जोडीने बेय, उपनंदें साधु खमावीयो जी ॥ २७ ॥ बो तुमें गिरुआ जी साध, पर उपगारी जंतुना जी ॥ खमजो मुक अपराध, जे में कीधी आशातना जी ॥ ॥२८॥ साधुनी स्तवना जो कीध, तो बांधि सुनंदें सुरगई जी ॥ उपनंदें नीच पद लीध, साधु निंद्या निजमई जी ॥ २९ ॥ इम ते आलोइ हो पाप, बांधव दो ऋषिने नमी जी ॥ टाली ते सघलो संताप, आव्या दो निज गृह वन रमी जी ॥ ३० ॥ चोथा उल्लासनी ढाल, सतरमी लब्धिविजय कही जी ॥ सुणजो नवि उजमाल, आगल शी शी कथा लही जी ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दो न्राता मंदिरें, आवी करे शुन्न काम ॥
खट दरिसन पोखे सदा, लेहवां स्वर्गनां धाम ॥ १ ॥

हवे जयदेवना घरथकी, साह्मी छे एक पोल ॥
तेह्में दो वसे वाडवा, सुदेव जूदेव डोल ॥ २ ॥
सांढ थइ पासें वसे, सुदेव जूदेव जट्ट ॥ खंभा स्त्री छे सुदें
वनी, विशाखा जूदेवनी गट्ट ॥ ३ ॥ ते दो नारीने
थयो, पूर्वकर्म संयोग ॥ दाघ ज्वर बलतर तणो, उप
नो तेह्ने रोग ॥ ४ ॥ तव ते चिकित्सा जणी, तेड्या
बहु वैद्यराज ॥ पण टेकी लागे नही, कोइ न सरीयुं
काज ॥ ५ ॥ तव सुदेव जूदेव विप्र दो, मनश्युं कीध
विचार ॥ किम वहेशे घरणी विना, किम वहेशे घर
जार ॥६॥ इम दो विप्र विचारीने, बीजी परण्या नार
॥ खंभा विशाखा दो प्रिया, मूकी पीयर सार ॥ ७ ॥
परहरी दो स्त्री रोगिणी, जुंभा थया दो विप्र ॥ जिम
मांखी घृतमें पडी, काढी नाखे क्षिप्र ॥८॥ ते स्थिति
करि इण वाडवें, नवि शोच्या ते लगार ॥ नवि बिह्नी
ना कहोनाथकी, नवि बिह्निना किरतार ॥ ए ॥ मद
वाया दो विप्र ते, न करी सार संजाल ॥ तव दो स्त्री
ते रोगिणी, तेह्ने उपनी झाल ॥ १० ॥ क्रोध वशें
दो रोगिणी, दें दो पतिने शाप ॥ तुमें दो अम पातें
पडी, लेह्जो तुमें संताप ॥ ११ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ दिल लगा रे बादल वरणी ॥ ए. देशी ॥ इम कहेती गइ तातने गेहें, जिहां ठे हरिजट्ट मामा ॥ जवि जोजो रे कर्मनी करणी, जोगवे जे फल घरणी ॥ ज० ॥ ठे तेहनी हरिजट्टणी ब्रिजणी, तस कुखनी दो रामा ॥ १ ॥ ज० ॥ पीयर पण ठे एकण ठिगें, जद्दिलपुर जे नामें ॥ ज० ॥ काढी पतियें पीयर आवी, रोगिणी मावित्र गामें ॥ २ ॥ ज० ॥ मात पिता तव निरखी मलीयां, पूछे कुशलनी वातो ॥ ज० ॥ कुशल तो नजरें जुवो ठो पिता जी, शी कहुं ब्रिजनी ख्यातो ॥ ३ ॥ ज० ॥ जब अम बेने रोगिष्ट जाणी, बीजी परणी आणी ॥ ज० ॥ ते उपर अम बेहुने काढी, शोक्यनी करि तिहां टाढी ॥ ४ ॥ ज० ॥ तव अमें आव्यां तातजी चरणे, जाणी पीयर शरणें ॥ ज० ॥ स्त्रीने पक्क कह्या दो वारु, वास पीयर जरतारु ॥ ५ ॥ ॥ ज० ॥ ए अधिकार सुणीने पितायें, आंखें आंसू आण्यां ॥ ज० ॥ फिट रे जमाई दो कुल हीणा, एहवा न होता जाण्या ॥ ६ ॥ ज० ॥ धिग धिग ठे तुम जीवित जाति, कीधो विश्वास घात ॥ ज० ॥ एहवा प्राणीनुं मुख महीयें, नजरें नावशो कहीये ॥ ७ ॥ ज० ॥ पण शुं कं

रीयें श्री नगवानें,लेख लख्या जे पानें ॥न०॥ अण चिं तवी जब माथे वणाणी, नोगवे पुत्री ते प्राणी ॥८॥ ॥ न० ॥ इणिपरें वचन कहीने तातें, राखी दो कुमरी हेतें ॥न०॥ उषध वेषध करवा लाग्या,जे जिम आवे वेतें ॥ ए ॥ न० ॥ आय उपाय करी बहु थाका, वैद्यने मुख पड्या फांका ॥ न० ॥ पण जो जो वैद्य प्रगटे नाग्यें, कंथा ज्युं गोरख जागे ॥ १० ॥ न० ॥ एक दिन हरिनट्ट जयदेव गेहें, मलवा गयो बहु नेहें ॥ न० ॥ सुनंद उपनंद जयदेव आदें, हरिने मल्या कर वेहें ॥ ११ ॥न०॥ बेठा सहु को एकण गणें, हरिने वि लखो जाणे ॥ न० ॥ तव हरिनट्टने जयदेव पूछे, शे पड्या शोचने तूछे ॥ १२ ॥ न० ॥ तव हरिनट्ट कहि सघली मांमी, पुत्री जे दुःखणी ठांमी ॥ न० ॥ ए दुःख महोटुं साले अमने, शी कहुं जयदेव तुमने ॥ १३ ॥ न० ॥ ते वात सांनली जयदेव बोल्यो, सां नलो हरिनट्ट नाइ ॥ न० ॥ आजथी रोग गयो तुम जाणो, जो छे पाधरो सांइं ॥ १४ ॥ न० ॥ एम कहि उपनंदने मूके, बेटो हरिनट्ट साथें ॥ न० ॥ जाउ शीघ्र थइ जस लेशो, नेषज करजो हाथें ॥ १५ ॥ ॥ न० ॥ आव्या मंदिर ततखिण हर्षें, हरिनट्ट उप

नंद दोइ ॥ च० ॥ नाडी जोइ शिलाजित देइ, तत खिण बलतर खोइ ॥ १६ ॥ च० ॥ आव्यो जस उप नंदने वखतें, थइ कुमरी दो साजी ॥च०॥ देखी गुण उपनंदनो महोटो, मातपिता थयां राजी ॥ १७ ॥ ॥ च० ॥ हरखी हरिचंद कहे कर जोडी, सांचलो उपनंद स्वामी ॥ च० ॥ जीवित दान दीधुं तुमें अ मने, तिणें थया अंतरजामी ॥ १८ ॥ च० ॥ माण स उलें आण्या अमने, कीधा जगमें महोटा ॥ च० ॥ चावव सघली जनमनी काढी, देई वंछित पोटा ॥ ॥ १ए ॥ च० ॥ ए उपगार कदी न विसारुं, जो अम जाति डे सागी ॥ च० ॥ थया अम पुत्रीना सुख दाता, कीधा अम वडचागी ॥ २० ॥ च० ॥ ए तुम गुण उसिंगण थावा, संकल्पुं आ रुद्धि घरनी ॥ ॥ च० ॥ तन धन मन डे सघलुं तुमारुं, मत गण जो तुमें परनी ॥ २१ ॥ च०॥ साथें जइने अम चव जीवडा, जो वेचो तो वेचाउं ॥ च० ॥ जीवित सूधी इणिपरें वहियें, तो तुम शाबास पाउं ॥ २२ ॥ च० ॥ तव कुमरी कहे खंमा विशाखा, सांचलो उपनंद वा णी ॥ च० ॥ चवो चव डे अम जीव तुमारा, मूक्युं तस कर पाणी ॥ २३ ॥ च० ॥ इणिपरें कथणें कहि

दो कुमरी, रागनी गांठ त्यां पाडी ॥ ज० ॥ उपनंदें पण अनुमोदी पोतें, बांधी मोहनी वाडी ॥ २४ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें वयणें राजी करीने, उपनंदने सन मानी ॥ ज० ॥ हरिजट्ट साथें उपनंद गेहें, आव्यो चढती पांती ॥ २५ ॥ ज० ॥ हरिजट्ट कहे जयदेवने प्रणमी, धन्य धन्य स्वामी तुमने ॥ ज० ॥ तुम पुत्रें मुझ पुत्री जीवाडी, लेखे आण्या अमनें ॥ २६ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें कहीने लघुताइ पाइ, हरिजट्ट मंदिर आव्यो ॥ ज० ॥ उपनंदनो जस पुरमें वाध्यो, सज्जनजनमन जाव्यो ॥ २७ ॥ ज० ॥ चोथे उल्लासें अढारमी ढालें, धातायें जेह बनावी ॥ ज० ॥ लब्धि कहे जवि सुणजो आगें, ए थइ ते कहुं चावी ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिजट्ट केरी धीयने, कीधो जे उपगार ॥ थयो महिमा उपनंदनो, जद्दिल पुरमें सार ॥ १ ॥ ते वायक श्रवणें सुणी, सुदेव जूदेव विप्र ॥ उपनंद उपरें परजल्या, ज्युं जले अग्नि क्षिप्र ॥ २ ॥ जाण्युं हतुं दो नीरीयो, मरशे रोगथी एह ॥ उपनंदें जो सज करी, आपणा वयरी तेह ॥ ३ ॥ एम विचारी दो जणें, अण्यो मनमें रोष ॥ उपनंदने हणवो सही, जो जो

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडशे बाजरी, के तेडवी पडशे घेर ॥ ते जाणी उपनंदशुं, दो विप्र राखे वेर ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मल्यो, तपसी विरुद्ध वेश ॥ तेहने जइ चरणे नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥ आसन वासन देइ करी, तपसी कर्यो निज हाथ ॥ तव तपसी कहे सेवको, शी वंछो मुफ आथ ॥ ७ ॥ तव द्विज कहे कर जोडीने, दो में नूदेव डुष्ट ॥ उपनंदने एहवुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी समजी कहे रे, सांजलो दो तुमें आप ॥ मोरा वाला रे ॥ ए पातक किहां छूटीयें रे, श्यो दीजें प्रजुने जबाप ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो एहनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी गंठेडी मत रहो रे, जो हुवो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ इ० ॥ महिष गवा मृगने हणे रे, हणे सूयर पंखी छंग ॥ मो० ॥ खट दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो० ॥ ३ ॥ इ० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमराजी होय ॥ मो०॥ वरष सहस तेतां गुणी रे, एं शैव मतनो जोय ॥ मो०॥४॥ इ०॥ होय विपाकें दश गुणुं

रे, एकण कीधे कर्म ॥मो०॥ सत सहस लख कोडी गमे रे,तीव्र नावना मर्म ॥मो०॥५॥इ०॥ जुउ एक बीज कोविंबनुं रे, ठोली गल्युं जीने गेर ॥ मो० ॥ तो नृप जित शत्रुतणुं रे, लीधुं दशगुणुं वेर ॥ मो० ॥ ६ ॥ इ० ॥ जैन मतें पण इम कह्युं रे, जे करे पंचेंदि घात मो० ॥ तो तस पूरव कोडिनुं रे, चारित्र दूरें जात ॥ मो० ॥ ७ ॥ इ० ॥ ए अधिकार जाणी करी रे, अमें किम करियें पाप ॥मो०॥ रामें रोमें कीडा पडें रे, देखत कुण ले संताप ॥ मो० ॥ ८ ॥ इ० ॥ तुम दोने मरवुं नथी रे, जाणो अमर ठे तन्न ॥ मो० ॥ पण य मदंम ठे सहुशिरें रे, देवो ठे एक दिन्न ॥मो०॥ए॥इ०॥ एहवो जबाप ते सांजली रे, जे कह्युं ऋषियें वचन्न ॥ मो०॥ तव दो विप्र फांखा थया रे, विलखाणा दो मन्न ॥ मो० ॥ १० ॥ इ० ॥ तव मुख लेइ पाठा वल्या रे, ज्युं थया शीतल हीम ॥ मो० ॥ दो विप्रने घरे आवतां रे, शो जोजन थइ सीम ॥ मो० ॥ ॥११॥इ०॥ विण खूने उपनंदशुं रे, राखे तें वेरजाव ॥ ॥ मो० ॥ पण हेवे जो जो तेहनी रे, शी गति होवे सहाव ॥ मो० ॥ १२ ॥ इ० ॥ हवे हरिनट्टें निज मंदिरें रे, भेली द्विजनी नाति ॥ मो० ॥ अशन वसन

घृत घोलशुं रे, संतोषी नली नाति ॥ मो० ॥ १३ ॥
॥ इ० ॥ राजी थया सहु नातना रे, जेता द्विज कहे
वाय ॥ मो० ॥ पण ते दो कुमति प्रतें रे, रह्यां ते व
दन विछाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ इ० ॥ तेंहवे हरिजट्ट बो-
लियो रे, कहे वर्गो मुक्त कन ॥ मो० ॥ आं दो दुष्ट
पापिष्टीयें रे, ओ मुक्त तातजी खून ॥ मो० ॥ १५ ॥
॥ इ० ॥ तव तिहां द्विज सघला कहे रे, महारंगणीना
जाति ॥ मो०॥ हीणा चौदशना जण्या रे, शे न करी.
स्त्री तांत ॥ मो० ॥ १६ ॥ इ० ॥ इम कहि द्विज सघ
ला मली रे, कुटिलने कहे समजाय ॥ मो० ॥ हवे
मत रहो अम न्यातिमां रे, देखत कीधो अन्याय ॥
॥ मो० ॥ १७ ॥ इ० ॥ हवे तुमें ए पुरमां रही रे, मत
करजो अन्न पान ॥ मो० ॥ जो ए वचन उलंघशो रे,
तो घणा जडशे उपान ॥मो०॥१८॥ इ०॥ इम कहिने
दो काढिया रे, देई धक्का जोर ॥ मो० ॥ श्याम वदन
लेइ मंदिरें रे, आव्या दो नातिनां चोर ॥ मो० ॥
॥ १९ ॥ इ० ॥ तिणे पण जावा सज कस्या रे, गाडां
ऊंट बलद्द ॥मो०॥ लेइ सजाइ आपणी रे, निकल्या पु
रथी अछद्द ॥मो०॥२०॥इ०॥ नीकलतां पुरमां थकी रे,
लागी दो विप्रने हींग ॥मो०॥ गया कोइक देशांतरें रे,

ज्युं गयां भंटनां शिंग ॥ मो०॥२१॥ इ०॥ दो कुमरीनी वाती वरी रे, वस्यां वलि मावित्र मन्न ॥ मो० ॥ नली थइ जे शल्य नीकल्युं रे, उल्लसि रोम राजी तन्न ॥ ॥ मो० ॥ २२ ॥ इ०॥ इम हरखी कहे नातिने रे, हरि भट्ट ते कर जोड ॥ मो० ॥ वे नाति महीमें मोटकी रे, नाति वे शिरनो मोड ॥मो०॥२३॥इ०॥ नातिथकी तरियें सदा रे, जो चाले कुलवट्ट ॥ मो० ॥ जो वहे आडो नातिथी रे, तो होवे दहवट्ट ॥ मो० ॥ २४ ॥ इ०॥ जे निजवर्ग दूरें तजी रे,करे वल्लन्न परवर्ग ॥मो०॥ ते नृप कुकर्दम परें रे, पामे ते डुःख अपवर्ग ॥ मो० ॥ ॥ २५ ॥ इ० ॥ नातिथी अधिको को नहिं रे, नाति वे गंग प्रवाह ॥ मो० ॥ तरीयें बूडीयें नातिथी रे, नातिथी लहियें उत्साह ॥ मो० ॥ २६ ॥ इ० ॥ इम स्तवना करी नातिनी रे, हरिन्नट्टें द्विजनी प्रसिद्ध ॥ ॥ मो० ॥ संप्रेडी निज वर्गने रे, राजी करि जस लीध ॥ मो० ॥ २७ ॥ इ० ॥ ढाल कहि उगणीशमी रे, चोथा उल्लासनी एह ॥ मो०॥ लब्धि कहे नवि सांनलो रे, आगल होवे जेह ॥ मो० ॥ २८ ॥ इ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिन्नट्ट पासें रहे, पाडोशी ससनेह ॥ सुद

त्त नामा द्विज जलो, सकल कला गुणगेह ॥ १ ॥
सगपण तो कांई नथी, ले सगपणथी अधीक ॥ पा
डोशीने नेहले, सगपण जाणे नजीक ॥ २॥ तस
घर अहोनिश दो धिया, खंभा विशाखा जेह ॥ सुख
दुःखनी जे वातडी, करवा आवे तेह ॥ ३ ॥ सुदत्त
नो एक पुत्र ले;वसुदत्त एहवे नाम ॥ रूप कला गुण
चातुरी, उंपे ते अभिराम ॥ ४ ॥ ते दो मांहे विशेष
ले, खंभानो घणो राग ॥ हास कुतूहल वातनो, करं
तां नावे ताग ॥५॥ दो नारी वसुदत्तशुं, राखे ताली
एक ॥ सरखा सरखी जोडली,तिणे करे हास्य विवेक
॥ ६ ॥ एक दिन ते वसुदत्तशुं, खंभा लेडी वात॥
कर्मे कुतूहल वारता, करतां थयो प्रजात ॥
॥ ७ ॥ प्रह फाटो तव आपणे, आवी खंभा घेर ॥
रीष करी माता कहे, शी होशे तुऊ पेर ॥ ८ ॥ एहवुं
वचन कह्याथकी, खंभा रीसाणी मात ॥ अणबोली
रहि मातथी, बार घडी निज धाम ॥ ए ॥ जोजन
वेला अवसरें,खंभा न जमे कांय ॥ रीष उतारी मावडी,
सहु जमियां तिण गय ॥ १० ॥ एक दिन हरिजद्र
ने घरे, सुदत्त लेइ परिवार ॥ मिजलस करी बेग
तिहां, करवा वातो सार ॥ ११ ॥ तेहवे पण आव्यो

तिहां, उपनंद मळवा रूप ॥ साथ सहु उठी मळ्यो, बेसाड्यो करी चूंप ॥ १२ ॥ हवे सहु बेग रंगमें, करतां वात टकोळ ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा समकित गोळ ॥ १३ ॥

॥ ढाळ वीशमी ॥

॥ सूडा रे तुं जइ कहेजे, संदेशडो रे ॥ए देशी ॥

तव हरखे सउ उठीने, कर जोडी नामें शीशो रे ॥ गुरु पण नाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्मशीषो रे ॥ १ ॥ नवि सुणजो रे, इहां गुरु पण लाज कमावे रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमणनुं पारणुं, करी बेग त्यां चित्रशाळी रे ॥ साथ सहु पण तिहां कणे, गुरु पासें बेग संनाळी रे ॥ २ ॥ न० ॥ धर्मकथा यथा स्थित कहि, सहु बूझव्या प्राणी सुजाणो रे ॥ समकित वासना पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणो रे ॥ ३ ॥ न० ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूछे खंधा विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोनागिणी, तस कदि होशे सुख शाता रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तव रुषि दो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे ॥ आ जशों छे एक वर्षनुं, गुरु नांखे आउखूं होय रे ॥ ५॥न०॥ त्यारपछी सुख पामशे, जो जिन मारगमें वहे

शे रे ॥ मिथ्या मत जो छंडशो, तो मन वंछित लेहेशो रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ इम रुषि कहे सुण जट्टणी, तुम मारग शुद्ध बतावूं रे ॥ जो ते मारगें चालशो, तो दुःखनी दोरी कपावूं रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तव जट्टणी कहे साधुजी, तुमें मारग शुद्ध भांखो रे ॥ काज सरें जेहथी घणुं, अम करुणा करी ते दाखो रे ॥८॥ ज० ॥ तव गुरु कहे सुणो जावुको, तुमें पूजो प्रज्जु शुज जाणी रे ॥ प्रज्जु पूज्या ते पामीया, इम लोकमें छे पण वाणी रे ॥ ए ॥ ज० ॥ सद्गुरुवचन हृदे धरी, तुमें आपथी मनशुं जाणो रे ॥ प्रज्जु वंदन फल सांजली, तुमें मनु जव लेखें आणो रे ॥ १० ॥ जवियां रे तुमें जिन वंदन जणी जावो रे, ए तो मीठा मेवा पावो रे ॥ ए आंकणी ॥ वासरें उठी खाटथी द्वारे, मनशुं जिन जणी जावुं रे ॥ उलट आणी जावथी तो, चोथ तणुं फल पावुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ उठे चैत्य गमण जणी ए तो, पहेरी शुद्ध ते वेशो रे ॥ छठ तणुं फल पामी ते लहे, एम केवली दें उपदेशो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ चोखा सोपारी कर लीया, तव अठमनुं फल पावे रे ॥ पगलुं दें जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल आवे रे ॥१३॥ ज० ॥ द्वादश तप सम फल लहे, ए तो देहरा मारग

जातां रे ॥ अर्धे पंथें लहे देहरे, ए तो मास खमण फल आतां रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ देहरुं देखे दृष्टिमें, तव मास खमण फल लाजे रे ॥ जव पहोंचे चैत्य बांहडी, तव खटमासी फल लाजे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ जिनवर बारणना फरसथी, ए तो बरसी तप फल होवे रे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देयतां, तस शत वर्ष तप फल जोवे रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल होवे जिन पूजे एतो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्तवना जावें करे तो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ चैत्यमें काजो काढतां, फल शो उपवासनुं थावे रे ॥ आंगी रचे जो विलेपनें, सहस पोषण लाज उपावे रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ लाख उपोषण फल लहे, एक फूलनी माला चढावें रे ॥ वाजित्र गीत प्रजु आगलें, कीधे लाज अनंत गुण जावे रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ घृतदीपक प्रजु आगलें, करतां लहे मंगलमाला रे ॥ आरति करे प्रजु जिन तणी, तस जाये आरति वाला रे ॥ २० ॥ ज० ॥ न्हवण करे जिनजी शिरें, तस होवे आतम शुद्ध रे ॥ धूप उखेवें प्रजु आगलें, ते सुरगुरु सम लहे बुद्ध रे ॥ २१ ॥ ॥ ज० ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिबल देवा रे ॥ गणधर सुर नृप पद लहे, प्रजु सेवाथी लहे

मीठा मेवा रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ जो त्रण काल पूजा करे, नवसागर पार उतारे रे ॥ हलुवा कर्मी सद्दहे, ते जावे मुगति डुवारें रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ रावण नें मंदोदरी, करी अष्टापद ते नृत्तो रे ॥ ता थै तान न चूकियां, जिन पदवीनी लहेवातो रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ श्रेणिकरायें वीरनी, करी हेममे जवनी पूजा रे ॥ पद्म नाज तीर्थंकरु, होशे आवति चोवीशी राजा रे ॥ ॥ २५ ॥ ज० ॥ कुमारपाल पूरव नवें, कोडी पांचनी फूल चढावे रे ॥ देश अढारनो अधिपति, थयो फूल अढारथी फावे रे ॥ २६ ॥ ज०॥ इणि परें प्रजुनी पूजायकी, ए तो सघलां संकट नाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख पामीयें, वली संसारिक सुख गाजे रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ ए अधिकार ते सांजली, सहुनां मन नावें नेदाणां रे ॥ जिन वंदन जिन नक्तिमां, तस आतम रंग रंगाणा रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ गुरुनी शीख सोहामणी, मानी विप्रें सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी वीशमी, कहि लब्धें शास्त्रें राची रे ॥ २ए ॥ ज० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुषिनी शीख सोहामणी, सांजलि सघला वि प्र ॥ जिन वंदन अर्चानणी, द्विज द्विजणी थयां द्वि

त्र ॥ १ ॥ कहे उपनंद सुणो प्रभु, शी विध कीजें सेव ॥ ते विधि कहो अमनें प्रभु, तिण विध पूजा देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अ ढार ॥ जिन वंदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥ ॥ ३ ॥ रमणी ऋद्धि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥ देव तेहनुं नाम छे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव तें नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते संसारी सुर कह्या, लुब्धाणा तस रंग ॥ ५ ॥ जे सुर जीवता जे हुवे, ते नलें राखे नारि ॥ पण थइ मूरति शैलनी, शे स्त्री राखे सार ॥६॥ मूआ गया परलोकमें, तो पण न गयो विकार ॥ ते शुं तारक तारशे, पडिया मोह म झार ॥ ७ ॥ वाहालो वयरी एकसम, लेखवे ते खरो देव ॥ तस चरणांबुज सेवतां,लहियें शिव ततखेव ॥८

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेरो जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ सांचली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिबल सांचलो ॥ बूझिया ते द्विज प्राणी जी ॥ ह० ॥ देवनी चांति उ चांति जी ॥ ह०॥ जाणी काढी चांति जी ॥ह०॥१॥ तेहमां त्रणे जीव जी ॥ ह० ॥ लीधुं पण ते अतीव जी ॥ ह०॥ चाकरी जिननी कीजें जी ॥ ह०॥ तव

मुखमें अन्न दीजें जी ॥ ह० ॥ २ ॥ दो कुमरी उप नंदें जी ॥ह०॥ ए त्रणे आणंदे जी ॥ह०॥ उलखी शु ६ आचरणें जी ॥ ह० ॥ थया पणधारी त्रणे जी ॥ ह० ॥३॥ इम उपदेश ते देइ जी ॥ह०॥ चाल्या गुरु लाज देइ जी ॥ह०॥ हरिजद्द सुदत्त आदें जी ॥ह०॥ सहु जिन पूजे आल्हादें जी ॥ ह०॥४॥ नव नवी पूजा बनावे जी ॥ ह० ॥ नव नवी आंगी रचावे जी ॥ ह० ॥ नव नवां नृत्य करावे जी ॥ ह० ॥ इमं नित्य जावना जावे जी ॥ ह० ॥५॥ सहसनें षटशें एंशी जी ॥ ह०॥ सोवन मुद्रा विहसी जी ॥ ह० ॥ प्रजुने जंमारें हरखें जी ॥ ह० ॥ उपनंद मूके एक वर्षें जी ॥ ह० ॥ ६ ॥ शोलशें फूल चढावे जी ॥ ह०॥ हेम रजतनां जे कहावे जी ॥ ह० ॥ शोलशें मुगट जरावी जी ॥ ह०॥ कुंमल हार करावे जी ॥ ह०॥ ॥ ७ ॥ कटिसूत्र ने करें कडली जी ॥ ह० ॥ बांहे बाजुबंध जडली जी ॥ ह० ॥ इणिपरें जूषण सारां जी ॥ ह० ॥ प्रजुने चढावे प्यारां जी ॥ ह० ॥८॥ इणपरे द्विजणी टोली जी ॥ ह० ॥ पहेरी पंचरंगी चोली जी ॥ ह० ॥ पूजे जिनवर देवा जी ॥ ह० ॥ लें हवा शिवसुख मेवा जी ॥ ह० ॥ ए ॥ तेहमें उपनंदें

साध्युं जी ॥ ह० ॥ पूजा नामकर्म बांध्यूं जी ॥ ह० ॥ गुरुमुखें जे पण लीधुं जी ॥ ह० ॥ साथें ते त्रिहुं, जीव सीधुं जी ॥ ह० ॥ १० ॥ नवो नवनां दुःख टाली जी ॥ ह० ॥ थया त्रणे एक अवतारी जी ॥ ॥ ह० ॥ गुरुवचनें जे चाले, जी ॥ ह० ॥ ते शिव रमणीशुं माले जी ॥ ह० ॥ ११ ॥ इम करतां दिन केता जी ॥ ह० ॥ सुकृतमें दिन वीता जी ॥ ह० ॥ सांजलो आगें जे होवे जी ॥ह०॥ नावि जिहां तिहां जोवे जी ॥ ह० ॥ १२ ॥ हवे सुदेव नूदेव दोइ जी ॥ ॥ ह० ॥ रोगिणीना जे धव होइ जी ॥ ह० ॥ ना तिना खूनी जाणी जी ॥ ह० ॥ काढ्या ते दुष्ट प्राणी जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ निकल्या नातिथी हाख्या जी ॥ ॥ ह० ॥ क्रोधानलमें ते गाल्या जी ॥ ह०॥ गया ते कलप देशें जी ॥ ह० ॥ न जाणे को नामनी विशे जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ तिहां जइ एक कापडी नेटी जी ॥ ॥ ह० ॥ तिणें शिखवी विद्या महोटी जी ॥ ह० ॥ बहु रूपिणी विद्या शिखी जी ॥ ह० ॥ आव्या ते दो नीखी जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ कापडी वेश ते लेइ जी ॥ ह० ॥ आव्या ते डिंगमें बेइ जी ॥ ह० ॥ उपनं दने घर आगें जी ॥ ह० ॥ कपटें दो निक्षा मागे

जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ मधुरी धुनें गीत गावे जी ॥
॥ ह० ॥ उपनंदनी पोल रीझावे जी ॥ ह० ॥ रूपिणी
विद्याजोगें जी ॥ ह०॥ उलखे नहि तंस जोगें जी ॥
॥ ह० ॥१७॥ एक दिन रातें ते पोलें जी ॥ ह० ॥-
भिक्षुक गावे दो उलें जी ॥ ह० ॥ एहवे उपनंद आ
व्यो जी ॥ ह० ॥ कपटीयें दाव ते पाव्यो जी ॥
ह०॥१८॥ फरसीयें घाव त्यां घाल्यो जी ॥ह०॥ उपनंद
यमघरे चाल्यो जी ॥ह०॥ श्वाननां रूप करी नाठा जी.
॥ ह० ॥ कपटी दो त्यांथी त्राठा जी ॥ ह० ॥ १९ ॥
धाउ रे नाइ धाइ जुउ जी ॥ ह० ॥ उपनंद हरिशु
रणें हुउ जी ॥ ह० ॥ जयदेव आदें कुटुंब जी ॥ ह०॥
आव्या सहु करी बुंब जी ॥ह०॥२०॥ रोगिणी देखी दो
मेटे जी ॥ ह० ॥ फाल पडी तस पेटें जी ॥ ह० ॥
जयदेव कहे जइ देखो जी ॥ ह० ॥ हणनारुं कुण
तस पेखो जी ॥ ह० ॥ २१ ॥ धाया जन बहु केडें
जी ॥ ह० ॥ न लाधा गंया कोइ चेडें जी ॥ ह० ॥
आरतिनगर कुंआरी जी ॥ ह० ॥ न पडे सुध कांइ
जारी जी ॥ ह० ॥ २२ ॥ राते सामले रांम जी ॥
॥ ह० ॥ लेइ गइ पाशेर खांम जी ॥ ह० ॥ आमथी
गइ आम आवी जी ॥ ह० ॥ ते रीत थइ इहां गावी

जी ॥ ह० ॥ २३ ॥ आव्या जन बहु जोइ जी ॥
॥ ह० ॥ कहे हणी गयो कोइ जी ॥ ह० ॥ सजन
कुटुंब सहु रोवे जी ॥ ह० ॥ नाइवे ज्युं खाल होवे
जी ॥ ह० ॥ २४ ॥ फट रे देव तुं डुष्ट जी ॥ ह० ॥
विण खूने शे रुष्ट जी ॥ ह० ॥ सुनंद कहे रे नाई
जी ॥ह०॥ शुं गयो बेह देखाई जी ॥ह०॥२५॥ इणि
परें आक्रंद करतां जी ॥ह०॥ मृत कारज तस धरतां
जी ॥ ह० ॥ धिग संसार असार जी ॥ ह० ॥ धिग
जे लेखवे सार जी ॥ ह० ॥ २६॥ इम ते मनमें वि
चारी जी ॥ ह० ॥ जयदेव आप संनारी जी ॥ह०॥
जयदेव सूनंद साथें जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा मुनि हाथें
जी ॥ह०॥२७॥ खंभा विशाखा दो कुमरी जी ॥ह०॥
उपनंदनुं डुःख समरी जी ॥ ह० ॥ दीक्षा अज्जा पासें
जी ॥ह०॥ ले व्रत पाले उल्लासें जी ॥ह०॥२८॥ हरि
नट सुदत्त जेह जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा पण तेह जी ॥
॥ ह० ॥ मोहनीकर्म संबंधें जी ॥ ह० ॥ उपनं
दशुं मन बंधे जी ॥ ह० ॥ २९ ॥ चोथा उल्लासनी
ढाल जी ॥ ह० ॥ एकवीशमी गुणमाल जी ॥ ह० ॥
लब्धी नवनय मेली जी ॥ ह० ॥ कहुं उपनय मन
नेली जी ॥ ह० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहे मुनिचंद्र केवली, सांभलो हरिबल रा य ॥ भावी म्हाहापण आगलें, को नवि अधिको थाय ॥ १ ॥ जीती न शके भाविने, अनंत बली अरिहंत ॥ ते सरखा पण हारिया, भावि प्रबल वदंत ॥ २ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, पामे केवल नाण ॥ तो पण भावी नहि मिटे, जीवित सुधी जाण ॥ ३ ॥ केवली आयु ने समे, जे करे समुदघात ॥ ते पण भावि जोगथी, जाणजो भवि विख्यात ॥ ४ ॥ सुख दुःख पानें जे लख्यां, कुण टाले तस दूर ॥ त्रीजगमें व्यापी रह्यां, जि हां तिहां भावि हजूर ॥ ५ ॥ वीर जिणंदने पण र ह्यो, छम्मासी अतिसार ॥ केवल पाम्या तोहि पण, भावी न मटयुं लगार ॥ ६ ॥ भावीथी पूरव भवें, जे बांध्युं अंतराय ॥ वर्ष सुधी भूख्या रह्या, जे श्री ऋष भ कहाय ॥ ७ ॥ कृषीकर्म करतां थकां, कूर्मापुत्र सु जाण ॥ केवल लही घरमें रह्यो, त्रण रति भावि प्रमा ण ॥ ८ ॥ ते माटे हरिबल तुमें, जाणजो करीने ठीक ॥ भावी आगेवान छे, सहु ते जंतु नजीक ॥ ९ ॥ जे जिम भावी नीपजे, टाली न शके कोय ॥ रोंगिणी दोनी दाऊथी, छुदेवें हणियो सोय ॥ १० ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥ ते उपनंदनो रे जीव चवी इहां रे, थया तमें हरिबल महोटें नाम ॥ साधुनी निंदा रे कीधी घणी रे, तव लह्युं धीवर कुलनुं धाम ॥ १॥ हरिबल सुणजो रे, तुम नवनी कथा रे ॥ ए आंकणी ॥ जे जीव मेले छे ते दल कर्म ॥ शुनाशुनना जे बंध बांधीया रे, नोगवे ते जीव निज निज मर्म ॥२॥ह०॥ जलचर जंतु रे तुमें हणता सदा रे, ते निज उदरने कारणें जोर ॥ हरिनट्ट संगी रे सुदत्तद्विज चवी रे, थयो इहां तुम तणो साचो गोर ॥३॥ह०॥ तिणें तुमें दाख्यो रे जलने कांठडे रे, जीव दयानो महोटो धर्म ॥ तुमें पण साचा रे पण धारी थया रे, राख्यो जीवदयानो मर्म ॥ ४ ॥ ह० ॥ तस पुण्य योगें रे, जलनिधि देवता रे, प्रगट थयो तुम पूरव नात ॥ सुनंदनामें रे बंधु चवी इहां रे, सुर थइ पूरी तुम मन खांत ॥ ५ ॥ ह० ॥ पूरव नवनी रे तुम दो रागिणी रे, खंना विशाखा नामें जेह ॥ ते दो नारी रे थइ तुम मोहथी रे, वसंतसिरी कुसुमसिरी तेह ॥ ६ ॥ ह०॥ श्री जिनकेरी रे नक्ति करी घणी रें, दो गोरी तुमें त्रण जीव॥शोलशें फूलें रे शोलशें देशनी रें.

परण्या नारी तेणें अतीव॥ ७॥ह०॥श्रीदत्तनामें रे वड वे
खती थयो रे, व्यवहारी जे विशाला मझ॥ ते तुम तात रे
जयदेव चवि थयो रे, तिणें दीधुं रहेवा गृह तुमकझ॥ ८
॥ह०॥ नगरि विशाला रे जे पुरनो धणी रे, जे थयो
कामी पूरव नेग॥ सुदेव नामें रे खंभानो धणी रे, ते
थयो चवीने मदन वेग ॥ ए ॥ ह० ॥ माहाडुष्ट बु
द्धि रे नूदेव वाडवो रे, नारि विशाखानो पति जाण॥
ते द्विज चविनें रे हीणी लेशथी रे, थयो कालसेन ते
डुष्ठ प्रधान ॥ १० ॥ ह० ॥ तिणे तुम मूक्या रे पूर
व वयरथी रे, लंका गढ वली जमने घेर ॥ पूरव नव
ना रे वयर प्रनावथी रे, तुमें पण वाल्युं सवायुं वेर
॥ ११ ॥ ह० ॥ नृप पण मोह्यो रे तुम स्त्री देखतां
रें, पूरव नवनो मोह विकार ॥ ते दो नारी रे वय
र संनालीने रे, मंत्री नृपने कीध खुआर ॥ १२॥ह०॥
तव नृप समजी रे बूजी मनमां रे, जाणी महो
टो तुम उपगार ॥ राज समर्प्युं रे जलनिधि देवथी
रे, परणावी तुम कुमरी सार ॥ १३ ॥ ह० ॥ हरि
नद्द सुणजो रे दो डुःखणी पिता रे, थयो ते वसंत
सेन नूपाल ॥ हरिनद्द नारी रे हरिनद्दिणी चवी रे,
थइ ते वसंतसेना गुणमाल ॥ १४ ॥ ह०॥ तस कुखें

जाई रे वसंतसिरी जली रे, खंभा नामें दुःखणी जीव ॥ वर्ष एक सुधी रे जिन पूजा रची रे, तव थइ कुमरी नृपनी अतीव ॥ १५ ॥ ह० ॥ वसुदत्त नामें रे सुत सुदत्तनो रे, थयो चवि हरिबल वणिक उछाह ॥ वसंतसिरीने रे हरिबल नंदशुं रे, प्रगट्यो पूरव मोह अथाह ॥ १६ ॥ ह० ॥ पण ते सार्थे रे संबंध पूरो नही रे, वणिकें कुमरी छंडी ताम ॥ तव तुम मलीयो रे योग कुमरी तणो रे, जलसुरें मेल्यो ईश्वरि गाम ॥ १७ ॥ ह० ॥ तव तुम सार्थे रे कुमरी ले चली रे, जव आव्या तुमें नर कांतार ॥ रवि जव ऊग्यो रे तव तुम देखतां रे, थइ मूरछागत कुमरी तिवार ॥ १८ ॥ ॥ ह० ॥ तव तुम साजें रे सागर देवता रे, आव्यो पूरव नवनो व्रात ॥ तेणे सज कीधी रे कुमरी तत खिणें रे, परणावी तुम मन विख्यात ॥ १९ ॥ ह० ॥ खंभा नामें रे राख्या अबोलडा रे, मावडी सार्थें तिणे घडी बार ॥ तेहने जोगें रे मावित्रशुं रह्यो रे, विजोग कुमरीने वर्ष बार ॥ २० ॥ ह० ॥ विशाला पुरथी रे वली तुम तेडीया रे, तुम ससरो जे वसंतसेण ॥ तिणे तुम तेडी रे पूरवनेगशुं रे, दे तुम राज्यने कुमरी विशेण ॥ २१ ॥ ह० ॥ ऋद्धि नें रमणी रे रा

ज्य दो पामीयां रे, पूज्या पूर्वे जिन जगवान ॥ तस पुण्य जोगें रे सागर देवथी रे, जगमां वजाव्यां जीत नीशाण ॥ २२ ॥ ह० ॥ इणिपरें जांखु रे हरिबल आगलें रे, पूरव जवनुं जे वृत्तांत ॥ मछीयें दीतुं रे तेहवुं ज्ञानथी रे, जाति समरणें लह्यो उपशांत ॥ ॥ २३ ॥ ह० ॥ धीवर बूझ्यो रे केवली वयणथी रे, संजम लेवा थयो उजमाल ॥ चोथे उल्लासें रे ढाल बावीशमी रे, कही लब्धें जोइ शास्त्र संजाल ॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर नृप मन चिंतवी, प्रणमी गुरुना पाय ॥ आव्यो आपण मंदिरें, समताशुं चित्त लाय ॥ १ ॥ श्रीबल सुबल निज पुत्रने, राज्य जलावी दोय ॥ अनुमत लइ संजम तणी, हरिबल मछी सोय ॥ २ ॥ वसंत सिरी कुसुमसिरी, दो पट्टराणी एह ॥ तस संगें अनुमति लीये, संजम वरवा तेह ॥ ३ ॥ तव दो नारी कंतने, जांखे प्राणाधार ॥ संयम पालवुं दोहिलुं, जिम वहेवो करितार ॥ ४ ॥ मदन दशनें अयचणा, चावतां जिम डुर्लंज ॥ तिम पियु संजम दोहिलुं, पालवुं जाणो अचंज ॥५॥ सुरगिरि तोलवो त्राजुवे, चढवो लेइ गिरि जार ॥ चालवुं खंमा धार ज्युं, तिम वहेवो

मुनि चार ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, रहेवुं वनह जार ॥ बावीश परिसह फोजशुं, लडवुं थइ जूजार ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ हरियालो श्रावण आवियो ॥ ए देशी ॥ जीरे वसंतसिरी कहे इणि परें, तुमें सांजलो प्रीतम वातो रे ॥ घरे बेगा मन थिर राखीने, पालो जाव चारित्र विख्यातो रे ॥ १ ॥ इम वसंतसिरी कहे कंतने ॥ ए आंकणी ॥ घरे बेगां चालतो धर्म छे, जेहनुं मन छे शुद्ध चंगा रे ॥ हांजी लोक उखाणो पण कहे, मन शुद्ध कथोटीमें गंगा रे ॥ २ ॥ इ० ॥ हांजी एक घरे बेगो तप करे, एक जइ सेवे वनवासो रे ॥ पण कह्यो अधिको घरे तप करे, हांजी पण न कह्यो जलो वनवासो रे ॥ ३ ॥ इ० ॥ हांजी पाराशर विश्वामित्र जे, तप दोइ करें वनमां जाई रे ॥ हांजी मास मासने पारणें, रहे वनपत्र सूकां खाई रे ॥ ४ ॥ इ० ॥ हांजी एहवी तपस्या ते दो करे, लोही मांस गयां ते सुकाइ रे ॥ हांजी ते सरखा पण स्त्री थकी, चलीया मति विषयनी पाइ रे ॥ ५ ॥ इ० ॥ हांजी खटरस जोजन जे करे, तेहनुं मन किम होवे शुद्धो रे ॥ हांजी मन वश राखे जे घरे रही, तेहनी कहे जिन जली

बुझो रे ॥ ६ ॥ ह० ॥ हांजी देश कछपें जाणीयें, शेठ विजय ने विजया नारी रे ॥ हांजी एकण श य्यायें रंगमें रहे, गृहमें थइ व्रतधारी रे ॥ ७ ॥ ह० ॥ हांजी शुद्ध स्वभाव को नवि दिये, ए तो प्रगटे सहज स्वभावें रे ॥ हांजी शुद्ध स्वभाव जब उलखे, तब पर माणंद पद पावे रे ॥ ८ ॥ ह० ॥ हांजी लौकिकने म तें पण कहे, गार घूंसे केइ तन शीशो रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे नही, लोटें गारमें अश्व चक्री हुंशो रे ॥ ए ॥ ह० ॥ हांजी गंगाजलें फीले केइ जना, करे मांहे तप शुद्ध होवा रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे नही, रहे मेडकां मछी जल लेवा रे ॥ १० ॥ ह० ॥ हांजी उंधे मस्तकें केइ जना, करे तपस्या थइ उज मालो रे ॥ हांजी इम जोतां उंधे मस्तकें, रहे वागुल जइ तरुमालो रे ॥ ११ ॥ ह० ॥ हांजी केइ जन जटा वधारता, करे तपस्या शुभ चित्त लाई रे ॥ हांजी इम तप होवे तो न्यग्रोधें, वधे अहनिश जटा वडवाइ रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ हांजी केइ जन मुंम मुंमा वता, करे मस्तकें चीख्यां टीलां रे ॥ हांजी इम धर्म जो होवे नेकने, केश लूंचे खटमासें चीला रे ॥ १३ ॥ ॥ ह० ॥ हांजी निजनिज मतने पोषवा, ए तो चलवे

सहु शुद्ध धर्मो रे ॥ हांजी व्यंतर शुद्ध न उल्ल
ख्यो, तव तिहां वधे मिथ्या नर्मो रे ॥ १४ ॥ ह० ॥
हांजी जब शुद्धातम आवे जीवने, तव केवलकम
ला पावे रे ॥ हांजी ज्योतिमां ज्योति मले तदा, जि
नमुखथी चिदानंद कहावे रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ हांजी
ते माटे तुमें नाथजी, तुमें बो घणा महोटा नारे रे ॥
हांजी बो तुमें सुकुमाल केलि ज्युं, तन तपथी गली
जाय क्यारें रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हांजी घरे बेगं सुख
नोगवो, करो जमणो हाथ ते आघो रे॥ हांजी मन शुद्ध
भाव संजम लही, तुमें बांधो समकित पाघो रे ॥
॥ १७ ॥ ह० ॥ हांजी ड्व्य चारित्र ते लेइने, फरे म
टक वैरागी थाइ रे ॥ हांजी डुर्नर नरवाने केलवे,
करणी कपटीनी संवेग लाइ रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ हांजी
प्रीतम तिणे न ऊघडे, ए तो उघडे चारित्र नावें रे ॥
हांजी नावचारित्रथी केइ तस्या, नवजलधि दर्शन
नावें रे ॥ १ए ॥ ह० ॥ हांजी ड्व्य चारित्रना योग
थी, जाये नवमा ग्रैवेयक सूधी रे ॥ हांजी नाव चा
रित्रना संगथी, पामे अजरामर पद बुद्धि रे ॥ २० ॥
॥ ह० ॥ हांजी नरत आरीसा नुवनमां, हुआ नाव
थी केवल नाणी रे ॥ हांजी आषाढनूति एलाचीयें,

लह्युं नाटकें केवल प्राणी रे ॥ २१ ॥ इ०॥ हांजी कूर्मापुत्र ऋषि खेडतां, पाम्यो केवलनाण स्वभावें रे ॥ हांजी वल्कलचीरी पण इणि परें, पात्र प्रमुंजतां केवल पावे रे ॥ २२ ॥ इ० ॥ हांजी मरुदेवी माता जें ऋषभजननी, गज बेगं केवल पाम्यां रे ॥ हांजी इत्यादिक मन शुद्धथी, भवो भवनां दुःख सवि वाम्यां रें ॥ २३ ॥ इ० ॥ हांजी ते माटे तुमें भूधणी, कह्युं मानो अमारुं ए साचुं रे ॥ हांजी पंच महाव्रत पालतां, घणुं दोहिलुं होवे मन काचुं रे ॥ २४ ॥ इ० ॥ हांजी इत्यादिक वचनें करी, कहे वसंतसिरी उजमालो रे ॥ हांजी चोथा उल्लासनी ए कही, त्रेविशमी लब्धें ढालो रे ॥ २५ ॥ इ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी पट्टराणीनां, बोल्यो हरिबल ताम ॥ सुणजे भइ तुमें जे कही, ते मानुं अभिराम ॥ १ ॥ पण मन माहरुं शुद्ध छे, जिम गंगानुं नीर ॥ तिम में संजम लेहवो, तरवा भवदधि तीर ॥ २ ॥ उत्तर मेह न उन्नहे, उनहे तो वरसंत ॥ शापुरुष वचण न उच्चरे, उच्चरे तो ते करंत ॥३॥ एम कही करंयो तुरत, संजम लेवा सार ॥ संसार कारागृहथकी, निकं

व्यो ते निरधार ॥ ४ ॥ तव दो कुमरी चिंतवे, प्रीतम थयो दृढचित्त ॥ अहिकंचूकि परें ठंमशे, वरशे संयम मित्त ॥ ५ ॥ सिद्धवधूनो लालची, थयो आपणो नूनाथ ॥ तो हवे आपण दो जणी, वहीयें प्रीतम साथ ॥ ६ ॥ जिहां काया तिहां गंहडी, वहे ज्युं निशिदिन संग ॥ त्युं दंपति व्रतगेहमें, वहेशुं अविहड रंग ॥ ७ ॥ इम जाणी दो रागिणी, पतिसाथें करि नाव ॥ नवजलधि तरवा ग्रहे, संजम महोटुं नाव ॥ ८ ॥ वली बीजी जे राणीयो, जे नव सिद्धि जीव ॥ ते पण पतिसाथें थइ, व्रत ग्रहवाने अतीव ॥ ॥ ९ ॥ हरिबल केरो जे अछे, श्रीपति कुल दिवान ॥ ते पण साथें सज थयो, लेहवा पद निर्वाण ॥१०॥ इणिपरें नाविक जीवडा, राणी आदें केय ॥ पंच सयां परिवारशुं, हरिबल संयम लेय ॥ ११ ॥ दीक्षा महोत्सव नलि परें, श्रीबल सुबलें कीध ॥ मणि माणिक सोवन घणां, आशी जनने दीध ॥ १२ ॥ हवे हरिबल मोह उपरें, कोप्यो अतिही पूर ॥ काढयो कूटी मोहने, आत्मडिंगथी दूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ ऊडखानी देशी ॥ मोह नृप उपरें चढतरी वा

जीयां, गाजीयां सूत्र नीसाण गंडीयां ॥ पहेरीयां शीलसन्नाह ते हरिबलें, मनोबलें समकित अश्व चढिया ॥मो०॥१॥ कुहकी करुणाल सुरसाल समकित तणी, जेद विज्ञान रणतूर महोटा ॥ आतमा डिंगमें शब्द ए प्रगटीया, मोह नृप सैननां चरण बूटा ॥ मो० ॥ ॥ २ ॥ गज घटा गुण एकविश ते सज कस्या, तोडवा डुर्ग जे दंन केरो ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, चालियो मोह परें मल्ली सेरो ॥ मो०॥३॥ बार जे व्रत्त उमराव साथें लीया, सज किया संवर सुजट साचा ॥ राग ने द्वेष दोय चोर ले जगतना, तेहने ठेदवा नहीअ काचा ॥मो०॥ ४ ॥ फोज घणुं नियमनी, सोज घणुं दीपती, जीपती मोहनी सैन कोडी ॥ जाव नृप सैनशुं मल्ली चढयो रंगशुं, जीपवा मोह नृप सैन्य दोडी ॥ मो० ॥ ५ ॥ ज्ञानने दर्शन चरण, तीने करी, अखुट नंमार ग्रह्यो मन्न शुद्धे ॥ दादनी चूकवी आपवा जीवने, अनुनव रयण लइ सब ल बुद्धें ॥मो०॥६॥ एहवे मोहने आवीचुगली करी, आश्रव पंच अति डुष्ट बुद्धी ॥ जाग रें जाग तुं मोह ऊता वलो, सबल आयो तुज परें मल्ली बुद्धी ॥ मो०॥ ॥ ७ ॥ मोह तव कोपियो थंन रण रोपियो, जपियो

मोह निज सैन्य मेली ॥ पांच मिथ्यात नीशाण शब्दें करी, मल्ली नृप ऊपरें चढत वेली ॥ मो० ॥ ७ ॥ अष्ट मद हाथिया सुकृत घन घातीया, पातीया मान जग जंतु केरा ॥ एहवा हस्ती मदमस्त जऊकारिया, ज्ञानवनृप सेनमें करत खेरा ॥ मो० ॥ ए ॥ साथें उमराव ले अष्ट दश अघ तणा, नही मणा कांइ त्रिजुवन्न हरता ॥ फोज नव नोहकषायनी महाबली, साबली मोहनी जीत करता ॥ १० ॥ मो० ॥ राग ने द्वेष दो पुत्र ते मोहना, क्रोनना करत संसारमांहे ॥ काम मंत्री प्रबल सबल दल मेलीयो, हेलीयो जिणें मनुराज प्राहें ॥ मो० ॥ ११ ॥ पांच पचवीशनी नालि किरिया करी, शोल कषायना कीध गोला ॥ दंन दारू नरी क्रोध अगनें करी, ज्ञाव नृप सैन्यमें करत होला ॥मो०॥१२॥ इणि परें मोह नृप सैन्य नेलुं करी, चालीयो मल्लीशुं युद्ध करवा ॥ आमुही सामुही फोज दोये मली, मनसरें फोज दो मंफि लडवा॥मो०॥ १३॥ मोहनृप ज्ञावनृप दोय पोरस चढया, आखड्या युद्धमें पूर बेइ ॥ लक्ष चोराशि जे जोनि चोगानमें, युद्ध करतां गयो काल केइ ॥ मो० ॥ १४ ॥ तो पण मोहनुं जोर वाध्युं घणुं, ज्ञाव नृप सैन्यनो अंत आ

यो ॥ तेहवे मल्लीनो नावनृप शुद्ध चर्ढ़ा, मोह नृप सैन्यने दूर ढायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, गुप्तदारू तपतें उमांडी ॥ आकना तूल ज्युं मोहना सैन्यने, नाव नृप मल्लीनो दे उमा डी ॥मो०॥१६॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया, पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंन गढ तोडियो डुरित डिंग मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंन दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥ बार जे व्रत उमराव साथें चढ्या, सगवन संवर सुनट बूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, बाकरी बांधता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८॥ राग ने द्वेष दो पुत्र मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान कबाणथी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट बुद्धी ॥मो०॥ १९॥ ढाल खीमा तणी खडग ले तप तणी, मल्लीयें मूलथी मोह छेद्यो ॥ आतम डिंगथी शल्य काढी परुं, अनुनव रंगमें मल्लि नेद्यो ॥ मो० ॥ ॥ २० ॥ काल अनादि जे दंम चोवीशमें, पीडतो जीवनें मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मल्ली थयो, नाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इणि परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आयो करि

जीत झंका ॥ चोथा उल्लासनी ढाल चोवीशमी,लब्धि कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, द्रव्यथी जावथी जेह ॥ विरबल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥१॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे मल्ली कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव तिहां मुनिचंद्र केवली, विलंब न कीध लगार ॥ कलशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥ पांच सया परिवारशुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्तें पंच मुष्टिनो, हरिबलें कीधो लोच ॥४ ॥ अध्यातमनी पीठिका,तस मंमाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठवी, करवा शिवगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, संवेग जे कंसार ॥६॥ गुरुना मुखथि कथा सुणी, शेठ तणो दृष्टांत ॥ चार वहू तिहु पुत्रनी, सरखी जोई तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा वहूने हाथ ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ,राख्या एक विस्तार ॥८॥ आगम वेदनी कांझिका,करे मुख जिन उच्चार ॥ संयम स्त्री मल्लीयें वरी,वरत्या जय जयकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे॥ए देशी

॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद जे केवली पासें, ले संजम उल्लासें रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी, जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो जवियां हरिबल, जे रुषिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया रे ॥ पंच सयाशुं संयम लेइ, मनु जव सफल करेई रे ॥ २ ॥ सु० ॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, जार उपाड्यो जलेरो रे ॥ पंच सयाशुं हरिबल साधु, थया मुनि जनमें वाधु रें ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या आपी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि चंदजी संगें, हरिरुषि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम जव अजुवाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी जाल ते बाली रें ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुक्ल ध्यानने चोथे पदें ते, हरिबल रुषि शुज चडीया रे ॥ हरिरुषि परिकर शुकल ध्यानें, ते पण कर्मशुं जडिया रे ॥ ६ ॥ ॥ सु० ॥ तेरमें गुणगाणे ते आया, केवल कमला पाया रें ॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवाकर गाया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन जुवन ज्युं करजल

देखे, शिवरमणी पण चेखे रे ॥ पांमव सहस्र ते वर्षेज सूधी, द्ये नविने बोधबुद्धि रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ मासनी संलेषणा करि अंतें, जइ वेगा शिव पंतें रे ॥ धन धन हरिबल परिकर करणी, जइ शिवरमणी परणी रे ॥ ए ॥ सु० ॥ जो जो नवियां जीव दयाथी, शा शा गुण ए प्रगट्या रे ॥ धीवर कुलमां जन्म लहीने, ज्योतिवधूमां उमट्या रे॥ १०॥सु०॥तुमें पण नवियां इणिपरें निसुणी, जीवदयाशुं राचो रे ॥ उदरने कारण करणी करतां, बंधन न पडे साचो रे ॥ ११ ॥ ॥ सु० ॥ धर्मनो मर्म ते जीवदया ठे, खट दरिशणमें जाचो रे ॥ हरिबलनी परें ऋद्धि लहो तुमें, जीवदयाशुं माचो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीवदयाथी नवनिधि लहियें, सघले सूत्र ठे साखी रे ॥ हरिबलनुं पण चरित्र ठे महोटुं, जुउ निबिधमें जांखी रे ॥ पीगांतर ॥ जुउ विचार सार जांखी रे ॥ १३ ॥सु० ॥ ते अधिकार में नयणें निरख्यो, जेहवो शास्त्र में दीगे रे॥ तेहवो में अधिकार वखाण्यो, देशीयें करीने मीगे रे ॥ १४ ॥ ॥ सु० ॥ लाटापल्ली पुरनो वासी, पूनिम गछें सोहे रे ॥ पंमित गरसिंह धनजी केरो, तप गुणें करी मोहे रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ तस आग्रहथी सयणा चारे,

रास रच्यो में रूडो रे ॥ वेधक रसिया धर्मी जनने, ए छे मधुनो पूडो रे ॥१६॥ सु० ॥ में तो करी छे बालक क्रीडा, हुं शुं जाणुं जोडी रे ॥ पंमित होय ते शुद्ध करेजो, मत कोइ नाखो विखोडी रे ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ रसनाने रसें अधिकुं उछुं, जे में नाख्युं अनाख्युं रे ॥ ते मिछाडुक्कड कर जोडी, देउं पंच समखें रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुद्ध परंपर सोहम तखतें, प्रगट्या हीरसूरिंदो रे ॥ तस शिष्य धर्मविजय ध्रमधोरी, दीपे ज्युं शारदचंदो रे ॥ १ए ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित धनहर्ष ज्ञानी, सुमति सदा चित्त मानी रे ॥ तस शिष्य पंमित कुशल विजय कवि, प्रतिबोध्या अनुमानी रे ॥ २० ॥ सु० ॥ तस भ्राता गणि कमलविजयशुन, ज्ञान विज्ञानमें लीना रे ॥ तस शिष्य पंमित लखमिविजय गुरु, संवेग रसमें नीना रे ॥२१॥ ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित दो गुण ग्याता, केसर अमर दो भ्राता रे ॥ तस पदकिंकर लब्धिविजय कहे, चार उल्लास विख्याता रे ॥ २२ ॥ सु० ॥ शीलांगरथ संवत्सर दशकें, १८१० महाशुदि बीज नृगुवारें रे ॥ हरिबलना गुण जीवदया पर, गाया में एक तारें रे ॥ २३ ॥ सु० ॥ श्रीतपगछ नन दिनमणि सोहे, श्री

विजयधर्म सूरीशो रे ॥ तस गणधरना राजमां रसियो, गायो मब्हि विशेषो रे ॥ २४ ॥ सु० ॥ वाव्य बंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासें रे ॥ राणा श्रीगजसिंहने राज्यें, रास रच्यो में उल्लासें रे॥ २५॥ ॥ सु० ॥ हरिबलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उल्लासें, लब्धि कहे गुण खाणी रे ॥ २६ ॥ सु० ॥ ढाल उगणसाठ सातशें दोहा, हरिबल चरित्रथी नांख्या रे ॥ साडात्रण सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥ ॥ २७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दाता सारु, संबंध रच्यो में वारु रे ॥ हलुआकर्मी जे हशे साचा, मानशे सघली ए वाचा रे ॥ २८ ॥ सु०॥ चउविह संघने मंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें ललजो रे ॥ हरिबलनी परें संपद लेहेजो, लब्धिनी वाचा फलजो रे ॥ ॥ २ए ॥ सु० ॥ इतिश्री हरिबल चरित्रे जीवदयापरे चतुर्थ उल्लासः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ इति जीवदयापरे हरिबलरासः समाप्तः ॥